।। ओ३म ।।

कर्तव्य मे राष्ट्र

ईश्वर की सृष्टि के अद्भुत व्याख्याता पूज्यपाद गुरूदेव श्रृंगी मुनि कृष्णदत जी महाराज द्वारा विशेष योग समाधि मे,देवयान की आत्माओ को सम्बोधित प्रवचनो का संकलन
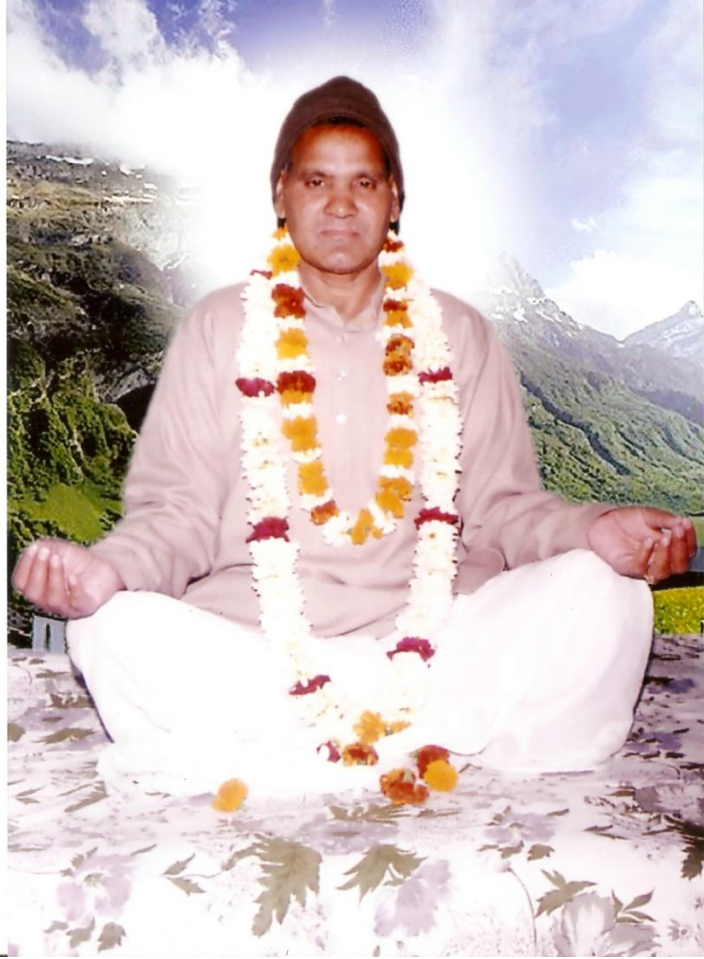
प्रकाशक :
वैदिक अनुसन्धान समिति(रजि.)
अन्तरजाल सम्पादक : श्री सुकेश त्यागी – अवैतनिक
अन्तरजाल विशेष सहयोग : डा0सतीश शर्मा (अमेरिका) – अवैतनिक
अन्तरजाल पुस्तक संस्करण : प्रथम प्रेषण
सृष्टि सम्वत् : 1,96,08,53,111
विक्रम सम्वत् : अश्विन शुक्ल अष्टमी,2067

गुरुदेव का जीवन

14 सितम्बर 1942,उतर प्रदेश के गाजियाबाद जिले के ,ग्राम खुर्रमपुर सलेमाबाद मे एक बालक का जन्म हुआ ।

बालक जन्म से ही एक विलक्षण से युक्त था और विलक्षणता यह कि जब भी वह बालक सीधा, शवासन की मुद्रा मे, कुछ अन्तराल लेटजाता या लिटा दिया जाता तो उसकी गर्दन दायें बायें हिलने लगती , कुछ मन्त्रोच्चारण और उसके बाद पुरातन संस्कृति पर आधारित 45 मिनट के लगभग एक दिव्य प्रवचन होता । बाल्यावस्था होने के कारण, प्रारम्भ मे आवाज अस्पष्ट होती और जैसे आयु बढने लगी वेसे ही आवाज और विषय दानो स्पष्ट होने लगे । पर एक अपठित बालक के मुख से ऐसे दिव्य प्रवचन सुनकर जनमानस आश्चर्य करने लगा , इस बालक की ऐसी दिव्य अवस्था और प्रवचनो की गूढता के विशय मे कोई भी कुछ कहने की स्थिति मे नही था । प्रवचन सुनकर जनमानस आश्चर्य करने लगा , इस बालक की एंसी दिव्य अवस्था और प्रवचनो की गूढता के विषय मे कोई भी कुछ कहने की स्थिति मे नही था ।

इस स्थिति का स्पष्टीकरण भी दिव्यात्मा के प्रवचनो से ही हुआ । कि यह सृष्टि के आदिकाल से ही विभिन्न कालो मे श्रृंगी ऋषि की उपाधि से विभूशित और सतयुग के काल मे आदि ब्रह्म के शाप के कारण इस युग मे जन्म का कारण बनी । गुरुदेव इस जन्म मे भले ही अपठित रहे,लेकिन शवासन की मुद्रा मे आते ही इनका पूर्वजन्मित ज्ञान,उदबुद्ध हो जाता और अन्तरिक्ष–स्थ आत्माओ का दिव्य उद्बोधन ,प्रवचन करते और शरीर की स्थिति यहॉ होने के कारण हम सबको भी इनकी दिव्य वाणी सुनाई देती । इन पंवचनो मे ईश्वरीय की सृष्टि का अद्भुत रहस्य समाया हुआ है , ब्रह्माण्ड की विशालता , सृष्टि का उद्देष्य,विभिन्न कालो का आंखो देखा वर्णन भगवान राम और भगवान कृष्ण के जीवन की दिव्यता का दर्शन क्या कुछ दिव्य न हीं है इन प्रवचनो मे ये किसी भी मनुष्य का,समाज का और राष्ट्र का मार्ग दर्शन करने का सामर्थ्य रखते है ।

20 वर्ष की अवस्था तक ये प्रवचन ऐसे ही जनमानस को आश्चर्य और मार्गदर्शन करते रहे ।

दिल्ली के कुछ प्रबुद्ध महानुभवो ने प्रवचनो की इस निधि को शब्द ध्वनि लेखन उपकरण के द्वारा संग्रहित करके ,पुस्तक रूप मे प्रकाशित करने का निश्चय किया, जिसके लिए वैदिक अनुसन्धान समिति नामक संस्था का गठन किया । जिसके अर्न्तगत सन् 1962 से प्रवचनो को संग्रहति और प्रकाशन प्रारम्भ हुआ । इस दिव्यात्मा ने पूर्व निर्धारित 50 वर्ष के जीवन को भोगकर सन् 1992 मे महाप्रयाण किया ।

इस अन्तराल इनके 1500 प्रवचन, शब्द ध्वनि लेखित यन्त्र के द्वारा ग्रहण किये गये । जिनको धीरे–धीरे प्रकाशित किया जा रहा है।वैदिक जीवन और वैदिक संस्कृति का जो स्वरूप इनमे समाया हुआ है । उसके सम्वर्धन , संरक्षण और प्रसारण के लिए हर वैदिक धर्मी के सहयोग की अपेक्षा है । जिससे वसुधैव कुटुम्बकम की संस्कृति से निहित यह महान ज्ञान जनमानस मे प्रसारित हो सके।

वैदिक अनुसन्धान समिति (रजि.)

याग का प्रादुर्भाव

जीते रहो,

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मंत्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मंत्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद वाणी में, उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान का प्रायः वर्णन किया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सदैव ज्ञानमयी स्वरूप माने गये हैं। और विज्ञान उसका अमूल्य आभूषण माना जाता है। जितना भी वाद है, इस संसार में मेरे प्यारे! वो राष्ट्रीयवाद से लेकर के परमाणुवाद तक, अणुवाद तक जितना भी वाद है उस सबका मूल परम–पिता परमात्मा माना जाता है। क्योंकि वह उन सबका अधिपति है, निर्माणवेत्ता है। तो इसीलिए हम यह कहा करते हैं कि परमपिता परमात्मा सर्वत्रता में ओत प्रोत है।

परमात्मा की प्रतिभा

मेरे प्यारे! जब हम इन आभाओं पर विचार विनिमय करने लगते हैं तो विचारते–विचारते मुनिवरो! देखो, हम यज्ञशाला की पवित्र भूमि पर चले जाते है। मेरे प्यारे! जहाँ निरंतर याग हो रहा है। मानव अपनी आभा से याग कर रहा है। परमपिता परमात्मा की प्रतिभा वह सर्वत्र याग में परिणत मानी है। बेटा! परमपिता परमात्मा नाना वृक्षों के द्वारा, नाना वनस्पतियों के द्वारा, अपनी सुगन्ध से याग कर रहा है। पृथ्वी माता के गर्भस्थल में मुनिवरो! जितना भी खनिज पदार्थ है मानो उसकी सुगन्धि कणों के द्वारा आ रही है। आंतरिक गर्भ की सुगन्धि, बाह्य जगत् में आती चली जा रही है। उसी को पान करता हुआ, राष्ट्र का प्राणी–प्राणी मात्र बेटा! उसी से सहायता को प्राप्त करता हुआ और अपने मनोनीत, उस यज्ञ में सुगन्धि को पान करता रहता है।

आदि ऋषियों द्वारा याग अनुसंधान

परन्तु आज मैं बेटा! तुम्हें उस क्षेत्र में ले जा रहा हूँ, जहाँ आदि ऋषियों ने, अपने आसन पर विराजमान होकर के, अपनी अपनी स्थलियों पर बेटा! याग अथवा अनुसंधान किया। मेरे पुत्रो! ब्रह्मा के पश्चात् वास्तव में तो आदि ब्रह्मा के आश्रम में ही यह विचारा गया जब वेद का अध्ययन प्रारम्भ हुआ। तो वेद के अध्ययन के प्रारम्भ में मेरे प्यारे! याग की विचित्रता आई। वेद मंत्र जब उच्चारण करने लगे, मस्तिष्क में जब उसका भान आया, अन्तरात्मा में जब यह प्रेरणा जागरूक हुई, तो प्रेरणा के साथ ही मेरे प्यारे! याग को सबसे प्रथम अमूल्य माना है। ऋषि मुनियों ने कहा–कि हम याग करने वाले है। याग की कल्पना कैसे मानव के हृदय में हुई ? विचार यह आता है। प्रत्येक मानव के हृदय में यह विचार आता है कि याग की कल्पना कि अग्न्याधान इस प्रकार से करेंगे, समिधा इस प्रकार की होंगी, मानो जल का सिंचन इस प्रकार होगा तो मुनिवरों! देखो, यह प्रेरणा कहाँ से प्रारम्भ में आई ?

अण्डाकार ब्रह्माण्ड

तो मेरे पुत्रो! ये प्रेरणा आदि ऋषियों से आई है। आदि ऋषियों ने यह विचारा, शांत भयंकर वनों में विराजमान होकर के विचारा। इस संसार को विचारा, कि यह ब्रह्माण्ड सर्वत्र एक अण्डाकार बना हुआ है और जब यह अण्डाकार है तो यज्ञवेदी का निर्माण कैसे हो? तो मेरे प्यारे! जब उसका विभाजन हुआ, अण्डाकार का जब विभाजन हुआ तो अण्डाकार में ही ये नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों की रचना हुई। मानो प्रत्येक लोक, अंडाकार में ही निर्मित है। मेरे प्यारे! ये पृथ्वी भी उसी रूपों में है। सूर्य भी उसी रूपों में, बृहस्पति भी उसी रूपों में, ध्रुव मण्डल भी उसी रूपों में है। नाना मण्डल भी उसी प्रकार के है। परन्तु ये कैसे आँगन में यज्ञवेदी का निर्माण होता है ?

आदि यज्ञशाला का निर्माण

कपलावत ऋषि महाराज जो ब्रह्मा के आश्रम में अध्ययन करते थे तो कपलावत ऋषि महाराज के हृदय में जब ये भावना, प्रेरणा जागरूक हुई कि अण्डाकार का याग मानो उसके क्षेत्रफल की रचना कैसे हो ? तो मेरे प्यारे! एक लोक उस आंगन में है, एक लोक उस आँगन में, एक उस आँगन में, एक मध्य में, तो मेरे प्यारे! देखो, मध्य में अवकाश। जब मध्य में अवकाश प्राप्त हुआ तो उन्होंने मानो देखो, वेद के मंत्र से ये विचारा कि ये अंडाकार, एक–एक अंडाकार जैसे चकोण होता है। जैसे मानो देखो, हमारे यहाँ बारह कोण, अष्ट कोण होता है। तो इसी प्रकार लोक लोकान्तर अपनी–अपनी स्थली पर स्थिर है। तो स्थिर होने के नाते मेरे प्यारे! उसके मध्य में अवकाश है। जब उसके मध्य में अवकाश माना गया है तो उसी के आधार पर ऋषि मुनियों ने कहा कि इस प्रकार हमें यज्ञशाला का निर्माण करना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, प्रत्येक लोक के साथ में बेटा! वरुण है, अग्नि है। अग्नि की वो सूक्ष्म धारा है जो इनको, एक दूसरे को आकर्षण शक्ति से स्थिर किए रहती है।

तो मेरे पुत्रो! जब मानव कपले बृहि–आदि ऋषियों ने बेटा! इसको विचारा, तो विचारने से यह प्रतीत हुआ कि इस प्रकार से यज्ञवेदी का निर्माण होगा। और वह जो अवकाश है उसमें कोई वस्तु है, उसमें कोई हमें भरण करनी है। मेरे प्यारे! जैसे पृथ्वी है, पृथ्वी में अवकाश है। मानो उसके अवकाश में कोई वस्तु भरण है। मानो खनिज एक दूसरे आंगन से, दूसरे आंगन में गति करता रहता है। जैसे बेटा! मानव के शरीर में रक्त गति करता है, जिस प्रकार मुनिवरो! देखो, इस वसुन्धरा के गर्भ में, पृथ्वी के गर्भ में एक दूसरा खनिज एक दूसरे खनिज से मिलान करता है, वह उसको सुगठित बनाता है ओर भी नीचले स्थल में पहुंचोगे तो वहाँ पिपाद नामक मानो जल गति कर रहा है। शक्तिशाली जल है। ओर भी निचले स्थान में जाओगे तो बेटा! देखो, वहाँ पर्वतीय कणों के आँगन, धातुओं में गति कर रहे है। मानो ओर निचले स्थानों में जाओगे, तो सूर्य बेटा! जल को शक्तिशाली बना रहा है। मेरे प्यारे! देखो, अब कोणों में जाओ, जिसभी कोण में जाओगे, उसी कोण में तुम्हें खनिज प्राप्त होंगे। मेरे पुत्रों! उसके गर्भ में जाने से यह प्रतीत होता है कि प्रभु ने जो अण्डाकार जगत बनाया है। मानो अण्डाकार जो पृथ्वी का मण्डल बनाया है। अथवा नाना लोकों का निर्माण किया है। तो वो एक दूसरा लोक बेटा! एक दूसरे लोक में खनिज की उत्पत्ति कर रहा है। मैं ऐसा विचित्र वाक् तुम्हें प्रकट करा रहा हूँ जो हमारा वेद, हमें आज्ञा देता है। जो वेद हमें, मानो वेद के मंत्र को उच्च विचारों तो तुम्हें यह प्रतीत होगा।

परन्तु देखो, जब एक दूसरा मण्डल मानो जैसे पृथ्वी मण्डल हैं पृथ्वी मण्डल के मानो देखो, उसकी जो तरंगे है वो मानो मंगल को अभायित कर रहे हैं और मंगल शुक्र को आभायित कर रहा है और शुक्र चन्द्रमा को आभायित कर रहा है और चन्द्रमा मेरे प्यारे! गन्धर्व लोकों को आभायित कर रहा है और चन्द्रमा से जो प्रकाश आता है, वो सूर्य से आता है। सूर्य उसको प्रकाशित कर रहा है। तो मेरे प्यारे! एक दूसरा मण्डल एक दूसरे मण्डल को प्रकाश में ले जा रहा है। एक दूसरा मण्डल बेटा! एक दूसरे में खनिज की उत्पत्ति कर रहा है। एक दूसरा मण्डल एक दूसरे की आभा में युक्त हो रहा है।

नाना गुणों का साकल्य

तो मेरे पुत्रो! विचारने से यह प्रतीत होता है। जब मन्त्रों को विचारा जाता है, मंत्रार्थ को लिया जाता है। तो उससे हमें यह प्रतीत होता है कि हम वेद के, मानो देखो, जिस प्रकार हम याग की रचना करें। जब मुनिवरो! देखो, याग की रचना होती, नाना प्रकार के साकल्य होते हैं एक–एक साकल्य है। दूसरे साकल्य से मिलान करके उसके गुणों का परिवर्तन हो जाता है। मानो देखो, जब हम इनको मिलाकर के सामग्री

बना लेते हैं तो नाना गुणों वाला साकल्य बन जाता है। नाना गुणों वाली ओषधियाँ बन जाती है। उन औषधियों से मेरे प्यारे! देखो, हम वातावरण को शुद्ध बनाने का प्रयास करें। वेद का ऋषि, आदि सृष्टि का ऋषि कहता है कि वेद का यह आदेश है कि प्रत्येक मानव को याज्ञिक बनना चाहिए। क्योंकि याज्ञिक बनने के लिए, याग से क्या लाभ है? ऋषि मुनियों ने एक महानता में विचारा।

भगवान मनु जब इस वाक् को विचारने लगे तो भगवान् मनु ने बुद्धिमानों का, ऋषि मुनियों का समूह एकत्रित किया। समूह एकत्रित करके भगवान् मनु ने एक दूसरे से प्रश्न किया। उस समय गढवेश्वर ऋषि महाराज थे। परन्तु ऋषि गढ़वेत, ऋषि सुभाऊ, ऋषि अनवाचत्रे और यग्राती मेरे प्यारे! देखो, और श्वेतकेतु ये नाना ऋषि उस काल के थे। मेरे पुत्रो! उन्होंने ब्रह्मसमाज, एकत्रित सभा में यह प्रश्न किया कि वेद का वाक् यह कहता है ब्रह्मणे व्रताः बृहे मन और साहित्य भी यह कहता है कि सृष्टि के आदि में ब्रह्मा के आश्रम से मानो यज्ञशाला का निर्माण हुआ है। हम यह जानना चाहते हैं ऋषियों के याग का निर्माण अथवा जो सुगन्ध का, भरण करने का उसमें उन्होंने अपने वाक से कहा है कि यह कहाँ तक यथार्थ है।

गृहों, आश्रमों की पवित्रता

भगवान् मनु ने जब यह प्रश्न किया तो ऋषि मुनियों ने इसका उत्तर देना प्रारम्भ किया। ऋषि मुनियों ने कहा—हे भगवन्! हे राजन्! राष्ट्र का निर्माण करो या न करो, परन्तु यह कहा है कि जो मानव दुर्गन्ध कर सकता है वो सुगन्ध भी तो कर सकता है। सुगन्ध वनस्पतियों का, अग्न्याधान करने से होती है। मानो देखो, जैसे एक सुगन्धि अपनी भूमि पर पनप करके सुगन्धि दे रही है परन्तु जब वह औषध परिपक्व हो जाती है तो उसी औषधियों का मुनिवरो! देखो, नाना औषधियों से साकल्य का निर्माण होता है। अन्नाद उसमें विराजमान होता है! मेरे पुत्रों! जब वह याग उसका साकल्य बनाकर के याग करते हैं तो मानो देखो, जो वो सुगन्ध होती हैं उसकी कई गुणी सुगन्धि बन करके, सहस्रों गुणा सुगन्धि बन करके बेटा! गृहों और आश्रमों को पवित्र बना देती है।

याग के लाभ

अहा, मैं बहुत पुरातन काल की वार्ता को प्रकट नहीं कर रहा हूँ, परन्तु भगवान् मनु के काल की वार्ता दे रहा हूँ भगवान् मनु ने जब यह निर्णय कर दिया, ऋषि मुनियों से कि याग सुन्दर है, याग प्रिय है। अब उन्होंने राष्ट्रीय विचारों से याग का अंकित किया। जब राष्ट्र के विचारों को अंकित करने लगे, तो उन्होंने विचारा कि याग कर्म करने से तो भई, बड़े विशाल लाभ है। परन्तु क्या विशेष लाभ हैं? जिस गृह में याग होता है उस गृह में द्रव्य का दुरूपयोग नहीं होता। परन्तु द्रव्य का जितना भी दुरुपयोग मानव करता है उतना ही मानव की प्रतिभा समाप्त हो जाती है। एक द्वितीय लाभ यह कि जब गृह में याग होता है उसमें ब्रह्मचर्य की रक्षा होती है। ब्रह्मचर्य की रक्षा का अभिप्रायः क्या? ब्रह्मचरिष्यामि जैसा पूर्व काल में हमने प्रकट किया मानो उसके पश्चात् जिस गृह में याग होता है उसका चरित्र ऊँचा होता। चरित्र में मानवता आती है, चरित्र में ब्रह्म आश्रितता आती है। व्यवहार आता है। वहां एक दूसरे से मिलन करने की आभा आती है। उसके पश्चात् याग से द्वितीय लाभ? क्यों कि मानव की प्रवृत्तियों में स्वरुपता होती है। अपने राष्ट्र और धर्म के ऊपर मानो निष्ठित हो जाता है। मानो देखो, जब याग कर्म है तो धर्म की पद्धति और राष्ट्र मानो दोनों एक साथ हो करके मानव के जीवन को जागरूक करते रहते हैं। इतने लाभ इस याग कर्म करने से होते हैं। उसके पश्चात् मानो देखो, जिस गृह में याग होते हैं उसे देवताओं का पूजन कहते है वहीं लक्ष्मी देखो, प्रसन्न हो करके वास करती है।

तो मेरे प्यारे! देखो, ये लाभ हैं याग कर्म करने से, तो हमें इनको विचारना है। हमें इनके ऊपर अनुसंधान करना है क्योंकि मेरे प्यारे महानन्द जी को भी दो शब्द उच्चारण करने हैं। आज का विचार विनिमय केवल यह कि हम परमपिता परमात्मा की आभा को विचार विनिमय करते हुए, हम याग जैसे कर्म करें क्योंकि यह जो ब्रह्माण्ड हैं। यह मेरे पुत्रो! देखो, एक यागमयी स्वरुप माना है। यज्ञमयी स्वरुप माना है क्योंकि यज्ञ कर्म करने वाला प्राणी, अपने में ही आभायित नहीं होता, वह दूसरों को भी आभायित करता है। अथवा सुगन्धि देता है, जीवन देता है। मेरे प्यारे! आज जब हम इन वाक्यों को विचारने लगते हैं तो हमारा हृदय गद्—गद होने लगता है। बेटा! पुरातन काल में आचार्यों के समीप जाते, प्रवेश करते तो सबसे प्रथम याग का कर्म करते। कन्याओं का विद्यालय पृथक् है तो ब्रह्मचारियों का विद्यालय पृथक!

याग की रचना

मेरे प्यारे! ब्रह्मचारी सुसज्जित होते, कन्यायें मानो बलवती होती, उनके कर्मकाण्ड को मानो देखो, ब्रह्मचारियों के विद्यालय में प्रवेश कराया जाता। ब्रह्मचारी यदि कुशल है तो ब्रह्मचारीणियों को मानो देखो, उनका प्रदर्शन होता, अहा, उसके पश्चात् उन प्रदर्शनों की आभा, मानवीय क्षेत्र में रमण करती रहती।

आज मैं विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ आज हमारा कोई विशेष मन्तव्य नहीं है। परन्तु आज का हमारा वाक् कह रहा है कि हम सदैव अपने जीवन को आभायित बनाना चाहते है। विचारणीय बनाना चाहते है महानता में ले जाना चाहते है। तो वो क्या है? मानो जैसे यह ब्रह्माण्ड की रचना है। उसी प्रकार ऋषि मुनियों ने याग की कल्पना की है। जैसे याग की कल्पना है, याग की रचना है। उसी प्रकार प्रत्येक वेद मन्त्रों को, पाठों में गान रूपों में परिणत करोगे तो वो भी एक प्रकार की, उसी प्रकार जैसे यज्ञशाला में से सुगन्ध परिणत होकर के वायुमण्डल में परिणत होती है। प्रभावित करती है।

तो मेरे प्यारे! हम उस आभा में प्रभु में, रमण अस्वत करते रहते हैं। मेरे पुत्रो! आज मैं विशेष चर्चा प्रकट करने नहीं आया हूँ! आज का विचार विनिमय क्या? आज का विचार यह कि प्रत्येक प्राणी को राष्ट्रवाद में, समाजवाद में, महानता में प्रत्येक गृह को ऊंचा बनाना है तो याग जैसे कर्म होने चाहिए। याज्ञिक कर्मों में मानव को परिणत होना चाहिए। अब मेरे प्यारे महानन्द जी अपने दो विचार प्रकट करेंगे। इसके पश्चात् हम आगे का कार्यक्रम प्रारम्भ करेंगे।

पूज्य महानन्द जी का प्रवचन

ओ३म् तनु मां धरा यश्चं ब्रह्मणाः रतुरध्यं मनाः
रेतु मयाः यश्चं ब्रह्मणा लोकश्चं ब्रह्मे यातकं मयाः

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! मेरे भद्र समाज! मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में, बहुत ही परम्परा से, मेरी वन्दना, मेरा बारम्बार नमस्कार होता रहा है। परन्तु आज मैं अपने विचारों को पूज्यपाद, गुरुदेव को निर्णय देना चाहता हूँ। हमारा कोई विशेष वाक् नहीं है परन्तु आज के समाज की चर्चा भी, विशेष नहीं है। विचार विनिमय यह है मेरे पूज्यपाद गुरुदेव का जो उद्देश्य है ? अथवा इनका जो लक्ष्य है वह इतना विचित्र है कि इसको मानो अपने में धारण करने में असमर्थ है। जब मैं यह विचारता हूँ कि आधुनिक काल के समाज में, नाना प्रकार के मदों में मानव परिणत है। कहीं मानव, जहाँ ये वाक्, जहाँ ये आकाशवाणी का प्रसारण हो रहा है। आज मैं याग जैसे महान कर्मों को दृष्टिपात कर रहा था। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह उच्चारण करने आया हूँ कि जहाँ मानव के एक विचारों में, द्वितीय विचारों में भिन्नता रहती है। वहाँ मानवीयता का ह्रास होता रहता है। यह वाक् बहुत ही प्रियतम है आज मैं ब्रह्मण, यज्ञमान के लिए अपने वाक् प्रकट करने के लिए आया हूँ। हे यज्ञमान तेरा हृदय, तेरी महानता विशाल बनती चली जाए।

महर्षि कौशल

परन्तु जहाँ मानव, जहाँ मैं यज्ञमान के विशाल हृदय की चर्चा प्रकट करता हूँ। हमारे यहाँ परम्परागतों से कौशल एक महान गोत्र रहा है। कौशल गोत्र में, मानों मुझे तो बहुत परम्परागतों से कौशल गोत्र का स्मरण है। महर्षि कौशल का जो जन्म है वह मानो आज से बहुत पुरातन काल में हुआ और कोशल गोत्र का जो निकास था वह रोहिणी अथवा कपिल ब्रेशकेतु गोत्र से उसका निकास हुआ। परन्तु इसके निकास की मैं चर्चाएँ देने नहीं आया हूँ। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मैं आज आपको यह परिचय देने आया हूँ मानो उस कौशल गोत्र में आज तो आधुनिक काल में गोत्रों की परम्परा समाप्त होने जा रही है। परन्तु हमारी संस्कृति की आभाओं में गोत्रों का बड़ा महत्व माना गया है। क्योंकि गोत्रों में नाना प्रकार के रक्तों के परमाणु विराजमान रहते हैं एक वंशलज के मानो परमाणु जहाँ हो उन परमाणुओं का आदान प्रदान करना भी जीवन की एक मुख्यता मानी जाती है। परन्तु इस गोत्र में सदैव रक्षक रहें, भक्षक कोई नहीं रहे।

मानो देखो, रक्षा करने का अभिप्राय क्या? मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! रक्षा उसे कहते हैं जहाँ अपनी वाणी से मानो देखो, दूसरे प्राणियों का आश्रीत करने से मानव का जीवन मानो सुरक्षित रहता है। वो रक्षक प्राणी कहलाता है। और जिस गोत्र में मानो देखो, कौशल गोत्र हैं। कौशल ऋषि के जीवन की स्मरणता मुझे स्मरण आती रहती है। पूज्यपाद गुरुदेव तो मुझे प्रकट कराते ही रहते हैं। परन्तु हमारे यहाँ कौशल गोत्र, ऋषियों का, ब्रह्मवेत्ताओं का गोत्र हैं। इसमें ब्रह्मचर्चाएँ होती रहीं, ब्रह्मवादी लोग, ब्रह्मवादी पुरुषों का आवागमन रहा है। ब्रह्मवादी आते, ब्रह्म की चर्चाएँ होती रहती। परन्तु देखो, ब्रह्मचरिष्यामि ब्रह्मे लोकः ये सदैव ऊँचा गोत्र रहा है। रेणवृत्ति में क्या? जैसा अनुभव किया है जैसा दृष्टिपात किया है। परन्तु देखो, इस गोत्र में सदैव वैज्ञानिक पुरुष भी होते रहे। जहाँ भौतिकवादी, वहाँ वैज्ञानिक भी होते। जैसे वैज्ञानिक कोशल मुनि के पुत्र का नाम सुकेनभानु था और सुकेनभानु के जीवन की स्मरणता है कि वे अपने यानो में विराजमान हो करके, यान का निर्माण करना, प्रातः काल से सांय काल तक, यज्ञशाला में अपनी विज्ञान शाला में निर्माण करना और वह यान पर विराजमान होकर के सूर्य की किरणों के साथ–साथ उड़ान उड़ने के लिए तत्पर हो जाते।

हृदय से याग

परन्तु इस प्रकार का विज्ञान प्रत्येक गोत्र में रहा है। आज मैं गोत्रों की विशेषता, गोत्रों की चर्चा करने नहीं आया, परन्तु समय क्या, आज उस गोत्र को जब मैं दृष्टिपात करता हूँ, तो मुझे व्याकुलता होती है, विडम्बना होती हैं। मानो देखो, शरीर के मद में, रसना के मद में, मानो द्रव्य के मद में, अहा अपनी मानवता को, सकुशलता को समाप्त करने के लिए तत्पर होने जा रहा है। मैं सदैव यह उच्चारण करने आया हूँ। पूज्यपाद! मैं यज्ञमान को तो सुन्दर, मानो देखो, मेरी सदैव प्रेरणा रहती है कि गृह में सदैव उन्नत होता रहे।

मानो देखो, द्रव्य की चर्चाएँ जहाँ मैं करूँ, वहाँ ये कि द्रव्य का सदुपयोग होना चाहिए। याग ऐसा कर्म है जहाँ मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा कि याग से, यज्ञ से, द्रव्य का सदुपयोग होता है। जब याज्ञिक पुरुष मानो हृदय से याग करता है। जब हृदय से याग करता है तो लक्ष्मी उस मानव के हृदय में मिलान करती है। उसके हृदय में यह व्रत करती है मानो यही तो स्वर्ग बना देती है। द्रव्य का तब सदुपयोग होता है मानो देखो, जब याग होता है। दो प्रकार का भोज्य होता है। अन्तरिक्ष में, वायुमण्डल में जब सुगन्ध जाता है। पृथ्वी के गर्भ में जाता है मानो नाना प्रकार के खनिजों को प्राप्त हो रहा है। औषध जहाँ की तहाँ मानो रमण कर रही है। जब इस प्रकार द्रव्य का सदुपयोग होगा तो हृदय में ऐसी पवित्रता आ जाती है। हृदय में ऐसी महानता आ जाती है जैसे वृक्ष पर मानो फल आने पर, मानो देखो, उसकी ऊर्ध्वा गति को आने लगता है।

वह इतना नम्र बन जाता है। इतना नम्रता में परिणत करने लगता है कि उसकी नम्रता जीवन का सारथी बन करके उसकी मानवता का सारथी बन करके, मानव क्षेत्र में जाता है।

भयंकर अग्नि

जहाँ मैं यह वाक् प्रगट कर रहा हूँ वहाँ प्रत्येक काल को जब मैं दृष्टिपात करता हूँ तो आधुनिक काल का जगत तो परम्परागतों से इस प्रकार का चल रहा है। परन्तु जब मैं, आधुनिक काल को विचारता हूँ तो वहाँ मुझे आश्चर्य आता है। एक मानव कहता है कि देखो, अग्न्याधानं ब्रहे ब्रताः अग्नि में व्रत को मानो समापन करने से क्या लाभ है? हे मानव! जब तुम मानो देखो, नाना प्रकार के अवगुणों में परिणत होते हो, अहा, द्रव्य का दुरुपयोग करते हो। उसके लाभ को प्राणी नहीं विचारता, ये कैसा आश्चर्य है? परन्तु इन वाक्यों पर आश्चर्य होने लगता है ? हे मानव! तू इन वाक्यों को नहीं विचारता। राष्ट्र समाज में यह घोषणा होती है कि अब्रहे परन्तु देखो, राष्ट्रवाद, राजा इन वाक्यों पर विचार विनिमय नहीं करता। इन वाक्यों से राष्ट्र की ध्रुवा गति हो रही है, ऊर्ध्वा गति नहीं हो रही है। राष्ट्र को विचारना चाहिए जो मानव के चरित्र को, वाणी को, इंद्रियों को मानो उनकी शक्ति का समापन करने वाले कार्यों हो उन पर है। राष्ट्र को नियंत्रण करना है। राष्ट्र या तो नियंत्रण करेगा अन्यथा देखो, भयंकर अग्नि उत्पन्न हो सकती है।

धर्म से सन्तान

मैं आज उन वाक्यों में जाना नहीं चाहता हूँ, राष्ट्र कहता है कि द्रव्य की आवश्यकता है। मैं ये कहा करता हूँ कि राष्ट्र को चरित्र की, जितना मानव का अशुद्ध भक्ष्य होगा मानो देखो, इस प्रकार के पदार्थों का पान होगा, उसी प्रकार उसके आभूषण क्योंकि वह भोगवाद के लिए नाना प्रकार के श्रृंगार को परिणत करता रहता। तो श्रृंगार मानो देखो, राष्ट्र के द्रव्य को नष्ट करता रहता है। जब वह नष्ट होता रहता है तो राष्ट्र चाहता है, राष्ट्र यह कहता है कि हमें द्रव्य चाहिए। राष्ट्र, समाज, राजा यह कहे कि नहीं, तो वह चरित्र हीनता से मानो देखो, उस द्रव्य को एकत्रित करना चाहता है। द्रव्य को लाना चाहता हूँ। मानो देखो, वह द्रव्य जैसा तुम लाओगे उसी कार्य में वो समाप्त हो जाएगा यह प्रकृति का नियम है, आरब्ध है। आज मैं जब यह विचारता हूँ कि द्रव्य को प्राणी यह कहते हैं कि हमें द्रव्य पैदा करना है। यदि द्रव्य को हम भोगवाद में नहीं करें, भोगवाद करें या न करें यह तो दैत्यों का कार्य होता है। भोगवाद तो मानो ऋषि मुनियों का सुन्दर महाकार्य है। क्योंकि धर्म से ही लक्ष्मी हो, धर्म से ही सन्तान हो। जब सन्तान को माता–पिता धर्म से उत्पन्न करते हैं तो वह सन्तान ऊँची होती है।

कर्मों का दूत

परन्तु देखो, जब भोगवाद से संतान उत्पन्न करते हैं, तो वह संतान मानो भोगों में परिणत होकर के माता–पिता को भी उसी भोगवाद का क्षेत्र बना करके मेरे प्यारे! वो माता पिता समापन को प्राप्त हो जाते है। परिणाम क्या आज हमारे इन वाक्यों का कि हम याग जैसा कर्म करेंगे तो द्रव्य का सदुपयोग होगा। द्रव्य का सदुपयोग होना प्रारम्भ हो जाता है। तो वह लक्ष्मी मानो देखो, उससे दूरी अरे, इसका समय आता है तो मृत्यु शैय्या पर मानव विराजमान होता है। तो जो भोगविलासों में समय व्यतीत किया है मानो वो भोग–विलास उस मानव के नेत्रों के समीप आता रहता है। उसी को दृष्टिपात करता रहता है। परिणाम यह होता है। मानो देखो, जब उसका अंतिम समय होता है तो पूज्यपाद गुरुदेव कहा करते है, कि उसका अंतिम समय भयंकर होता है। मानो मृत्यु उससे पूर्व ही मानो कर्मों का दूत बन जाता है। जिससे आत्मा व्याकुल हो जाता है। ऊँचे संस्कार मानो देखो, नहीं रहते तो शरीर भी नष्ट नहीं होता। ऊँचे संस्कार भी नहीं होते, ऊँची वार्ता भी प्रकट नहीं, कुछ वार्ताएँ प्रकट है। अपने में मानो रक्षक बन गए, परन्तु मैं इसमें जाना नहीं चाहता।

विचार विनिमय क्या कि मैं कौशल गोत्र की चर्चा कर रहा था। कौशल गोत्र हमारे यहाँ परम्परागतों से महान रहा है, बलवती रहा है। मानो कौशल गोत्र की चर्चाएँ हमारे धर्मज्ञ नाना लोकोक्तियों में इनका वर्णन आता है। मानो वहाँ मानवता रहनी चाहिए, विचार रहना चाहिए, महानता रहनी चाहिए। आज तुम्हें अपने मस्तिष्क हृदय को सम्पूर्णता में लाना है। तो सदैव अपनी आभा में युक्त होना है अपनी मानवता को विचारना है।

नारकीयता

परन्तु जब मैं यह प्रश्न करता हूँ अरे, भोले प्राणियों! जब तुम धर्म की, याग की निंदा करते हो तो ये उत्तर दो कि तुम अपने मनस्तव में कितना जानते है, तुम विज्ञान में, कितने वैज्ञानिक हो परन्तु तुम अपने आहार, व्यवहार में कितने व्यवहारिक हो, तुम अपनी मानवता में कितने मानव हो। तो वहाँ देखो, कोई उत्तर प्राप्त नहीं होता। जब कोई उत्तर प्राप्त नहीं होता तो उसका परिणाम क्या, वह सुखद है। वह मानो देखो, अपने हृदय में विनम्रित होते है। विचारना हमारा ये कि आज मै इस गृह में, मानो देखो, सदैव मेरा यह वाक् रहता है कि प्रत्येक गृह में, प्रत्येक राष्ट्र में द्रव्य का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए। जब भी द्रव्य का दुरुपयोग होता है तो यह द्रव्य ही मानो नारकीय बना देगा। द्रव्य मानो जब धर्म से बिंधा हुआ है। जब इससे याग कर्म करते हैं, योगाभ्यास करते हैं, अपने मनस्तव की प्रवृत्ति को ऊँचा बनाते हैं तो देवता बन जाते हैं। और जब उसी द्रव्य के कारण अभक्ष्य पदार्थों को पान करने लगते हैं, प्रवृत्तियों में मानो तुच्छता आ जाती है। भोग–विलास में चले जाते हैं। उनकी आवश्यकता के लिए द्रव्य का दुरुपयोग करते रहते हैं तो वही लक्ष्मी बेटा! देखो, अब्रहे व्रतं वृत्तिक बन जाती है।

हे पूज्यपाद! आपने तो मुझे कई काल में वर्णन कराते हुए कहा, वहीं द्रव्य मानो देखो, अग्नि का काण्ड बन जाता है। उसी प्राणी के लिए, जब वह मृत्यु की शैय्या पर जाता है तो व्याकुल हो रहा है और यह कह रहा है हे भगवन्! मेरे प्राण–अन्त होने चाहिए। अब मैं यह शरीर नहीं चाहता। परन्तु जिस शरीरों में शक्ति नहीं रही, जिन शरीरों से नाना भोगवाद में परिणत रहे हो। माता का दुरुपयोग किया, माता लक्ष्मी का दुरुपयोग किया। अहा, वही लक्ष्मी उनके समीप आकर के मानो वीरांगना बन करके उसको कहती है कि मानो तुमने मेरे द्रव्य का दुरुपयोग किया, आज मानो तूने मेरा दुरुपयोग किया, मैं तेरी मां बन करके आई। हृदय से आलिङ्गन करने के लिए, मोक्ष में ले जाने के लिए, परन्तु तू नारकिक बन गया, तू नारकिक ही बना रहे। मैं इसमें क्या कर सकती हूँ।

याग का प्रभाव

मानो इस प्रकार की आभा में जब मानव परिणत होता है तो इस वाक् को विचारता है। तो वह मानो अपनी रचना के आँगन में नहीं जाता। मुझे स्मरण है यहाँ त्याग और तपस्या में परिणत रहें है। ऋषि मुनियों ने तप किए हैं। तप से एक–एक वाक् को उन्होंने बहुत ऊर्ध्वा से जाना है जैसे आधुनिक काल का विज्ञान मुझे वर्णित है। आधुनिक काल के विज्ञान को मैं दृष्टिपात करता हूँ, एक–एक वैज्ञानिक को छः छः माह तक विचार विनिमय करते हो जाते हैं। एक–एक वस्तु पर अनुसंधान होता रहता है। आज का वैज्ञानिक यह कह रहा है कि वायुमण्डल में हमने पृथ्वी के कणों को ले करके, पृथ्वी के खनिजों को लेकर के, वायुमण्डल से खनिज को लेकर के आज उसको देखो, हमने दूषित बना करके वायुमण्डल में त्याग दिया। अब कोई ऐसा कार्य होना चाहिए, ऐसा कोई यान होना चाहिए, ऐसी कोई आभा होनी चाहिए जिससे हम दुर्गन्ध को समाप्त कर सकें।

परन्तु जब आधुनिक काल का वैज्ञानिक इस वाक् को विचार रहा है तो मैं यह कह रहा हूँ हे भोले वैज्ञानिकों! आओ तुम गोघृत के द्वारा याग करो जिससे पुनः उन वाक्यों की पुनरावृत्ति, उन परमाणुओं की पुनरावृत्ति हो जाए। ये अन्तरिक्ष पुनः से 'संभरणता को प्राप्त हो जाए। परन्तु देखो, जब खनिज को जानोगे, खनिज का दुरुपयोग करोगे तो उसका सदुपयोग भी करो, उसमें याग भी करों। याग से देखो, वो परमाणु निगले जाते हैं और याग न करने से वो परमाणु दूषित होकर के मानव को, समाज को दूषित बना देते हैं।

तो परिणाम यह मैं आज अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाने के लिए, मैं यह वाक् प्रकट करने के लिए आया हूँ हे यज्ञमान! तेरा जीवन, तेरा गृह ऊँचा बने। तेरी मानवीय भावना पवित्र बनें, परन्तु आहार और व्यवहार में मानो आहारों में तो परिवर्तन करना तेरा कर्तव्य है, जब तू मानो देखो, इसका पालन करेगा तो तेरा कौशल गोत्राणि ब्रह्मलोकः अस्सुति लोकः क्योंकि मानव अपने कर्मों का फल लेकर संसार में जाता है। जो भी कर्म करता है वही उसका, भोक्ता बनता है। वही उसको लेकर चलता है।

जीवन की आभा

परन्तु देखो, जब लक्ष्मी का दुरुपयोग राष्ट्र में होने लगता है। तो राष्ट्र, समाज, गृह समाप्त हो जाते है जब मानव करने लगता है तो वो मानव समाप्त हो जाता है। मैंने अभी– अभी कहा है, आज का, आधुनिक काल का राष्ट्र यह कहता है कि मुझे द्रव्य की आवश्यकता है। अरे, दुर्गन्ध युक्त वस्तुओं से यदि तुम द्रव्य को एकत्रित करना चाहते हो, तो वह द्रव्य जो दुर्गन्ध के बदले आता है वो द्रव्य, दुर्गन्ध के द्वारा वह समाप्त, समापन हो जाता है। और जो सुगन्ध के द्वारा आता है वह सुगन्धमयी रहता है वह जीवन की आभा बन कर रहता है।

परन्तु जब मैं इन वाक्यों को उच्चारण करने लगता हूँ तो आश्चर्य होता है। आज मैं इसका विरोधी नहीं हूँ कि संसार में विज्ञान नहीं होना चाहिए। मैं विज्ञान को लाना चाहता है। विज्ञान के ऊपर अनुसंधान करना हमारा कर्तव्य है। विज्ञान को जानो, जानकर उसका सदुपयोग करो, वही तुम्हारा जीवन है। यदि उसका दुरुपयोग होता रहेगा तो उसका परिणाम यह होगा कि गृह के गृह अग्नि के मुखारबिन्दु में परिणत हो जाएगें। वहाँ बहुत–सा साहित्य, समाज एकत्रित होता रहता है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने देखो, गुरु शिष्य के सम्बन्ध में नाना प्रकार के विचार प्रकट किये। ऐसे ऐसे विचार जिन विचारों को लेकर के मानव अग्रणीय बन जाता है। अग्नि की धाराओं पर विराजमान होकर के अग्न्याधान करके देवताओं के लोक में परिणत हो जाता है।

आज मैं अपने विचारों को विशेषता में देना नहीं चाहता हूँ। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अपना लोको, अब्राहः याग सुन्दर मानो प्रकरण दिया, उसी प्रकरण के आधार पर मैं भी अपने वाक्यों को प्रकट करूँ कि यज्ञमान मानो देखो, कर्मकाण्ड में याग को दृष्टिपात कर रहा था। मुझे बहुत प्रियतम में दृष्टिपात हो रहा था। मेरा अन्तरात्मा प्रसन्न हो रहा था। परन्तु हे ब्राह्मण! तेरी उद्गारता को धन्य है मानो तेरी आयु दीर्घ बने, सदैव तेरे जीवन में महानता बनी रहे। वेद मंत्र तेरे मस्तिष्क में, विचार–विनिमय में करने वाले हों जैसे हमारे मस्तिष्कों में वेद मंत्र मानो ऐसे भ्रमण करते जैसी प्रकृति का चक्र गति कर रहा है। इसी प्रकार आज का हमारा वाक् समाप्त, मेरी कामना यही है हे यज्ञमान! तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। मानो देवता प्रसन्न होते रहें, द्रव्य, लक्ष्मी सदैव तेरे गृह में वास करती रहे। वास उसी काल में करती है जब सदुपयोग होता है और सदुपयोग यागों के द्वारा होता है। हे यज्ञमान सपन्नि! तेरे हृदय में महानता की बलवती हो परन्तु आहारों में, विचारों में, शोधनपन होना बहुत अनिवार्य है। क्योंकि याग का यही फल होता है। यही जीवन की आभा होती है। इसके साथ मैं अपने वाक्यों को समापन दे रहा हूँ।

धन्य है मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मेरे प्यारे महानन्द ने अपना मन्तव्य दिया। **शेष अनुपलब्ध**

कर्तव्य में राष्ट्र

याग और उसका प्रभाव

जीते रहो,

देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मंत्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मंत्रों का पठन–पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद–वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान का प्रायः वर्णन किया जाता है क्योंकि हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस आभा का प्रायः वर्णन किया जाता है। जिस आभा में मनोनीतता सदैव विराजमान रहती है और मानवीय हृदय में, एक उज्ज्वलता का प्रसारण होता रहता है। हमारे यहाँ, बहुत पुरातन काल की नाना प्रकार की वार्ताएँ, मुझे बेटा! स्मरण आती रहती है।

आज का वेद का ऋषि हमें किस मार्ग के लिए पुकार रहा है। आज हम वेद के ऋषि की आज्ञा का पालन करते हैं। अथवा उन वेद मंत्रों का स्मरण करते हैं जिन वेद मंत्रों में, मेरे प्यारे! उस परमपिता परमात्मा की आभा और मानवीय क्षेत्र में रमण करने वाला प्राणी अपने में सौभाग्य को स्वीकार करता रहता है। मेरे प्यारे! आज का वेद का ऋषि हमें कुछ यागों की परम्पराओं की पारम्परिक मनवंचित प्रह्ने मानव के जीवन की, देखो, परस्पर अध्ययन चर्चाएँ हैं अथवा नाना प्रकार के याग हैं उनका प्रायः कुछ वेद मंत्रों में मानो उद्धरण आता रहता है। उनकी विचार धाराएँ उनका प्रकरण, प्रत्येक वेद मंत्र में मेरे प्यारे! निहित रहता है।

कर्तव्य

आज का हमारा वेद का ऋषि यह कहता चला जा रहा था हे यज्ञं ब्रह्मा कृताः हे यज्ञमान! तू यज्ञशाला में विराजमान हो करके याग कर। उस याग को क्यों कर? मानो उसके ऊपर वेद का ऋषि एक टिप्पणी देता है। वेद का ऋषि यह कहता है, इसलिए कर क्योंकि याग कर्म करना तेरा कर्तव्य है। मानो देखो, यज्ञशाला में विराजमान होकर के याग करना कर्तव्य है। याग का जो उज्ज्वल स्वरूप है वो हमारे समीप आना चाहिए। मेरे प्यारे महानन्द जी मुझे नाना प्रकार की वार्ताएँ प्रकट करते रहते हैं।

याग का अभिप्राय

मेरे प्यारे! याग का अभिप्राय यह है कि मन, कर्म, वचन से मानो देखो, अपने जीवन की नाना प्रकार की त्रुटियों का आहूत करने का नाम सबसे प्रथम याग कहलाता है। मेरे प्यारे! जो हमारे हृदयों में, हमारे मनों में, जो कुछ त्रुटियाँ उत्पन्न हो जाती हैं उसे त्यागने का नाम हमारा एक याग है। क्योंकि मानव का जो हृदय है, मानव का हृदय मानो ज्ञान से भरणित होना चाहिए और ज्ञान हृदय में उस काल में आता है जब जिसका हृदय पवित्र होता है और हृदय उस काल में पवित्र होता है। जब कि वह अपने निकृष्ट कर्मों को त्यागता रहता है। अपने आहार और व्यवहार को सुसज्जित बनाता रहता है। मुझे बेटा! बहुत पुरातन काल की वार्ता स्मरण आती रहती है। मेरे प्यारे महानन्द जी मुझे नाना प्रेरणा देते रहते है। उन प्रेरणाओं के आधार पर आज का हमारा वेद का ऋषि भी, वेद का मंत्र भी, इसी प्रकार का आता चला जा रहा है। ब्रह्मेः कृता अस्सुतं ब्रहे अस्तोः हृदयानि हृदप्रवाह अस्वातां ब्रहेः हृदाः हे मानव हे यज्ञमान! तू हृदय को उज्जवल बना मानो तेरा हृदय इतना स्वच्छ हो, जिससे तू देवताओं की सभा में विराजमान होकर के पूजन करने वाला हो।

पुरोहित

मानो तेरी पत्नी जो अम्बिका है, ब्रहे मानो वह अपने जीवन में सदैव अम्बलस्ते सुताहं मये वह स्वच्छता को धारण करने वाली हो, जिससे हमारा हृदय, हमारा गृह सदैव ऊर्ध्व गति में जाने वाला हो। जिस गृह में बुद्धिमान आचार्यो का आवागमन रहता है। पुरोहितों की प्रतिभा रहती है वो गृह सदैव स्वर्ग और आनन्द में स्वीकार किए गए हैं। हमारे आचार्यों का परम्परागतों से जैसा मैंने पुरातन काल में तुम्हें निर्णय करते हुए कहा, जिसके गृह में मानो पुरोहित गमन करते हैं। पुरोहित कौन होते हैं? जो परा विद्या को धारण करने वाले होते हैं। मानो वे विवेकी पुरुष होते हैं। जैसे मुनिवरो! देखो, राजा के राष्ट्र में जब तक पुरोहित रहते हैं। राजा का राष्ट्र उज्ज्वल और महान् पवित्र बना रहता है। तो इसीलिए हमारे गृहों में देखो, पुरोहितों का गमन होना चाहिए। पुरोहितों का समावेश होना चाहिए, उनका प्रवेश हमारे गृहों में होना चाहिए। जिससे हमारा गृह याज्ञिक बना रहे। यज्ञ का अभिप्रायः हमारे गृह में विचारों की सुगन्धि होनी चाहिए। हमारे गृहों में मानो साकल्य की सुगन्धि होनी चाहिए। जिससे मानो हम नाना प्रकार के पदार्थों को पान करते हुए हमारा गृह सदैव उन्नत होता रहे।

गृहस्थाश्रम में अग्निहोत्र

मैंने बहुत पुरातन काल में नाना प्रकार की चर्चा देते हुए कहा था अपने पुत्र से, हमारे यहाँ प्रायः यागों की प्रथा मानो अरबों वर्षों से चली आ रही है। परम्परा है ये। ब्रह्मा ने अपने शिष्यों से कहा था हे ब्रह्मचारियों! तुम याग करो। मानो यागों की परम्परा हमारे यहाँ बहुत पुरातन काल से है। याग का अभिप्राय ये कि साकल्य के द्वारा अग्नि में हूत करना। अग्नि में हूत के पश्चात् मेरे प्यारे! उस साकल्य की आभा को आने में धारण करना, ये मानवीय कर्तव्य कहलाता है। तो मुनिवरो! देखो, हमारे यहाँ पुरातन काल से गृह आश्रम की स्थापना हुई। मानो और भी नाना प्रकार का कार्य वहाँ प्रारम्भ हुआ, परन्तु उसमें सबसे प्रमुख अग्निहोत्र को माना गया है। अग्न्याधान करने को सर्वोपरी माना है। जिससे मानो देखो, अग्नि हमारे जीवन का सार्थक क्योंकि अग्नि नाम ज्ञान का है। अग्नि नाम ये भौतिक अग्नि भी है। जिस अग्नि को हम धारण करते हुए, नाना प्रकार के विज्ञान को प्राप्त होते हैं।

याग के स्वरूप

मेरे प्यारे! मुझे वो काल स्मरण आता रहता है। मुझे वो काल क्या, संसार की नाना प्रकार की चर्चाएँ मुझे स्मरण आती रहती है। महाराजा अश्वपति के यहाँ मानो नित्य प्रति प्रातः काल में बुद्धिमानों के द्वारा याग होता रहा। उन यागों का अभिप्राय यदश्चं ब्रह्मे कृता। मानो देखो, याग का अभिप्राय क्या? हम याग करते रहे। याग की परम्परा मेरे प्यारे! आचार्य कुल में होती है। इसी प्रकार आचार्य कुल में क्या, विद्यालयों में सदैव यागो की प्रथा है। परम्परागतों से याग होने चाहिए। याग का अभिप्राय है सुविचार। याग का अभिप्राय है अग्नि होत्र। अग्नि को हूत देना। मेरे प्यारे! ये सर्वत्र मानो याग के ही स्वरुप माने गए हैं। याग का अभिप्राय यह कि प्रत्येक इन्द्रिय को हमें ज्ञान रूपी अग्नि में तपाने का नाम एक याग है। आज मुनिवरो! देखो, हम याग के पथिक बने, मुझे बहुत पुरातन का काल स्मरण आता रहता है। बेटा! ब्रह्मचर्य से याग का सम्बन्ध है। मानव के जीवन में सबसे प्रथम मानो ब्रह्मचर्यता होनी चाहिए। जिससे वह अपने याग में परिणत होता हुआ अपनी आभा को उज्ज्वल स्वरुपों में धारण करता हुआ मेरे प्यारे! अपनेपन में ऊर्ध्व गति को प्राप्त होता रहे।

इन्द्रियों का सारथी

आज का हमारा, वेद का ऋषि हमें क्या आज्ञा दे रहा है। वेद का ऋषि कहता है–हे! मानव! तू अपनी इंद्रियों का याग कर, तू अपने श्रोत्रों का याग कर। मानो श्रोत्रों में दुरित विचार हमारे मन में ना आ पाएँ। मानो वाणी के द्वारा दुरित विचार हमारे मन के द्वारा न आ पाए। मेरे प्यारे! प्रत्येक इंद्रियों का जो सारथी है वो मनस्तव माना गया है। हमारा मन, कर्म और वचन पवित्र होने चाहिए। हमारा आहार और व्यवहार इतना स्वच्छ होना चाहिए जिससे हम

याग के देवताओं के निकट जाने का सौभाग्य हमें प्राप्त होता रहे। संसार में प्रायः यूं तो प्रत्येक प्राणी अपने जीवन को नष्ट करता रहता है? अरे वो मानव भी तो मानो देखो, उज्ज्वल होना चाहिए, जो देवत्व को प्राप्त होने वाला हो। देव प्रवृति को लाने वाला है। असुर तो संसार में कोई भी बन सकता है, परन्तु देवता बनना, ये मानव की एक आभा है। मानव का आन्तरिक विचार है, आन्तरिक धारणा है उसे प्रायः मानव को धारण करना चाहिए। अब मैं यागों की विशेष चर्चा प्रकट करना नहीं चाहता हूँ। हमारे यहाँ नाना प्रकार के यागों का प्रकरण वैदिक साहित्य में आता रहा है। जैसा वैदिक साहित्य में मेरे प्यारे! नाना प्रकार के यागों का जैसे नाना अदयुत्तं ब्रह्मे यागा मेरे प्यारे! हम याग करें, इंद्रियों से स्वच्छ बने। भौतिक याग को भी करते रहे। अग्न्याधान भी करते रहें। पुरोहित हमारे गृह में आवागमन करने वाले हों। अब मेरे प्यारे महानन्द जी अपना कुछ विचार व्यक्त करेंगे। अब हमारा तो इतना ही शेष विचार है।

पूज्य महानन्द जी का प्रवचन

ओ३म् मधुमा वसुन्धरा प्रजाः यौ शनशं चं ब्रह्मेः व्यापक बृविषा रेवं मयाः।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! आज मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, कुछ यागों की चर्चाएँ करते चले जा रहे थे। यागों का स्वरुप, मानव के सम्मुख रहता है। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही, इन यागों की प्रथाएँ, यागों का चलन, हमारे जीवन का एक अंग रहा है। राष्ट्र के जीवन का भी एक अंग रहा है। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह प्रगट कराते हुए कहा कि आधुनिक काल का जो प्राणी है आधुनिक काल का जो मानव है उसे प्रायः रूढ़िवादों से ही छुटकारा प्राप्त नहीं होता। वह रूढ़िवादों में ही इतना संलग्न रहता है कि वो अपनी बुद्धि, जो स्वतन्त्र रुपों से उस प्रभु ने दी है उस बुद्धि का वो उपयोग करना नहीं चाहता है। क्योंकि वह रूढ़िवाद में संलग्न हो गया है। परन्तु उसकी बुद्धि उसको सात्विक मार्ग पर ले जाने के लिए प्रेरित कर रही है। उसके पश्चात् भी वह जो रूढ़ि उसके मस्तिष्क में विराजमान हो गई है। उस रूढ़ि से सत्यमार्ग को वह जानना नहीं चाहता।

हृदय को सांत्वना

आज मेरा हृदय मग्न हो रहा है। आज हमारी आकाशवाणी, जिस स्थली पर जा रही है। वहाँ मानो देखो, अथर्वा ब्रहे कृताः एक याग का मैं श्रवण कर रहा था। मेरा हृदय गद् गद् हो रहा था। अपने में मैं यह स्वीकार कर रहा था कि कितना उज्ज्वल स्वरूप है। जब मैं ब्राह्मणं ब्रहे ब्राह्मण के स्वरों को मैं मानो यज्ञं ब्रह्मे श्रद्धं व्रहे श्रद्धा को दृष्टिपात कर रहा था तो मेरा हृदय गद्गद् हो रहा था। प्रायः मैं यह जान सकता हूँ कि परम्परा के कथनानुसार कर्मकाण्ड़ों में किसी प्रकार की भिन्नता हो सकती है। परन्तु मैं सदैव यह विचारता रहता हूँ कि जो देवताओं का याग है। देवताओं का जो भोजन है वह आंतरिक भोजन बनकर के मानव के हृदय को सांत्वना प्रदान करता है। उसके पश्चात मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह निर्णय कराया।

आज भी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मुझे निर्णय करा रहे थे कि यागों में, मानो विद्यालयों में याग होते रहते हैं। ब्रह्मचारी, गुरुजन विराजमान होकर के प्रातः काल में याग होते है। तो याग का अभिप्रायः याग का जो स्वरुप है वो मानो देखा, ज्ञान है, प्रकाश है। वो प्रकाश मानव के समीप आना चाहिए। और प्रकाश उसे कहते हैं जिससे देखो, इंद्रियाँ प्रकाश में रमण करती चली जाएँ। उस प्रकाश को धारण करना है जिस प्रकाश से मानो देखो, इन्द्रिय और इंद्रियों का जो समावेश मन के साथ होता है, वह आभा बन करके मानव के जीवन को उज्ज्वल बनाती चली आए वहाँ प्रकाश होना चाहिए। हे यज्ञमान! आज मैं मानो दृष्टिपात कर रहा था। यज्ञमानं ब्रहे कृता यज्ञमानो को चाहिए कि वे सदैव अपनी वाणी से, ऐसे पदार्थों को पान न करें जिससे मानो देखो, हमारी देववाणी जो परमात्मा ने हमें प्रदान की है मानो कितनी सुंदर वाणी है, रसना है। नाना प्रकार के रसों का स्वादन करने वाली है। ऐसा स्वादन नहीं होना चाहिए। मानो देखो, पितर लोकों का, आज हम जिस पितरयाग को करते चले जा रहें हैं। जन्मदिवस की आभा पर हम अपने जीवन का मानो जो हमने पुरुषार्थ किया है उस द्रव्य का, मानो हम सदुपयोग में, हमें उस महान प्रभु देव ने प्रेरणा दी है। उस प्रेरणा के साथ मानो देखो, अपने गृह में अह! देखो जिसके जन्म की आभा को हम परिणत करने जा रहे मानो देखो, उनके आचरणों को हम अपने जीवन में धारण करने वाले बनें, जिससे उनका नामोकरण हमसे ऊर्ध्व गति को प्राप्त होता चला जाए।

पितर याग

आज हमारे जीवन में मानो देखो, पितरयागों का अभिप्राय जिन पितरों ने हमारे लिए ऊँचे–ऊँचे कर्म किए हैं। ऊँचे–ऊँचे आहार और व्यवहारों को करके हमारी पालना की हैं मानो देखो, उन विचारों को हम धारण करने वाले बने। उन विचारों को पुनः से उदारता के सहित हम अपने में प्रवेश करें, जिससे हमारी वाणी, ऊँची बनती चली जाए है। मैं कोई शिक्षा देने नहीं आया है, विचार विनिमय क्या, कि जो मैं दृष्टिपात कर रहा हूँ उसको मैं उदण्ड रूपों से वर्णन करना नहीं चाहूँगा। परन्तु इतना उच्चारण करना मेरा कर्तव्य है कि मैं सदैव मानो मैं पूज्यपाद गुरुदेव की आज्ञा पाता हुआ मेरे हृदय की यह वेदना रहती है, मैं सदैव, देखो, जहाँ यज्ञमान इतना सौभाग्यशाली हो, उनका सौभाग्य अखण्ड बना रहे।

सौभाग्य का अभिप्राय

मानो सदैव मेरी यह कामना रहती है कि यज्ञमान के जीवन का सौभाग्य, सौभाग्य का अभिप्राय क्या है? सौभाग्य का अभिप्राय यह कि हम ऊँचे–ऊँचे कर्म करते रहें इसी का नाम सौभाग्य कहलाता है। कोई भी प्राणी हो संसार में, कोई भी मानव हो, कोई भी देवकन्या हो परन्तु वह जब ऊँचे–ऊँचे कर्म करता है तो वही उसका सौभाग्य कहलाता है।

ऊर्ध्व कर्म करने का अभिप्राय क्या है? कि हम सदैव अपने गृहों में ऐसी उदण्डता को उत्पन्न न करें जिससे हमारा व्यवहार भानु मानो भ्रष्ट हो जाए। हमारे जीवन में गम्भीरता आनी चाहिए। गम्भीरता का अभिप्राय यह कि प्रत्येक वाक्यों पर विचार विनिमय करें। हे यज्ञमान सपत्नि! तू गृहों में मानो श्री और लक्ष्मी बन करके प्रवेश करती है तो मानो देखो, द्रव्य का दुरुपयोग होता तो वह उदण्डता है और यदि द्रव्य का सदुपयोग होता हो, देवपूजा होती हो, ब्राह्मण जनों का आदर सत्कार होता हो। इसी प्रकार देखो, ये जो कर्म है ये जो विचार धारा है। हे श्री, लक्ष्मी! तू अपने गृह को मानो उज्ज्वल बनाने वाली बन, गम्भीरता के साथ में जिससे मानो तेरा जीवन सदैव ऊर्ध्वगति को प्राप्त होता रहे, और गृह में सदैव व्यापक दृष्टि से मानो पितरों का याग होता रहे। याग का अभिप्राय क्या, कि मा ब्रह्मे मातप्रवाह वेद का आचार्य कहता है कि गृह में जितने भी अपने से ऊर्ध्व गति वाले हैं। ऊर्ध्व आयु वाले हैं उनकी वार्ता में देखो, सदैव किसी प्रकार की हानि न होनी चाहिए। ऐसा मेरा सदैव विचार रहता है। परन्तु आज मैं विशेष चर्चा देने नहीं आया हूँ, विचार विनिमय यह, यूँ तो आज का संसार, आज का राष्ट्र, विज्ञान की आभा में विराजमान हैं।

महाराजा अश्वपति के महामन्त्री

मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह निर्णय कराया कि आज का जो विज्ञान है उसमें कोई विशेष वैज्ञानिक अब तक नहीं बना संसार में, परन्तु मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन कराते हुए कहा था कि महाराज अश्वपति के यहाँ जो महामंत्री थे वो मानो देखो, उनका विज्ञान, वैज्ञानिक यंत्र इतना ऊर्ध्व गति में था जिन्होंने बारह वर्षों तक वेद का अध्ययन करके, ब्रह्मचर्य का पालन करके, मानो देखो, अध्ययन, विज्ञानशाला में उस वैज्ञानिक यंत्र को जाना, जिसे एक लोक से, दूसरे लोकों में गमन करना है। पांचों लोकों में आवागमन जिस यंत्र का हो। वो विज्ञान कितना ऊर्ध्वगति में हैं। आज हमें

विचारना चाहिए, आज हम उस आभा में रमण करने वाले बनें। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने हमें नाना वार्ताएँ प्रकट कराई हैं। आज का मानव यह कहता है कि हमने चित्रावालियों के दर्शन कर लिए, चित्रावालियों के चित्रों को हमने एक दूसरे आसन से दूसरे आसन पर पहुँचा दिया तो मानो हम एक ऊर्ध्वगति वाले, मैं यह नहीं कहता हूँ, वैज्ञानिक हैं, परन्तु आज जितना विज्ञान जाना चाहिए, उतना विज्ञान नहीं है। आज का मानव मानो जिस आभा में विराजमान है।

मानव की आभा

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कईकाल में वैज्ञानिकों की चर्चाएँ प्रकट करते हुए कहा था मानो भीम पुत्र घटोत्कच्छ और भीम, पिता और पुत्र का विज्ञान इतना गति वाला था कि उनके यान पूज्य गुरुदेव ने वर्णन कराए थे कि चन्द्रमा के उपरले कक्ष में आज भी वैज्ञानिक यंत्र मानो अंतरिक्ष में परिक्रमा कर रहें हैं। लोकों की परिक्रमा कर रहे हैं। विचार विनिमय करना चाहिए मानो जब अपने आहार और विचार को शुद्ध बनाने वाला हो। विज्ञान यह नहीं कहता है। विज्ञान ये उच्चारण नहीं कर रहा है कि तुम असुर बन जाओ। विज्ञान यह कहता है, वैज्ञानिकता यह कहती है कि मानव को सतोगुणी बनना चाहिए। मानव को अपनी आभा को ऊर्ध्वगति में बनना चाहिए। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने योग की ऐसी–ऐसी आख्यायिका ऐसी–ऐसी मानो देखो, गुथियाँ ऐसी ऐसी ग्रन्थियों का स्पष्टीकरण किया, आज मैं मानो उनको धारण करता हूँ तो योग में और विज्ञान में परिणत हो जाता है।

मैंने बहुत पुरातन काल में, आज मैं यह उच्चारण करने आया हूँ, मानो यह दिवस, सप्ताह, आज यह समाप्त होता जा रहा है। इस सप्ताह में योग की बहुत सी आख्यायिकाएँ आई, योगी जन इनको धारण करके मानो वह अपनी अमरावती को प्राप्त हो जाता है। हे! यज्ञमान आज मैं इसको सौभाग्यशाली स्वीकार करता हूं, मेरा हृदय तो गद्गद् है मानो, जहाँ देवता हैं वहाँ असुर भी अवश्य होते है। इसीलिए मैं असुर और देवताओं की चर्चा नहीं कर रहा हूँ। विचार विनिमय में हमारा क्या है? हम यह उच्चारण करने आए हैं आज, मानो इस अमृतमयी बेला में, यज्ञमयी बेला में, सुगन्धिमयी बेला में कि हमारे गृह में मानो देखो, जहाँ सुगन्धि की स्थापना हो गई है। अरे, इस गृह में दुर्गन्धि नहीं होनी चाहिए। आहार में, व्यवहार में मानो देखो, ऐसी मानव की आभा रहनी चाहिए। मेरा सदैव यह विचार रहा है। मैं आज इस गृह मानव प्रह्ले मैं विशेष चर्चाओं में जाना नहीं चाहता हूँ।

आधुनिक विज्ञान का आह्वान

विचार विनिमय क्या मैं उच्चारण कर रहा था आज के आधुनिक काल के विज्ञान की चर्चाएँ कर रहा था। आज के विज्ञान में मानो एक यंत्र का निर्माण किया है और वह यंत्रों मानो ऐसे परमाणुओं से सुगठित है जिससे संसार में अग्नि प्रदीप्त हो जाएगी। ऐसे यंत्र का निर्माण किया है। परन्तु आज मैं यह जानना चाहता हूँ आज के वैज्ञानिको से कि उन्होंने इस प्रकार का भी कोई यंत्र निर्माण किया है जो वरुणास्त्र हो। जिससे प्रदीप्त अग्नि शांत हो जाए। ऐसा कोई यंत्र मेरी दृष्टि में अब तक इस वैज्ञानिक क्षेत्र में उत्पन्न नहीं हुआ है। परन्तु विचारना यह है कि हम उन यंत्रों का भी तो निर्माण करें जिससे अग्ने आस्त्र है तो वहाँ वरुणास्त्र भी हो।

तुम्हें यह प्रतीत होगा, त्रेता का काल। त्रेता के काल में जब मेघनाद ने ऊर्ध्व अग्नि अस्त्रों का प्रहार किया, नीचे जल है, जल ऊष्णता से परिणत है और ऊर्ध्वगति से मानो देखो, अग्नि की वृष्टि हो रही है। अहाः सेना उसमें नष्ट होने लगी। उसी काल में जब राम से त्राहि त्राहि किया तो राम ने वरुणास्त्र जिसका निर्माण महर्षि भारद्वाज ने किया था, उस वरुणास्त्र का मानो जब उन्होंने वेग से प्रहार किया तो मानो वो अग्नि शांत हो गई। वह अग्नि को निगल करके मानो देखो, उस यन्त्र का प्रभाव समाप्त हो गया। वह अग्नि को निगल गया, जल को निगल गया उसको वायु ने शीतल बना दिया। परिणाम क्या, इस प्रकार का यंत्र भी तो होना चाहिए। आज का मानव देखो, दूसरों का नष्ट करने वाले यंत्रों का देखो अग्नि का यन्त्र तो निर्माण कर रहा है। अरे, शांति का यंत्र भी तो होना चाहिए, वरुणास्त्र भी तो होना चाहिए जिससे मानो देखो, यह संसार अग्नि के मुख में इस प्रकार न चला जाए, जिससे मानव–मानव का ह्रास होता चला जाए। वास्तव में वह समय दूरी नहीं है। मैं समय को कोई दूरी नहीं स्वीकार कर रहा हूँ बहुत निकट समय आ रहा है। मैं भविष्य का वेत्ता नहीं हूँ, भविष्य की चर्चा भी नहीं देने आया हूँ। इतना उच्चारण अवश्य किए देता हूँ कि वह समय बहुत ही निकट है जब संसार में धीमी–धीमी अग्नि प्रदीप्त हो रही है। क्योंकि राष्ट्र के सुन्दर न होने पर और राष्ट्र में पुरोहित न होने पर अग्नि की धीमी–धीमी वृष्टि प्रारम्भ हो रही है।

स्वाभिमान का त्याग

आज का, मैंने बहुत पुरातन काल में पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन कराया। आज का प्रत्येक क्षेत्र इतना भ्रष्ट हो गया है प्रत्येक क्षेत्र अपने को इतना निम्न स्वीकार कर रहा है। मानो वह इतना निम्नता में परिणत हो रहा है वह अपने को मानो देखो, स्वाभिमान को उसने त्याग किया। जब मैं साधु समाज के द्वार पर जाता हूँ, तो साधु अपने में गौरव स्वीकार करता है। मानो जितना भी साधु से सम्पर्क देखो, उन व्यक्तियों का जो राष्ट्र की सम्पदा को अपने में धारण करके मानो राष्ट्र को एक–एक मानो निचली स्थली पर पहुंचाने वाले हैं ऐसा जो व्यक्ति हो, जितना उसका सम्बन्ध उससे होता है उतना वो साधु प्रसन्न होता है। परन्तु आज का साधु समाज, आज का जिसको मानो देखो, विरक्त कह सकते हैं। अहः ब्रह्मे प्रवाह वो सत उच्चारण करता हुआ, भय भीतर हो रहा है। क्यों हो रहा है? उसका मूल कारण यह है, कि उसका इस द्रव्य से, माया से मानो देखो, वह ऊर्ध्व गति वाला प्राणी, जो मानो देखो, संसार में प्रजा के वैभव को संग्रह करने वाला है। वैभव को संग्रह करके, अपने गृहों का निर्माण करने वाला हो उसको मानो बलवती उसको ऊर्ध्व गति में जाने वाला प्राणी कहते हैं।

ऊर्ध्व गति वाला समाज

हमारे यहाँ पुरातन काल में उस मानव को ऊर्ध्वगति में कहा जाता है जो त्याग और तपस्या में परिणत हो। त्याग और तपस्या में कैसे परिणत हो? मानो देखो, वशिष्ठ की भाँति, अरुन्धती और वशिष्ठ दोनों भयंकर वनों में रहते हैं। मानो देखो, राजा उनके समीप आता और उनके चरणों में विराजमान होता। चरणों में विराजमान होकर के नमः करता है, आज का मानो देखो, साधु अरुन्धती और वशिष्ठ जैसा नहीं रहा, यह कितना दुर्भाग्य है इस समाज का। यह वैदिक धर्म का, वैदिकता का कितना ह्रास हो गया। आज मैं जब यह विचारता हूँ मानो देखो, कहाँ चला गया वो समाज, कहाँ चली गई वो आभाएँ।

पूज्यपाद का पूर्व जीवन

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव का मुझे एक सूक्ष्म जीवन स्मरण आता रहता है। आज का, वर्तमान की चर्चा न देता हुआ परम्परा की चर्चाएँ। महाराजा गौणिक नामक राजा थे। जो महाराजा देखो, रघु के वंशलज में हुए हैं। गौणिक नाम के राजा के यहाँ वृष्टि यज्ञ होना, याग होना था। राजा स्वयं पत्नी सहित उनके द्वार पर गए और चरणों को छुआ और यह कहा प्रभु! हमारा निमंत्रण स्वीकार कीजिए। तो मेरे प्यारे आचार्य कहता है, पूज्यपाद गुरुदेव कहते हैं। कि मानो तुम एक वर्ष तक ब्रह्मचारी रहकर के मानो देखो, तुम मुझे निमंत्रण दो। मानो देखो, वह कितना आभा वाला शब्द है। उन्होंने प्रतिज्ञा की और प्रतिज्ञा करके मानो देखो, भिन्न भिन्न स्थली पर वास होता, उनका क्या गायत्राणी छंदो का पठन–पाठन करना। ब्रह्म की आभा में रमण करने का नाम ब्रह्मचारी कहलाता है।

वह जब उनके द्वार पर पुनः आए, पुनः आने के पश्चात् उन्होंने नमः करके कहा प्रभु! अब, तो उसके पश्चात् बारह दिवस का समय दिया कि तुम याग की पारम्परिक रचना करो। तो उसके पश्चात् वो याग हुआ। राजा के समीप जब पहुँचे, तो राजा ने स्थल को त्याग दिया और कहा आओ, भगवन्! अब उस स्थली को, जिसको त्याग करके राजा भयंकर वनों में चले जाते थे। आज का समाज, आज की वो वैदिक परम्परा इस समाज से चली गई, आज का राजा वृद्ध हो जाए, नष्ट मानो देखो, उसकी वाणी कार्य न करें, नेत्र कार्य न करे। घ्राण अपना कार्य त्याग दे, श्रोत्र त्याग दे। परन्तु वह उस स्थली को त्यागना नहीं चाहता। कहाँ चला गया समाज, मैं आश्चर्य से वाक् को प्रकट कर रहा हूँ।

आधुनिक राष्ट्र में खिलवाड़

परन्तु देखो, राजा एक वर्ष तक ब्रह्मचारी रहते हैं उसके पश्चात् वृष्टि याग करते हैं। साकल्य एकत्र किया जाता है। उसी प्रकार का साकल्य, आज का राजा कहता है। आज का, मानो देखो, प्रजा का नेतृत्व नहीं मानो प्रजा को जो गढेले में ले जा रहें हैं उनका नेतृत्व करने वाला कहता है, आज का समाज। परन्तु देखो, वह कहता है याग कर्म तो पाखण्ड है। अरे, पाखण्ड इसलिए है क्योंकि उसने अपने हृदय को इतना निकृष्ट बना लिया है कि उसको सभी शुभकार्य पाखण्ड दृष्टिपात आते हैं। आज का समाज, आज का राजा कहता है कि मानो देखो, द्रव्य होना चाहिए। राष्ट्र का चरित्र कहीं चला जाए, राष्ट्र की आभा कहीं चली जाए परन्तु देखो, द्रव्य होना चाहिए। जब राजा द्रव्य की मौलिकता में आ जाता है, द्रव्य का संग्रह करने में लग जाता है। मानो देखो, उस राजा के राष्ट्र में देखो, अग्नि के ऐसे भयंकर, अग्निकांड होते है कि राजा सदैव चिंतित रहता है समाज चिंतित हो जाता है।

असुर की प्रसन्नता

आज मैं वो वर्तमान में दृष्टिपात कर रहा हूँ। आज के राजा के लिए। आज मानो देखो, मैं तो उसे राजा उच्चारण नहीं कर रहा हूँ परन्तु उनको कह सकता हूँ राजा के लिए अहा, यह खिलवाड़ हो रहा है, राष्ट्र नहीं खिलवाड़ हो रहा है। कोई नियम नहीं है, संयम नहीं है, आहार और व्यवहारों के संकल्प नहीं है। मानो देखो, सुरापान करने को कहते हैं कि इससे द्रव्य आता है। अरे, यदि चरित्र को भ्रष्ट करके राजा के राष्ट्र में द्रव्य आया तो मानो वो क्या द्रव्य है। द्रव्य तो वह है जिससे कि सदाचार अपनी मानसिक प्रवृत्ति पर, मानवीयता पर किसी प्रकार की हानि न हो और द्रव्य उत्पन्न हो। परन्तु वो द्रव्य राष्ट्र के लिए हितकारी होता है। अहा, जब मैं यह दृष्टिपात करता हूँ जब मानो देखो, द्रव्यं ब्रहेः कृताः आज मैं विशेष चर्चा देने नहीं आया हूँ, विचार विनिमय में केवल यह कहने आया हूँ कि आज मैं अपने पूज्यापाद गुरुदेव से यही प्रकट कराने आया हूँ। आज का राष्ट्र जब मानो दैत्य बनने में प्रसन्न है, तो यह प्रसन्नता किस काल तक रहेगी? असुर की प्रसन्नता तो बहुत सूक्ष्म समय तक रहती है। वह समय निकट आ रहा है जब मानो असुर समाज समाप्त होता चला जा रहा है।

समाज का कल्याण

मैं आज कोई विशेष चर्चा में जाना नहीं चाहता हूँ विचार विनिमय यह कि हे मानव! तू अपने जीवन को सदाचारी बनाता हुआ असुरता को प्राप्त न कर, तू उस आहार को प्राप्त न कर। क्योंकि परमात्मा ने तुझे यह मानव जीवन दिया है। परमात्मा की आभा का चिन्तन करता हुआ, अपने मानवीय जीवन को चरित्र की आभा में ले चल और चरित्र की आभा से लेकर मानो देखो, राष्ट्र, समाज का कल्याण कर। उसके पश्चात् मानव अपने मानसिक जीवन, अपनी अयोध्यापुरी पर शासन कर लेता है।

मानव शरीर की अयोध्यापुरी

अयोध्या पुरी क्या? यह जो हमारा मानवीय शरीर है यह अयोध्या है और यह कैसी अयोध्या है? मानो देखो, ये नो द्वारो वाली है तू इससे संयम कर, जब तू अपनी मानसिक प्रवृत्ति पर, मानवीयता पर संयम करेगा तो असुरता स्वतः चली जाएगी। आज मानव मानो देखो, अपनी आभा में ही रमण करता हुआ, अपने को निकृष्ट करता हुआ अपने को यह विचारे कि मैं आत्मा हूँ, मेरे द्वारा अहम् है, मेरे द्वारा मेरा स्वाभिमान न चला जाए। स्वाभिमान किसे कहते हैं? मेरे प्यारे! स्वाभिमान उसे कहा जाता है जिसमें मानवीय चित्रण हो, जिसमें आभा का चित्रण हो, जिसमें मानो देखो, वह अभ्युदय हो, वह जो आभा हैं उसी को मेरे प्यारे! हमारे यहाँ मानसिक प्रवृत्ति कहा जाता है। यत्वध ब्रहे अभ्याम लोकाः वही तो मेरे प्यारे! देखो, स्वर्ग और मानवीय क्षेत्र में ले जाता है।

आज मैं विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह निर्णय करा रहा हूँ, आज का जो मानवीय वैज्ञानिक है। आज का यह कोई नवीन विज्ञान नहीं है। पुरातन काल में जो विज्ञान था, वह इस प्रकार का विज्ञान है। जहाँ शब्दों को, अन्तरिक्ष में यंत्रों से दृष्टिपात किया जाता था। ऐसा विज्ञान हमारे यहाँ रहा है, मुझे वो काल स्मरण है, जब पूज्यपाद गुरुदेव की यज्ञशाला में, आश्रम में विराजमान होते थे, तो ऋषि जन साधक समाधिष्ठ हो करके, एक स्थली में याग हो रहा है, स्वाहा कह रहें हैं मानो देखो, उन स्वाहा कहने वाले, उन शब्दों का जो परमाणुवाद बनकर के मानव के आकार में चित्रण हो रहा है। समाधिष्ठ होकर के देखो, मन के द्वारा, मन रूपी यंत्र के द्वारा उस चित्र को योगी जन चित्रण करते हैं। उसका ही चित्रण करते रहें कि कितने बड़े आकार का कितना विशाल आकार बना है परन्तु उस आकार वाले चित्र को हम दृष्टिपात करते रहें है पुरातन कालों में।

जीवन की ऊर्ध्वगति

आज मुझे इतना समय आज्ञा नहीं है कि मैं सर्वत्र वाक्यों की पुनरूक्ति करूँ। परन्तु विचार विनिमय हमारा यह है कि हम सदैव अपने जीवन में, इतने ऊर्ध्वगति में बनने वाले बने, जिसमें हमारा मानव समाज ऊँचा बने। आज मेरा हृदय बहुत प्रसन्न है, मैं याग को दृष्टिपात कर रहा था मानो देखो, वो गृह सौभाग्यशाली होते हैं। जिन गृहों में द्रव्य का सदुपयोग हो, हूत हो, याग और देवताओं की पूजा हो, मानो मेरा हृदय बहुत ही प्रसन्न हैं आज अब्रहा प्रसन्नं अब्रहे कृताः परन्तु जहाँ–प्रसन्न है, वहां ये भी है कि गृह में सुगन्धि होती रहे, दुर्गन्धि न हो। ऐसा सदैव मेरा विचार रहता है। जहाँ मानो देखो, सुगन्धि में, दुर्गन्धि में, दुर्गन्धि सुगन्धि में जहाँ परिवर्तित हो जाती हैं वो गृह कितने सौभाग्यशाली हैं। उन गृह में कितना आनन्द होता रहता है। आज जिन महापुरुषों की आज जिन चित्रों की, मानो जन्म दिवस की आभा का वर्णन है मानो उसका हृदय, उनका मानवीय जीवन उनका मानो आहार और व्यवहार सुगन्धि में था उसी प्रकार उनका आचरण प्रत्येक बालिका को प्रत्येक मानव को गृह स्थली में करना चाहिए। ये मेरा प्रायः हृदय कहता है। आज मैं विशेष चर्चा प्रकट नहीं करना चाहता हूँ, मेरा केवल मन्तव्य यही रहता है कि सुगन्धि हो। सुगन्धि से, यह राष्ट्र कुछ भी कहे। राष्ट्र कहीं चला जाए, परन्तु यह सुगन्धि कार्य करती रहेगी। सुगन्धि अपना कार्य करेगी, दुर्गन्धि अपना कार्य करती रहेगी। परन्तु दुर्गन्धि को नष्ट करना, हमारा कर्तव्य है। विचारों की दुर्गन्धि हो, मानो आहार की हो, व्यवहार की हो, उस सर्वत्रता को शांत करने के लिए हम मधुरता से, ज्ञान से, विवेक से हम मानो प्रयत्नशील रहें।

यह आज का हमारा वाक् कि आज मुझे यज्ञमान की पत्नी को केवल इतना ही वाक् उच्चारण करना है कि हे यज्ञमान! तेरे जीवन की अखण्डता बनी रहे। आनन्दितता बनी रहें परन्तु तेरे मानो ब्रहे ब्रह्मे, द्रव्य की सदैव वृद्धि होती रहे जिससे देखो, द्रव्य के सदुपयोग से कार्य होते रहें। याग होते रहे, देवताओं की पूजा होती रहे। किसी प्रकार की मानो द्रव्यं ब्रहे.... प्रभाहीनता नहीं आनी चाहिए और जब ब्रहे दुर्गन्धिता आ जाती है। तो द्रव्य की हीनता स्वतः आ जाती है। इसीलिए जहाँ सुगन्धि है, वहाँ धर्म है। जहाँ धर्म है, वहाँ श्री है। जहाँ विष्णु है, वहाँ लक्ष्मी मानी जाती है और जहाँ से विष्णु चला जाता है वहाँ से

लक्ष्मी भी चली जाती है। जहाँ पति का आदर होता है, पति का स्वागत होता है। वहाँ मानो देखो, लक्ष्मी उसके चरणों में, उसके आँगन में रहती है। और जहाँ पति का निरादर होता है वहाँ पत्नी का निरादर होता हो, आदर न होता हो है। मानो देखो, जहाँ पूजा न होती हो। उस गृह से वो दोनों चले जाते हैं और देखो, द्रव्य का दुरुपयोग होता हुआ, उसको मानो देखो, दुरिता में परिवर्तित हो जाते हैं।

आज मैं विशेष चर्चा देने नहीं आया हूँ। विचार विनिमय केवल यही है कि आज हमें अपने जीवन को ऊँचा बनाना और मेरा सदैव हृदय से यह रहता कि जीवन का जो सार है उसकी सदैव अखण्डता बनी रहे। पत्नी विराजमान होकर के शुभ कार्यों को सदैव करती रहे। आनन्द रहे और आनन्दता जहाँ रहे, वहीं सर्वत्र सम्पदा होती हैं। सम्पदा होनी चाहिए। सम्पदा के साथ उनका सदुपयोग होना चाहिए। इनके जीवन का अखण्ड सौभाग्य बना रहे ऐसा मेरा विचार, अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा चाहूँगा।

(पूज्यपाद) मेरे प्यारे ऋषिवर्! आज मेरे प्यारे महानन्द जी ने जो अपना मन्तव्य प्रकट किया, वह बहुत ही प्रिय लग रहा है क्योंकि उसमें एक वेदना थी। राष्ट्रीय वेदना, मानवीय वेदना। उस वेदना के साथ मानव के जीवन को वास्तव में सार्थक बनाना ही मानवीय कर्तव्य है। आज मैं भी कुछ विशेष चर्चाओं में जाना नहीं चाहता हूँ। महानन्द जी के कथनानुसार जैसा इन्होंने कहा है। मेरा भी हृदय से सदैव यह विचार रहता है कि दुर्गन्धि सुगन्धि में परिवर्तित होकर के जीवन की आभा सदैव बनी है। **शेष अनुपलब्ध**

1979

संसार और मानव शरीर

जीते रहो,

देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मंत्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मंत्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद वाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि जितना भी ये जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत् दृष्टिपात् आ रहा है? इस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। क्योंकि प्रत्येक वेद मंत्र, उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है। जिस प्रकार यह माता ब्रह्मे वर्णाः जैसे ये माता का पुत्र माता की माथा गा रहा है। जिस प्रकार यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है इसी प्रकार, प्रत्येक वेद मंत्र उस ब्रह्म की गाथा गा रहा है। अथवा उसके ज्ञान और विज्ञान का वर्णन कर रहा है। क्योंकि वह परमपिता परमात्माा विज्ञानमयी स्वरूप है। विज्ञान उसका आयतन माना गया है। मानो वे परमपिता परमात्मा ज्ञानमयी स्वरूप है। ज्ञान ही उसका आयतन माना गया है।

वेदमन्त्र में ब्रह्माण्ड

परन्तु जहाँ वेद के मंत्रों के ऊपर, हम अनुसंधान करना प्रारम्भ करते हैं। तो एक–एक वेद मंत्र में बेटा! ब्रह्माण्ड का वर्णन आता रहता हैं अथवा एक–एक परमाणुवाद की प्रतिभा का वर्णन आता रहता है। मुझे वो काल स्मरण आता रहता है। जब ऋषि मुनि अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके और एक–एक परमाणुओं के ऊपर प्रायः अनुसंधान करते रहे हैं। और एक–एक परमाणुवाद के विभक्त करने से ब्रह्माण्ड का दिग्दर्शन करते रहे है। आज मैं तुम्हें ज्ञान और विज्ञान के उस गम्भीरतम, रहस्यतम् में नहीं ले जाना चाहता हूँ। परन्तु आज का हमारा वेद मंत्र क्या कह रहा है, क्योंकि प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही बेटा! प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है। और प्रेरणा को पान करता हुआ, प्रेरित होकर के बेटा! नाना प्रकार के विचारों की उड़ाने उड़ता रहता है। अथवा विज्ञान की नाना प्रकार की धाराओं में रत रहता हुआ मानो उसकी विचार धाराओं में एक मनोनीतता और प्रतिभाषितता हमें प्रायः दृष्टिपात आती रही है।

तो विचारना क्या है। आज का हमारा वेद मंत्र कुछ कह रहा है। वेद मंत्र कुछ प्रेरणा दे रहा है। आज के हमारे वेद मंत्रों में मानो उस परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन आ रहा है। जिसके ऊपर मानव बेटा! परम्परागतों से ही एकत्रित होकर के अपनी–अपनी विचारधारा में रत रह करके और उसके ज्ञान और उसकी प्रतिभा उसकी महानता पर प्रायः वर्णन और विश्लेषण होता रहा है। परन्तु आओ बेटा! मैं तुम्हें उस क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ माता वसुन्धरा का वर्णन आता रहता है। जहाँ विष्णुयाग की चर्चा होती रहती है जहाँ मेरे प्यारे! ब्रह्माग्नि का वर्णन आता रहता है। जहाँ शिशु पिपाद की प्रतिभा का प्रायः वर्णन आता रहता है जहाँ इस संसार के सम्बन्ध में ऋषि मुनियों ने बेटा! अपने में मानो विचारधारा में रत रह करके संसार के ऊपर चिंतन करना प्रारम्भ किया है।

महर्षि जमदग्नि के आश्रम में सभा

आओ मेरे पुत्रो! आज मैं तुम्हें ऐसे, दार्शनिकों के समाज में ले जाना चाहता है जहाँ दार्शनिक जनों ने इस संसार के ऊपर ऊंची से ऊंची कल्पनाएं की हैं, परन्तु देखो, मानवीय जीवन के सम्बन्ध में भी नाना प्रकार की कल्पनाएँ की हैं। एक समय बेटा! मुझे स्मरण है किसी समय बेटा! महर्षि जमदग्नि के आश्रम में एक सभा हुई थी। जिसमें मानो नाना ब्रह्मचारी, नाना ब्रह्मवेत्ता, ब्रह्मनिष्ठ विद्यमान थे। इसमें बेटा! महर्षि प्रवाहण महर्षि शिलक, महर्षि दालभ्य, महर्षि रेणकेतु, महर्षि विभाण्डक, महर्षि सोम प्रतिका मेरे प्यारे! महर्षि सोमकेतु दद्दड और भी नाना देखो, चाक्राणी गार्गी, महर्षि सोमकेतु, ब्रह्मचारी कवन्धी, ब्रह्मचारी यज्ञदत्ता और मुनिवरों! ब्रह्मचारी सुकेता नाना ब्रह्मचारी विद्यमान थे। जिसमें महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज, सोम वृत्तिका, नाना ब्रह्मचारी और ब्रह्मवेत्ता विद्यमान थे। परन्तु यह विचार विनिमय होने लगा कि ये जो मानव का शरीर है यह क्या है? यह मानव है क्या ?

मानव शरीर

तो बेटा! देखो, नाना प्रकार की कल्पनाएँ होने लगी। उन कल्पनावादियों ने, दार्शनिकों ने कहा कि यह संसार या मानव शरीर के ऊपर चिंतन होना चाहिए कि यह मानव शरीर क्या है? तो बेटा! चाक्राणी गार्गी ने उपस्थित होकर के कहा कि ये जो मानव का शरीर है यह मानो एक संकल्पमयी कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, द्वितीय दार्शनिक ने कहा कि नहीं, ये संसार तो मानो देखो, एक प्रकार की ब्रह्मपुरी माना गया है। यह ब्रह्मा की पुरी है। तृतीय दार्शनिक ने कहा कि नहीं, ये संसार और मानव का जो शरीर है यह एक विष्णुपुरी के रुप दृष्टिपात आता रहा है। परन्तु देखो, आगे ऋषियों ने कहा कि नहीं यह संसार तो शिवपुरी है।

मानव शरीर और संसार का समन्वय

मेरे प्यारे! देखो, नाना प्रकार की आख्यिकाएँ वर्णन होने लगी परन्तु महर्षि पिप्पलाद ब्रह्मवेत्ता ने यह कहा कि यह जो संसार है यह तो भोगवाद है। अपवर्ग भोगः यह तो भोगवाद है। यहाँ भोग मानो देखो, कर्म करने के पश्चात्, उसके परिणामों को भोगने के लिए प्राणी आता है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि

मुनियों ने आगे एक ऊंची कल्पना की, कि यह संसार और यह जो मानव का शरीर है दोनों का परस्पर समन्वय रहता है। यह शरीर तो एक प्रकार की मानो देखो, विज्ञानशाला है। यहाँ प्रत्येक मानव वैज्ञानिक बनने के लिए आया है और विज्ञान की धाराओं का चिंतन और मनन करने के लिए आया है। मेरे प्यारे! देखो, आगे दार्शनिकों ने कहा, नहीं, यह संसार और मानव शरीर तो एक प्रकार की यज्ञशाला है। यहाँ प्रत्येक मानव याज्ञिक बनने के लिए आया है। और याग कर्म करने के लिए आया है। मानो एक प्रकार की यह यज्ञशाला है।

संसार रूपी यज्ञशाला

तो मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें विशेषता में तो ले जाना नहीं चाहता हूँ विचार विनिमय क्या, कि यह संसार यज्ञशाला कैसे है? आगे दार्शनिक ने कहा कि नहीं, यह संसार तो मानो देखो, संत्सग पुरी है। यहाँ प्रत्येक मानव सत् और संग की प्रतिभा को जानने के लिए आया है। अपने को सत्य में, ऋत में परिणत करना चाहता है। और यह चाहता है कि मैं सत्य के गर्भ में प्रवेश हो जाऊँ, मैं सत्यवादी बनकर के और सत्य का संग करके मैं भी स्वतः मानो सत्य की प्रतिभा को जानकर के, उस सत्य में ही रमण कर जाऊँ। ऐसा मानो देखो, ऋषि मुनियों ने अपने जीवन में बेटा! देखो, अपनी प्रतिभा का दर्शन किया।

विचारों की सघंर्षपुरी

आगे ऋषि कहता है कि नहीं, यह संसार तो एक प्रकार की संघर्षशाला है। यहाँ प्रत्येक मानव संघर्ष करने के लिए आता है। कहीं देव प्रवृत्ति का जन्म होता है तो कहीं मानो देखो, दैत्य प्रवृत्ति का जन्म होता है। वही मानव देवता है, वहीं मानव दैत्य है। दोनों का संघर्ष होता रहता है। मथन होता रहता है विचारों का, तो विचारों की यह मानो देखो, संघर्षपुरी है। तो बेटा! ऋषि मुनियों ने अपना–अपना मन्तव्य प्रगट किया, परन्तु देखो, आगे जब इसके ऊपर चिंतन होने लगा तो बेटा! जिसमें दृष्टिपात किया वही अनतंता में दृष्टिपात आने लगा।

संकल्पपुरी

मेरे प्यारे! देखो, जब संकल्प की वार्ता आई कि यह संकल्प पुरी है, यह संकल्पोमयी है। तो मानो देखो, यह ब्रह्माण्ड जैसे परमात्मा का, परमपिता परमात्मा का संकल्प माना गया है। इसी प्रकार बेटा! यह मानव शरीर भी एक, संकल्पपुरी है। संकल्पमयी जगत् है मानो संकल्पमयी यह मानव का जीवन दृष्टिपात आता है। बेटा! देखो, आचार्य एक मानव है। वह मानव शिष्य का एक संकल्प गुरु है। मेरे प्यारे! देखो, संकल्पमयी माता पुत्र की मानो देखो, माता है। वो संकल्प मयी है। पति की पत्नी है वो संकल्पमयी कहलाती है। परन्तु देखो, इसके ऊपर विचारते रहो, चिंतन करते रहो संकल्प में बेटा! यह जगत् है। संकल्पोमयी अग्नि है, संकल्पोमयी तेज है। तो विचार क्या मुनिवरो! देखो, प्रभु भी संकल्प में निहित रहता है। तो विचारने से प्रतीत हुआ कि जिस वाक् पर तुम मानो देखो, अपनी दृष्टि पहुँचाओगे तो अनंतता में बेटा! यह ब्रह्माण्ड तुम्हें दृष्टिपात आता रहेगा। मानो दर्शन के गर्भ में चले जाओ, विज्ञान के गर्भ में चले जाओ। चिन्तन मनन करने लगोगे तो बेटा! मानो एक अनन्तमयी ब्रह्माण्ड तुम्हें दृष्टिपात आता रहेगा।

परिक्रमा से माला

जैसे अनन्तता में मैं तुम्हें बहुत पुरातन काल में निर्णय कर गया, एक समय एक ऋषि ने कहा कि यह संसार और मानव क्या है? तो विचारा गया कि यह मानव शरीर एक प्रकार की परिक्रमा है। यहाँ प्रत्येक मानव, मानव की परिक्रमा करता रहता है प्राणी, प्राणी की परिक्रमा करता रहता है। जैसा बेटा! देखो, माता का पुत्र माता की परिक्रमा कर रहा है। माता, पुत्र की परिक्रमा कर रही है। पत्नी–पति की परिक्रमा कर रही है। मेरे प्यारे! देखो, पति पत्नी की परिक्रमा कर रहा है। यह पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा कर रही है, और सूर्य मानो देखो, इस बृहस्पति की परिक्रमा कर रहा है। बृहस्पति मेरे पुत्रो! आरुणि मण्डलों की परिक्रमा कर रहा है। आरुणि मण्डल मुनिवरो! देखो, स्वाति की और ध्रुव की परिक्रमा कर रहा है और मुनिवरो! देखो, ध्रुव अब्रहे मूल नक्षत्र की परिक्रमा कर रहा है। और मूल नक्षत्र स्वाति की परिक्रमा कर रहा है, स्वाति मुनिवरो! अचंग मण्डलों की परिक्रमा कर रहा है, अचंग मंडल मुनिवरो! देखो, व्रणेतकेतु मण्डल की परिक्रमा कर रहा है, व्रणेकेतु व्रीति मण्डल की परिक्रमा कर रहा है। व्रीति मण्डल देखो, गन्धर्व लोको की परिक्रमा कर रहा है और इन्द्र की परिक्रमा करके बेटा! एक सौर मण्डल है जो नाना निहारिकाओं की परिक्रमा कर रहा है। तो बेटा! ये कैसा अनन्तमयी जगत् है। मानो एक दूसरा, एक दूसरे में पिरोया हुआ है। एक दूसरा एक दूसरे की, एक सूत्र में पिरोने से बेटा! माला बनी हुई हैं ये माला के सदृश है। ये मानव का शरीर भी माला के सदृस है।

चौबीस स्तम्भ

मेरे पुत्रो! देखो, इसके ऊपर मैंने बहुत पुरातन काल में बेटा! एक वाक् तुम्हें प्रगट किया था। एक समय महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराजा अपनी यज्ञशाला में विद्यमान थे। प्रातःकालीन उन्होंने याग किया, अग्निहोत्र करने के पश्चात्, वेद की उपदेश मंजरी प्रारम्भ होने लगी। जब वेद की उपदेश मंजरी प्रारम्भ होने लगी, तो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारी उनके निकट विद्यमान हो गए। ब्रह्मचारियों ने बेटा! एक मानो देखो, एक खिलवाड किया। ब्रह्मचारियों ने, आचार्य के चरणों में विद्यमान हो करके कहा हे प्रभु! हम आपसे कुछ प्रश्न करना चाहते हैं? मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि ने कहा कि जो तुम्हारा प्रश्न हो उसको करो, मैं उसका यथोचित उत्तर दे सकूँगा। उन्होंने कहा–हे भगवन्! देखो, हम एक यज्ञमान बन गये है। हम याग करना चाहते हैं मानो देखो, हमारा याग कितने होताओं से होना चाहिए? तो बेटा! देखो, ऋषि कहता है कि चौबीस होताओं से याग होना चाहिए। क्योंक चौबीस खम्बो का यह मानव शरीर है और चौबीस स्तम्भों का मानो यह ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आता है।

मेरे प्यारे! देखो, वेद का ऋषि जब विश्लेषण करने लगा मानो देखो, विश्लेषण करता हुआ बोला, कि यह जो ब्रह्माण्ड है और यह जो ब्रह्म का जगत् है इसमें चौबीस खम्भे माने गए है। इसको क्रियाशील बनाने के लिए बेटा! इसमें दस प्राण हैं दसग्रहणाः ममवृत्ति कहलाती है मानो पंचवृत्तियाँ कहलाती हैं और पंच उपप्रवृत्तियाँ कहलाती है और मेरे प्यारे! देखो, उनके आधार पर यह मानव शरीर गति कर रहा है। जैसे यह माना जाए, कि यह मानव शरीर एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में दृष्टिपात आ रहा है। इसके चौबीस होता माने गए है और वह चौबीस होता कौन से हैं? बेटा! देखो, दस प्राण हैं, पांच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ मन, बुद्धि, चित्त, और अहंकार यह चतुष अन्तःकरण बनकर के बेटा! चौबीस बन जाते हैं। ये चौबीस होता हैं जो इस शरीर रुपी यज्ञशाला में बेटा! आहुति दे रहे हैं, स्वाहा कह रहे हैं। जितना भी सुकर्म है, उस सबका नाम बेटा! देखो, याग कहा जाता है। एक मानव मधुर उच्चारण कर रहा है। एक मानव दर्शनों की वार्त्ता उच्चारण कर रहा है बेटा! यह लोक और परलोक दोनों का याग कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, वह दर्शनों से गुथा हुआ जो शब्द है वह अग्नि की धाराओं पर विद्यमान होकर के आकार बन करके बेटा! द्यौलोक में प्रवेश कर जाता है। मानो द्यौलोक का वह जो शब्द है वह अवकाश, अन्तरिक्ष में गति करता है।

चौबीस होता

विचार विनिमय क्या? मेरे पुत्रो! देखो, वो प्रिय याग हो रहा है। यागां भविते देवं यज्ञं रथाः। मेरे प्यारे! देखो, यज्ञ एक रथ है। इस रथ के ऊपर विद्यमान हो करके ये चौबीस मानो उसके अश्व कहलाए जाते हैं। जिसके ऊपर बेटा! वाहन गति कर रहा है। आनं वृत्ति बन रहा है विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रो! आगे वेद का ऋषि कहता है, आचार्य कहता है हे ब्रह्मचारियों! ये जो चौबीस होताओं का याग हो रहा है, इस याग को हमें करना है। मानो यह याग हो रहा है। सुकर्मणं ब्रह्मवाचोः मेरे पुत्रो! ब्रह्मचारियों ने कहा प्रभु! हम विशेष व्याख्या तो आपसे मानो सर्वत्र श्रवण करते रहते हैं। परन्तु हम यह जानना चाहते हैं कि जब ये मंगलं ब्रहे मानो देखो, ये यज्ञमान याग करना चाहता है तो इसके कितने होता हो?

सत्रह होता

तो मेरे प्यारे! ऋषि कहता है देखो, सत्रह होता होने चाहिए। सत्रह क्या है? मुनिवरो, देखो दस प्राण हैं, पंच महाभूतों की वासना है और मन और बुद्धि है। जब मुनिवरों देखो, यह मानव शरीर, इस स्थूल शरीर को त्यागता है तो सूक्ष्म शरीर इस मानव शरीर से गमन करता है और वह वायुमण्डल में गमन कर जाता है। चित्त के मण्डल में प्रवेश कर जाता है। क्योंकि ये चित्त और परमात्मा का जो अखण्ड बना हुआ चित्त का मण्डल है इन दोनों का समन्वय हो जाता है, दोनों का मिलन हो जाता है। तो विचार क्या मुनिवरो! देखो, चित्त के मण्डल में प्रवेश कर जाता है। इसी प्रकार जब चित्त के मण्डल में वो प्रवेश कर गया, तो वह सूक्ष्म शरीर बेटा! सत्रह तत्वों का मानव शरीर से चला गया। स्थूल यहीं रह गया, सूक्ष्म चला गया। तो मेरे प्यारे! देखो, वो प्रिय इन होताओं से एक याग हो रहा है। मानव जब चित्त के मण्डल में प्रवेश करता है। तो वहाँ विचारों को सुवासनाओं को लेकर के बेटा! प्रिय याग हो रहा है।

ग्यारह होता

तो मेरे प्यारे! ब्रह्मचारी ने आगे यह प्रश्न किया–कि महाराज एक यज्ञमान याग कर रहा है। परन्तु कितने होता होने चाहिए? तो आचार्य ने कहा कि इसमें अप्रतम ग्यारह होता होने चाहिए। ग्यारह होता क्या है? एकादशो ब्रह्मवाचः एकादश को एकत्रित करके अपने में याग कर्म करने लगे। बेटा! पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ और एक मनस्तव कहलाया जाता है। मानो देखो, ये ग्यारह बन गए तो ग्यारहों के द्वारा वो याग कर रहा है। वो याग करता हुआ, ग्यारह होताओं से स्वाहा की आहुति दे रहा है। वो याग कर रहा है। वो परमपिता परमात्मा की महती को जानना चाहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा प्रत्येक इन्द्रियों के विषयों को जान करके, प्रत्येक इन्द्रियों के ज्ञान और विज्ञान को जानकर के मेरे पुत्रो! देखो, इन सबका साकल्य बनाकर के जब हृदय रूपी यज्ञशाला में मानो देखो, ये इंद्रियों के विषयों के साकल्य का हूत करता है, ज्ञानरूपी अग्नि में मानो उन्हें प्रवेश करा देता है तो बेटा! देखो, धर्म, मानवीयता और मुनिवरो! देखो प्रभु का दृश्य उसे साक्षात्कार आने लगता है।

तो विचार विनिमय क्या? वेद या ऋषि कहता है एकादश से हम मानो याग करना चाहते हैं। याग या अभिप्राय यह है कि साकल्य बना करके अग्नि में हूत करना है। उसे ब्रह्माग्नि कहते हैं। ब्रह्माग्नि में जब हूत कर दिया जाता है। तो मेरे पुत्रो! देखो, एकादश में रत होने वाला बन जाता है। परन्तु आगे वेद के आचार्यों से यह प्रश्न किया ब्रह्मचारियों ने कि प्रभु! हम यह ओर जानना चाहते हैं कि मानो ब्रह्मेः यह यज्ञमान याग करना चाहता है कितने होता होने चाहिए।

नो होता

उन्होंने कहा नो होता होने चाहिए। बेटा नो क्या है? इस मानव के शरीर में नो द्वार माने गए हैं। इस यज्ञशाला में नो द्वार हैं बेटा! मानो देखो, प्रत्येक द्वार पर प्रत्येक देवता विद्यमान है। एक–एक द्वार पर दो–दो देवता विद्यमान है। मेरे पुत्रो! कहीं मानो ब्रह्मे वाचाः कहीं वाचक हैं। कहीं कृतिका हैं, कहीं सोमनीय है। नाना प्रकार के मानो देवताओं का भान होता हुआ दृष्टिपात् आता है। इन नो द्वारों को मानो संयम में करते हुए नो द्वारों के विज्ञान को जानकर के, नो द्वारों के देवताओं को जानकर के बेटा! देखो, ब्रह्मपुरी को प्राप्त हो जाता है और विष्णु यशश्तव को प्राप्त होकर के इस सागर से पार हो जाता है। मेरे पुत्रो! आगे वेद के ऋषि ने कहा ब्रह्मोवाचक प्रह्ले नो द्वारः अस्तेः ये नो द्वार हैं, एक अयोध्यापुरी है मानो इसके नो द्वार है। अष्टचक्र इसके कहलाए जाते इसमें मानव योग में प्रवेश कर जाता है।

आज मैं बेटा! व्याख्याता नहीं हूं केवल तुम्हें संक्षिप्त परिचय देना चाहता हूँ और वह परिचय क्या हैं? परिचय केवल इतना ब्रह्मो धृत प्रह्ले लोकाम् इन नो द्वारों को हम संयम में लाना चाहते हैं। परन्तु वेद के ऋषि से आचार्यों ने, ब्रह्मचारियों ने यह प्रश्न किया कि हे प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं कि यह जो यज्ञमान विराजमान हैं, यह याग करना चाहता है कितने होता हों ?

सप्त होता

तो ऋषि कहता है। सप्त होता ऋषिं ब्रहे। वेद की आख्यिका कहती है। नोदामयी मंत्र कहता है। सप्तं ब्रह्मवाचोः सप्तं दिव्यां भविते देवः सप्तं होता ऋषभ प्रह्रि व्रतो ये सप्त होताओं का याग करना चाहता है मानो सप्त होना होने चाहिए। मेरे पुत्रो! सप्त होता कौन? ये मानो देखो, ज्ञानेन्द्रियाँ है। ज्ञानेन्द्रियों में ही सप्त होता कहलाते हैं। मानो देखो, किसी में जमदग्नि विद्यमान हैं। किसी में विश्वामित्र विद्यमान है। किसी में कश्यप है तो किसी में वशिष्ठ है। और किसी में मानो देखो, गौतम कहलाता है तो मानो किसी में अत्रि है। अश्वादन कह रहा है ये सप्त होता है। बेटा! सप्त होताओं के द्वारा यज्ञमान याग कर रहा है। सातो होता आहुति दे रहे हैं। इद्रियों के द्वारा, शरीर रुपी यज्ञशाला का याग हो रहा है।

पंच होता

आओ, मेरे पुत्रो! वेद का ऋषि तो बहुत ऊँची उड़ान उड़ रहा है। वेद का मंत्र भी ऊँची उड़ान उड़ रहा है परन्तु देखो, आगे ब्रह्मचारियों ने कहा प्रभु! ये ऋषियों कि व्याख्या भी हमने श्रवण की है। अत्रि कहते हैं वाणी को। मेरे पुत्रो! जो अति नहीं है देखो अति आहार करके इस संसार की कृतिका को जानता है। मानो वो अत्रि कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने पुनः प्रश्न किया कि प्रभु! हम जानना यह और चाहते हैं कि यज्ञमान याग करना चाहता है। कितने होता होने चाहिए? उन्होंने कहा इसमें पंच होता होने चाहिए। बेटा! पाँचो होता कौन हैं? मुनिवरो! देखो, आपोमयी ज्योतिः देखो, रसोमयी अमृताः, रसोमयी स्वद्यमब्रह्मवाः वेद के आचार्यों ने कहा कि गुरुतव आपोतव तेजोतवः, अश्वति गतितवः, वर्णियस्तव और देखो, व्यापितवः वेद के आचार्य ने कहा है कि ये पंच महाभूत हैं। मानो देखो, गुरुत्व पृथ्वी को कहते हैं। आपोमयी जल को कहते हैं और तेजोमयी अग्नि को कहा जाता है। और मुनिवरो! देखो, जो उन्हें भ्रमण कराते उसे वायु कहते हैं। जो प्राणतव कहलाता है और मुनिवरो! देखो, अवकाश अंतरिक्ष को कहते हैं। जहाँ वह भ्रमण करते हैं।

मेरे पुत्रो! देखो, मानव की वाणी इसी वाक को लेकर के, मुझे स्मरण आता रहता है। ऋषि मुनियों ने ऐसे अन्वेषण किए हैं बेटा! इसी को लेकर के मानो वाणी की प्रतीति हुई है। क्या, ये जो शब्द है, शब्द के साथ में चित्र हैं। चित्र के साथ में जो क्रियाकलाप हो रहा है। वो बेटा! अंतरिक्ष, अवकाश में शब्द भ्रमण कर रहा है। परन्तु वायु उसे गति दे रही है और वह अग्नि की तेजोमयी ज्योतियों पर बेटा! वो देखो, दृष्टिपात आने लगता है। मैं बेटा! आज

विज्ञान के युग में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ। विचार विनिमय केवल यह है कि ऋषि मुनियों ने बेटा! अध्ययन करते हुए कहा है इन्हीं शब्दों के ऊपर कि हम अपने में पंचमहाभौतिकमय पिंड कहलाते हैं। मानो यह ब्रह्माण्ड भी पंचमहाभूतों में दृष्टिपात करता रहता है।

मेरे पुत्रो! देखो, याग हो रहा है। ये यागां भूतं ब्रह्मवाच देवः बेटा! उद्यालक गोत्र के ऋषियो ने जब इस प्रकार के याग को प्रारम्भ किया था तो उन्होंने बेटा! अपने पूर्वजों के मानो पचासवें महापिता के चित्रों का दर्शन किया था। मेरे पुत्रो! जब इसी वाक् को महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में बेटा ये याग हुआ तो उन्होंने बेटा! देखो, अन्तरिक्ष में चित्रों को बेटा! देखो द्यौलोक से अपने में ग्रहण किया था। उन्हीं शब्दों में क्रियाकलाप है, उन्हीं शब्दों में चित्र है। उन्हीं शब्दों में मेरे प्यारे! देखो, आकार बनकर के गतियां हो रही है। देखो, वह वायुमण्डल में प्रवेश हो रहा है। विचारणीय गतियाँ हो रही है। परन्तु देखो, आगे वेद का आचार्य कहता है। सम्भवो ब्रह्मवाचः ये पंच महाभूत है मानो देखो, आपोमयी ये जो गुरुतव में ये पृथ्वी कहलाती है। पृथ्वी का परमाणु गुरुतव माना गया है। आपो का परमाणु मेरे प्यारे! देखो, जब माता के गर्भ में प्रवेश करता है, आपो का परमाणु, तो देवता उसके साथ गतियाँ करते हैं। ये ही आपो का परमाणु शरीर में प्रवेश होकर के मानव का शरीर बनता है। यही मेरे प्यारे! देखो, पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश करता हैं वही परमाणुवाद मानो देखो, आपोमयी कृतिका में रमण करता हुआ, अपोमयी जो ज्योति है वो आत्मवत कहलाता है। मेरे पुत्रो! देखो, वही माता वसुन्धरा प्रभु की गोद में प्रवेश कर जाती है।

तो मैं बेटा! विशेषता में तो नहीं जाना चाहता हूँ। विचार विनिमय केवल क्या? वेद के आचार्य से यह प्रश्न किया गया। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से कि महाराज! ये पंचमहाभौतिक जो याग हो रहा है। ये मानो देखो, ब्रह्माण्ड के पंच खम्भ कहलाते हैं। पंच स्तम्भ कहलाते है मानो देखो, शरीर के भी यही कहलाते हैं। इन्हीं में बेटा! वो गतियाँ कर रहा है। पंचों प्रणाः ब्रह्म वाचाः पंच ही बेटा! प्रकृति की गति हैं। पंच ही मेरे प्यारे! पंचीकरण में ये सर्वत्र जगत् विद्यमान हो रहा है। परन्तु देखो, ब्रह्मचारियों ने यह कहा—हे प्रभु! यह विज्ञान भी, हम विशेषता में, आप हमें समय समय पर व्याख्या करते रहते हैं। परन्तु यह जाना चाहते हैं कि ये यज्ञमान याग करना चाहता है तो कितने होता होने चाहिए ?

तीन होता

उन्होंने कहा—तीन से। मेरे प्यारे! तीन होताओं पर आ गया ऋषि और तीन होता कौन से हैं बेटा! सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण, कहलाते हैं। मेरे पुत्रो! ये जो सतोगुण रजोगुण, तमोगुण हैं। इनमें सतोगुण से पालन हो रहा है, रजोगुण से शासन हो रहा है, और तमोगुण से मेरे प्यारे! उत्पत्ति का क्रियाकलाप चल रहा है। मानो तीनों गुण एक दूसरे के पूरक कहलाते हैं। एक दूसरे में पिरोये हुए हैं। जैसे नाना मनके बेटा! एक सूत्र में पिरोकर माला बन जाती है। इसी प्रकार ये एक सूत्र के पूरक कहलाते हैं। बिना सतोगुण, तमोगुण में प्रवेश किए बिना मानो उत्पत्ति नहीं बनती। परन्तु वही सतोगुण जब मुनिवरो! देखो, रजोगुण में, जाता है तो शासन मानो देखो, न्याय नहीं बनता यदि सतोगुण नहीं होगा। मेरे पुत्रों! देखो, सत, रज और तम नहीं होगा तो पालन भी नहीं हो सकता। सतोगुण ही मेरे प्यारे! नम्र है। वह अब्रति कहलाता है। उसी में मुनिवरो! देखो, माता के द्वारा तीनों गुण कहलाते हैं।

जब माता पुत्र का पालन करती हैं तो तीनों गुण मुनिवरों! देखो, माता के समीप विद्यमान है। वह उत्पत्ति के मूल में भी है, शासन के मूल में सतोगुण से बेटा! उसका पालन कर रही है। मानो देखो, सतोगुण से पालन, रजोगुण से अनुशासन में ला रही है और तमोगुण हो करके मेरे प्यारे! उत्पत्ति के मूल में प्रवेश कर रही है। विचार विनिमय क्या हे माता! तूझे वेद, वसुन्धरा के रुप में परिणत कर रहा है। तुझे पृथा कह रहा है तुझे रोहिणी कह रहा है। वेद का मानो एक एक शब्द तुझे गौ के रूपों में वर्णन कर रहा है। कहीं मेरे प्यारे! माता को वसुन्धरा के रुप में क्या, मानो धेनु के रूप में प्रवेश कर रहा है। हम जब वैदिक साहित्य में प्रवेश करते रहते हैं तो हमें एक आश्चर्य जनक मानो देखो, माता का शरीर दृष्टिपात आने लगता है।

मेरे पुत्रो! वेद के ऋषि ने कहा, याज्ञवल्क्य ने ब्रह्मचारियों से कहा कि तुम तीन के द्वारा याग करो। तीन होता विद्यमान हैं। रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण ये एक प्रकार का याग हो रहा है। याग का अभिप्राय है इसका सदुपयोग करना। याग का अभिप्राय है उसको सु में लाना। याग का अभिप्राय हैं मुनिवरों! देखो, हम जिस स्थली पर हैं उसकों हम शुद्ध—विशुद्ध रुपों से वर्णन करते हुए, अपने में मेरे पुत्रो! उसे अपने में ग्रहण करते हुए सागर से पार हो जाए।

दो होता

मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार की विवेचना की तो विवेचना पूर्ण नहीं होने दी। ब्रह्मचारियों ने प्रश्न किया कि महाराज यज्ञमान याग करना चाहता है कितने होता हों? तो ऋषि कहता है कि दो होता होने चाहिए। देखो, प्रकृति और ब्रह्म दोनों के द्वारा यह संसार रुपी याग हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो, जब दोनों का सम्मिलन होता है तो एक—दूसरे के पूरक बन जाते हैं तो बेटा! यह प्रिय याग हो रहा है। कहीं सत् के रुप में याग है, कहीं ऋत के रूपों में याग हो रहा है। जैसा महर्षि पिप्पलाद ने कहा था एक समय में, कि सत्तो ब्रह्मवाचः मानो देखो, सत, ऋत् दोनों के सम्मिलन से ब्रह्माण्ड की रचना होती है। इस ब्रह्म की रचना, ब्रह्माण्ड जो रचना में आता है वह एक सूत्र में प्रवेश किया जाता है।

सन्निधान मात्र से गतियाँ

मेरे प्यारे! वेद के ऋषि ने कहा—हे ब्रह्मचारियों! हे यज्ञमानों! तुम याग करो, परन्तु दो के द्वारा करो, मानो देखो, सत् में प्रकृति है और सतो से उपराम होने वाला ब्रह्म है। ब्रह्मो वाचं ब्रह्मवाचो देवः मेरे प्यारे! देखो, ऋतों में प्रकृति कहलाती है जड़ और चेतना का जब दोनों का मिलन होता है। दोनो का मुनिवरो! देखो, सन्निधान मात्र से बेटा! गतियाँ प्रारम्भ हो जाती है। परमाणुओं में गति आ जाती है। अणुवाद गति करने लगता है। तो मुनिवरो! देखो, ब्रह्माण्ड का चक्र प्रारम्भ हो जाता है।

एक होता

विचार विनिमय क्या, आओ मेरे प्यारे! मैं विशेषता में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ। विचार केवल यह है यज्ञो भविते देवाः ब्रह्मचारियों ने पुनः प्रश्न किया—कि महाराज! यज्ञमान याग करना चाहता है कितने होता हों? उन्होंने कहा कि एकोकी ब्रह्म वाचाः कृति एक ही ब्रह्म होना चाहिए तुम्हारे मध्य में। प्रभु का चिंतन होना चाहिए, उस चिन्तन के साथ में मनन हो करके ब्रह्म को प्राप्त हो जा, अपने को जब यह स्वीकार कर ले कि हम तो माता वसुन्धरा की गोद में विद्यमान है। माता वसुन्धरा ही इस संसार का संचालन करने वाली, वही एकोकी चरण में जब मानो विद्युतिकरण कर लेता है अपने में धारण कर लेता है। तो मेरे प्यारे! एक ही ब्रह्म की उपासना करता हुआ, इस संसार सागर से पार हो जाता है।

आओ मेरे पुत्रों! मैं आज तुम्हें विशेष विवेचना देना नहीं चाहता हूँ। विचार विनिमय क्या है? आज का हमारा विचार यह कह रहा है। कि हम मुनिवरो! देखो, परमपिता परमात्मा की उपासना करते हुए मानो देखो, एक दूसरे के पूरक बन करके अपने को महान बना करके इस सागर से पार हो जाए ये हमारा अंतिम चरण हैं। अंतिम सूत्र है। जिस सूत्र में मुनिवरो! प्रत्येक मानव सूत्रित हो जाता है। आओ मेरे पुत्रो! देखो, मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, विचार क्या चल रहा था मुनिवरो! देखो, जिस भी आँगन में तुम प्रवेश करोगे, वहीं तुम्हें अंतिम हो करके अंतिम बिन्दु पर स्थिर हो जाओगे और बिन्दु पर जाने के पश्चात् मौन हो जाओगे।

प्रभु की प्रतिभा

तो मुनिवरो! देखो, इस प्रकार ये जो परमपिता परमात्मा का अमूल्य जगत् है मानो मेरे प्यारे! वह जो प्रभु है वो विज्ञानमयी है वो मानो देखो, वसुन्धरामयी कहलाता है। वो ज्ञान और विज्ञान बेटा! उसका आयतन है। इसलिए प्रत्येक वेद मंत्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है। उस परमपिता परमात्मा का वर्णन कर रहा है और यह घोषणा कर रहा है। ये उदघृत हो रहा है कि यह जो ब्रह्माण्ड है ये प्रभु की प्रतिभा है। मेरे प्यारे! देखो, इसी में मानव सदैव रत रहता है। इसी में मुनिवरों! प्रभु की उपासना करता हुआ सागर से पार हो जाता है। विचार विनिमय क्या है कि हे प्रभु! अम्ब्रहे हे अमृतोमयी अम्ब्रहा कच्छतं दिव्यां गत्प्रवाह लोकाः वाचन्नमो ब्रह्माः मेरे प्यारे! देखो, वह जो मेरा प्यारा प्रभु है चेतन्य देव है जो मानो देखो, गम्भीरता में रमण करने वाला, वह मेरा देव बेटा! ज्ञान और विज्ञान में रत जितना भी जड़ जगत् है चैतन्य जगत् है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में वह मेरा प्रभु ही हमें दृष्टिपात आता है। इसलिए हमें प्रभु की उपासना करते हुए बेटा! हमें इस सागर से पार हो जाना चाहिए।

ये हे बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूंगा। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय क्या कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और यह विचारे कि हमारा मानव शरीर क्या है? बेटा! ये चौबीस खम्बों का यह मानव शरीर कहलाता है। इसमें पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, दस प्राण, मन, बुद्धि चित्त, और अहंकार, इसी का यह ब्रह्माण्ड है और मुनिवरो! ये मानव शरीर चौबीस खम्बो का कहलाता है। सूक्ष्म शरीर मुनिवरो! देखो, सत्रह खम्बो का कहलाता है। उसमें दस प्राण है, पंच महाभूतों की देखो, वासना है मन और बुद्धि है।

मुनिवरो! देखो, इसी प्रकार ये जगत्, बाह्य जगत् का जब अन्वेषण किया जाता है। तो एकादश बन जाते है। जब मुनिवरो! देखो, द्वारो पर विचार आता है कितने द्वार हैं इस पुरी के, इस ब्रह्मपुरी के कितने द्वार है तो बेटा! नो द्वार दृष्टिपात आते हैं। इस ब्रह्मयाग में कितने होता? सप्तर्षि हैं। प्रत्येक इन्द्रियों से बेटा! सुदृष्टिपात किया जाए। प्रत्येक इन्द्रियों से सुकर्म किया जाए। साकल्य उनके विषयों को एकत्रित करके ज्ञान और विज्ञान में रत रहकर के हृदय रूपी यज्ञशाला में बेटा! उनको हूत कर देना चाहिए। मानो देखो, पंचमहाभूतों में ब्रह्माण्ड की प्रतिभा ज्ञान और विज्ञान निहित रहता है। तीन ही गुणों में पालन, उत्पत्ति और शासन की प्रतिभा आ जाती है। मेरे प्यारे! दो ही करण में प्रकृति सुन्नः और चेतना प्रभु है दोनों के संनिधान से परमाणु गति करने लगते हैं। सृष्टि का प्रारम्भ हो जाता है। दोनों गति में भिन्न– भिन्न हो जाते हैं। तो प्रलय की प्रवृत्ति बन जाती है। प्रलय की आभा बन जाती है और एकोकी ब्रह्म है जो बेटा! सर्वत्र ब्रह्माण्ड का मूल कहलाता है।

ये है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा तो मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। तो आज का वाक् अब समाप्त अब वेदों का पठन–पाठन।

ओ३म् माह वाहू वाचन्नमः ग्राहाणत्वा देवं आपाः रथौ गा याः वसो ब्रह्माणः
ओ३म् देवं रथा वायुः वाचन्नमौ वायाः वाचन्नमः।
ओ३म् व्यापा रहं ग्राहाणन्त्वा रेवं आपाः।
ओ३म् स्वंजना देवं मया सर्वं भद्रा।।

1.5.1984 कैनाल कॉलोनी, ओखला, दिल्ली

प्रभु से सन्धि

जीते रहो!

देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मंत्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मंत्रों का पठन–पाठन किया, हमारे यहाँ परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद वाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है अथवा उसकी उपासना की जाती है। और उसको विज्ञानमयी स्वरूप स्वीकार करते हुए, मानव आध्यात्मिक विज्ञान में रत हो जाता है तो हमारा प्रत्येक मन्त्र, प्रत्येक वाक् उसकी विवेचना कर रहा है, आज का हमारा वेद मंत्र, उस ब्रह्म की उपासना के लिए प्रायः हमें प्रेरित करता रहता है। हे अग्ने! तू प्रातः काल की अग्नि है। जब तू प्रातः काल में उदबुद्ध होकर के प्रकाश को लेकर के आती है। तो वह प्रकाश अन्धकार को नष्ट कर देता है। अन्धकार को अपने में निगल जाता है। परन्तु वही अग्नि का प्रकाश, गृहो में प्रवेश हो रहा है और द्यौ से दूरी अपनी आभा में आभारित होकर के, ये प्रकाश का द्यौतक बन जाता है।

दिशाओं में ईश्वर

हे प्रभु! तू कितना विज्ञानमयी स्वरूप है। तू कितना विज्ञानमयी स्वरुप माना गया है। मानो सूर्य प्रातः कालीन मानव को प्रकाश देता है और रात्रि रूपी अंधकार को नष्ट कर देता है। हे परमात्मन! आप कैसे विज्ञानवेत्ता है। आप कैसे सृष्टि चक्र को गतियाँ दे रहे हैं अथवा इसका नियमन कर रहें है। हे भगवान्! आप महान और विचित्र कहलाते हैं। जब हम ये विचारते है प्रातःकालीन कि हम कहीं चले जाएँ, तो कोई स्थली ऐसी दृष्टिपात नहीं आती, जहाँ आप की प्रतिभा हमें प्रतिभाषित नहीं होती। मानो पूर्व में जाते हैं तो अग्नि के प्रकाश रूप में आप ही प्रकाश को ले करके उद्दीप्त हो रहे है। हम दक्षिण दिशा में जाते हैं। तो वहाँ इन्द्र बन करके मानो अमृतमयी धारा प्रदान कर रहे हों। मानो देखो, जब हम पश्चिम दिशा में जाते हैं तो वही वरूण बन करके, अनन्त महानता और देखो, भण्डार में युक्त होते हुए आप वहाँ वरुण कहलाते हैं। जब हम उत्तरायण में जाते है तो वहाँ सोम मानो सोम के रूप में आपकी वृष्टि हो रही है। आप सोम को प्रदान कर रहे हो। ये सारा जगत् सोम में दृष्टिपात आता है। मानो जब हम ध्रुवा में जाते हैं तो नम्रता से ही पालन होता हुआ, वहाँ आप ही विष्णु के रुप में विद्यमान है। हे प्रभु! आप कैसे विष्णु हो। यदि नम्रता नहीं आती, तो मानव भी अपने जीवन का पालन नहीं कर सकता और ये नम्रता ही विष्णु के रूप में उद्दीप्त रहती है।

प्रभु की नम्रवृत्तियाँ

माता के जीवन में यदि विष्णु रूप नहीं है तो वह बालक का पालन नहीं कर सकती, पुत्र का पालन करने में शून्य हो जाती। मानो देखो, वही माता विष्णु रूप बनकर के ध्रुवा में, नम्रता में अपनी आभा को प्रगट कराती रहती है। प्रभु! आप भी पालन करने वाले हैं। एक माता अपने पुत्र का पालन कर सकती है। परन्तु यह जो नाना रुपों में ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आ रहा है। मानो ये जो सर्वत्र जगत् के प्राणी मात्र, प्रत्येक लोक लोकान्तरों में जो प्राणी वास कर रहा है उसका कौन पालन कर रहा है? माता तो केवल एक पुत्र–पुत्री का पालन करती तो उसे विष्णु कहते हैं परन्तु आप तो कितने विशाल विष्णु है कि मानो कैसे अनुपम विष्णु हैं जो संसार का पालन कर रहे हो, ये रचाने के पश्चात् रचाना और पालन करना ये प्रभु! आपकी नम्र वृत्तियाँ है। आप ध्रुवा में रहने वाले विष्णु है। हे विष्णु! ध्रुवा वर्णं ब्रहे व्रताः हे विष्णु! तू ध्रुवा में पालन करने वाला है। तू पालना का एक स्रोत है। मानो देखो, सत्य से ही पालन होता है। वह विष्णु ही सत्य है। ध्रुवा में, नम्रता में रहने वाला है।

प्रभु की गहती

मेरे प्यारे! यदि नम्रता नहीं आती तो जीवन की सार्थकता समाप्त हो जाती है। यदि जीवन में नम्रता का स्रोत नहीं आता तो प्रभु! की महती को हम नहीं जान सकते। यदि नम्रता नहीं आती तो हम एक दूसरे का सहयोग नहीं कर पाते। तो इसलिए नम्रता आना बहुत अनिवार्य है। नम्रता के साथ में विवेक की प्रतिभा की प्रतिभाषिता अनिवार्यता हो जाती है। इसी प्रकार मेरे प्यारे! देखो, वह विष्णु कैसा है? वह ध्रुवा में भी है, मानो ऊर्ध्वा में बृहस्पति बन करके रहता है। हे! ऊर्ध्वा में गति करने वाले, आप बृहस्पति है। आप आचार्य हैं, गुरुजन है। मानो देखो, गुरुजन बनकर के हमारा कल्याण कर रहे हैं। ध्रुवा ब्रह्मवाचो देवो शिवाः वही मानो देखो, शिवावृत्ति कहलाता है। मेरे प्यारे! वर्षा व्रहे, वही वर्षा का स्रोत माना गया है। तो मेरे प्यारे! देखो ऊर्ध्वा में गति कराने वाला कौन? वह हमारा बृहस्पति बन करके हमें ज्ञान और विज्ञान का, स्रोत बनकर के हमें उसकी आभा में रमण करा रहा है।

ब्रह्मयाग की आवश्यकता

तो मेरे पुत्रो! देखो, विज्ञान में रत रहने वाला मानव अपने में ग्रहण करने लगता है कि वह जो प्रभु है जो ऊर्ध्वा में बृहस्पति बन करके रहता है। हे! बृहस्पते! आ तू हमारा कल्याण कर। हमें ज्ञान दे, हमें मानो देखो, मेधावी बुद्धिप्रदान करके हमें मानो देखो, ऋतम्बरा में प्रवेश करा। हे ध्रुवा में, हे ऊर्ध्वा! में उग्रात गति करने वाले बृहस्पति! तू आ। तू बृहस्पति बन करके हमारा कल्याण कर रहा है। तो मेरे प्यारे! जब इन वाक्यों पर विचार विनिमय प्रारम्भ होता है। देखो, पूर्व दिशा में तो अग्नि बन करके रहता है और दक्षिण में तू इन्द्र बनकर के रहता है। और पश्चिम में तू मानो देखो, वरुण बन करके रहता है। उत्तरायण में सोम बन करके रहता है। ध्रुवा में विष्णु बन करके रहता है। ऊर्ध्वा में बृहस्पति बन करके रहता है तो प्रभु! कौन–सा स्थान हमारे लिए ऐसा है जो हम किसी प्रकार की तेरे राष्ट्र में धृष्टता कर सकें। मानो हमें कोई भी स्थली ऐसी दृष्टिपात नहीं आती, जहां हम पापाचार कर्म करने के लिए तत्पर हो जाए। जहाँ हमारा मन जाता है। वहीं आपकी प्रतिभा दृष्टिपात आती है वहीं आपका ज्ञान और विज्ञान हमें दृष्टिपात आता है तो प्रभु कौन–सी स्थली ऐसी है हे देव! जहाँ हम आपको त्याग कर के चले जाएँ और हम पाप कर्म में तत्पर हो जाए। क्योंकि हम जहाँ पर जाते हैं वहीं आपकी प्रतिभा निहित है, वहीं आप विद्यमान है। तो कोई स्थली ऐसी नहीं जहाँ वह परमपिता परमात्मा न हो और हमें किसी प्रकार का अवकाश प्राप्त हो जाए। परन्तु ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में जाने की आवश्यकता है। चिंतन और मनन करने की आवश्यकता है। इसीलिए प्रत्येक मानव को प्रातः कालीन बेटा! ब्रह्मयाग करना चाहिए।

ब्रह्मयाग का अभिप्राय यह है कि ब्रह्म का चिंतन करना। वह ब्रह्मयाग कैसा है? ब्रह्मयागी कैसे बनता है? वह प्रातः काल बेटा! प्रभु की सृष्टि को निहार रहा है। वो मानो देखो, प्रभु को एक–एक, कण–कण में दृष्टिपात कर रहा है और करते–करते उसी में बेटा! वो रत हो जाता है। तो परिणाम क्या मुनिवरो! देखो, वो मेरा देव कैसा अनुपम है कैसी महानता वाला है, कैसा विचित्र है, कैसा औजस् कहलाता है। जिसके ऊपर परम्परागतों से बेटा! अनुकरण, अनुसंधान करता रहा है। विचारता रहा है कि प्रभु तो ऐसा एक अनुपम है। हम कहाँ जाएँ। परन्तु देखो, उसके पश्चात् भी मानव अपने अज्ञानता के कारण इस प्रभु की सृष्टि में अपने में मानों देखो, दूषित प्राणी का प्रसारण करता रहता है। जिससे मानो वायुमण्डलाऽहं वायुचत्प्रहि मेरे पुत्रों! देखो, उसमें एक अकृति उत्पन्न हो जाती है। जिससे मानव क्या, वायुमण्डल क्या प्रभु की सृष्टि में वह दूषितपन आ जाता है। तो प्रभु! मैं तो यह कहता हूँ, कि तू अपनी कृपा, आनन्द को बरसा। हमें आनन्द की वृष्टि करा करके मानो देखो, तृप्तो कर्माणि ब्रह्माः तृप्त कर्मो से हमें पार करा। हे प्रभु! हम मानो अंधकार में नहीं रहना चाहते। हम प्रकाश में रत रहना चाहते हैं। प्रत्येक मानव प्रकाश को चाहता है।

प्रातः काल की अग्नि

तो हे प्रातः काल की अग्नि! तू प्रकाश ले करके आती है या मानो देखो, वह अग्नि सूर्य के साथ–साथ बेटा! उषा किरण को, कहीं कान्ति किरण को, कहीं व्रेणकेतु किरण को मानो देखो, वह अपने में भासता रहता है। आदित्य बन करके तू प्रकाश देता है। तो मानो देखो, वह प्रकाश द्यौ प्रातरां भविते देवः सूर्य से ही तो प्रातः काल बन गया है। उस सूर्य के, उस अग्नि के कारण ही मानो सम्वतसर बन गया है। मुनिवरो! देखो, अहोरात्र बन जाता है। अहोरात्र भी इसी के कारण, बनता है। इसीलिए सूर्य के कारण प्रकाश से ही मुनिवरो! दिन और रात्रि का, रात्रि में भेदन हो जाता है। दोनों के भेदन रुपों में मानो देखो, वह वर्णवृत्तियों में अवकाश दृष्टिपात आता है।

सन्धिकाल

उसको अहिल्या में, मानो कहीं उषा में, कहीं शान्ता में परिवर्तन करने वाले बेटा! देखो, ऋषि मुनि अपने में परिवर्तित करते रहते हैं। इस ब्रह्माण्ड का विभाजन होता रहता है। अपने में वृत्तियों को पार करता हुआ मुनिवरों! देखो, अपने को पार ले जाना चाहता है। तो विचार क्या? हे प्रभु! आप प्रातः काल की अग्नि बनकर के मानो हमें संध्या के उस मुग्ध रुप में हमें एक संधि में परिणत करा देती हो। मानो देखो, संधि दोनों के मध्य में विद्यमान, दोनों का मिलान होना ही सन्धि हो जाना है। जैसे रात्रि और दिवस दोनों का जहाँ संविधान सम्मिलन होता है। उसी को सन्धि काल कहते हैं। उसी को संधि कहते हैं। संधि का अभिप्राय है मिलन।

तो मुनिवरो! देखो, जब अंधकार और प्रकाश दोनों का मिलन होता है। तो संधि हो जाती है। एक दूसरे में परिवर्तित हो जाते हैं अथवा उसमें रत हो जाते है। तो रत होकर के मुनिवरो! देखो, संधि वन जाती है। इसी प्रकार जब मानो देखो, प्रातःकाल की तू पूर्व दिशा में पूर्वा ब्रहे प्रकाश देकर, के आती है। प्रकाश को ऊर्ध्वा में गति करा देती है। इसी आशा को लेकर के मेरे पुत्रों! देखो, भगवान् कृष्ण, देखो अपने आचार्य से भिन्न भिन्न प्रकार के प्रश्न करते रहते थे। एक समय बेटा! यही प्रश्न मानो बेटा! महर्षि दधीचि मुनि महाराज से सोमकेतु वाणिज्ञ, ने किया था और ये कहा था कि महाराज! हम संधि करना चाहते हैं। संधि क्या है?

मोक्ष

तो उन्होंने कहा दैत्यो और देवताओं का जहाँ संघर्ष चल रहा हो। दोनों का, सम हो जाना इनकी संधि कहलाती है। परन्तु देखो, प्रातः काल की ये जो भव्य अग्नि बन करके आती है और मानव को प्रकाश देती है तो उस प्रकाश में मानव संध्या की गोद में परिणत हो जाता है। यही संधि मुनिवरो! देखो, कहीं, कहीं ब्रह्मा के कमण्डलु में रहती थी, मानो देखो, शिव की जटाओं में रहने वाली थी। मानो देखो, ब्रह्मा के कमण्डलु में यह मानो देखो, स्वर्ग में और यह मोक्ष में रहने वाली संधि कहलाती है। जहाँ आत्मा और परमात्मा दोनों का मिलन होता है। दोनों की संधि होती है तो इसको मोक्ष कहते हैं। वह ब्रह्मा का कमण्डलु बन जाता है और कमण्डलु बन कर उसमें मानो देखो, अमृत भरा रहता है। उसी में सन्ध्या अपने में रत रहने वाली है। यही तरंगे मानो देखो, वह मोक्ष के अव्रेत से आकर के समाज में आ गई, संसार में आ गई। संसार में प्रत्येक मानव कहता है कि मैं संध्या कर रहा हूँ, मैं संध्या में रत रहना चाहता हूँ। मैं सन्ध्योपासना प्रातः काल और सांय काल करना चाहता हूँ यह वही ब्रह्मा के कमण्डलु वाली मानो देखो एक संधि कहलाती है। जिस संध्या को लेकर के मानव देखो, मन और प्राण बना दोनों का समावेश चाहता है। क्योंकि मानवीयता में एक मानो देखो, प्राणस्तव है, एक मनस्तव है दोनों की संधि चाहता है। दोनों के मध्य में जो विभाजनवाद की प्रतिक्रियाएँ बन गई हैं। उस विभाजनवाद को वह शांत करना चाहता है।

सन्धि की प्रतिभा

मेरे पुत्रो! देखो, तुम्हें ये प्रतीत हो गया होगा, ये वही मानो देखो, संधि की प्रतिभा कहलाती है। अग्नि अग्नां ब्रह्मवाचोः हे प्रातः काल की अग्नि! तू प्रकाश को लेकर के आती है। अंधकार को अपने में समाहित कर देती है। जैसे सूर्य उदय होने पर अहिल्या को अपने गर्भ में धारण कर लेता है। मानो जैसे सूर्य उदय होने के पश्चात् चन्द्रमा को मानो देखो, अपने में रत कर देता है। नाना तारा मण्डल इसी में रत हो करके मुनिवरो! देखो, नित्यप्रति अपनी प्रतिक्रियाएँ कर रहे हैं। मानो क्रियाकलाप हो रहा है। विचित्रता में वो क्रियाकलाप एक अपनी महानता में, महानता का द्योतक बनकर के प्रभु की आभा में रत हो रहा है।

इन्द्र द्वारा दिशाओ का निर्माण

तो आओ, मेरे पुत्रो! मैं तुम्हें विशेषता में ले जाना नहीं चाहता हूँ विचार विनिमय में क्या, वही संधि मुनिवरो! देखो, जैसे प्रातः काल की अग्नि बन करके बार–बार अग्नि अमृतेः वह अग्निः बन करके आती है परन्तु दक्षिण दिशा में वही इन्द्र बन करके रहती है। मानो देखो, इन्द्र भी इन्द्रो भवां ब्रवे व्रताः इन्द्र कहते है जो राजाओं का भी अधिराज है। परमपिता परमात्मा का नाम इन्द्र कहलाया जाता है। परन्तु तत्वों में मानो देखो, विद्युत यह जो प्रकाश देने वाली है, इसको भी हमारे यहाँ इन्द्र कहते हैं। इन्द्र नाम वायु का वाची कहलाता है। मानो देखो, जिस भी काल में समुद्रों से जलों का उत्थान होता है और यह अग्नि उष्ण बना करके मुनिवरो! देखो, जल का आरोपण कराती हुई वह मुनिवरो! देखो, वह दक्षिण दिशा से वही मानो देखो, अग्नि के परमाणु उत्तरायण को प्राप्त हो जाते हैं। दक्षिणायान से जब गति करते हैं तो उत्तरायण में समावेश होकर के वही सोम के रूप को धारण कर लेते हैं। मानो देखो, सोम बन करके वृष्टियाँ हो रही है।

तो विचार क्या मुनिवरो! देखो, वही ब्रह्मा चक्रे व्रणास्ते। मुनिवरो! देखो, वह जो मानो देखो, इन्द्र बन करके एक आभा में मानव को प्रवेश करा रहा है। मुनिवरो! देखो, वह अग्नि में प्रतिभाषित, वह दिशाओं का द्योतक बना हुआ, दिशाओं, का निर्माण भी इन्द्र के द्वारा होता है। मानो देखो, वही इन्द्रोः सोमां ब्रह्मे मेरे पुत्रो! देखो, वही वरुण बन करके मुनिवरो! वही परमाणु इन्द्र के रुप में विद्युत की आभा में और देखो, वायु की वृतियों में मेरे पुत्रो! रमण करती हुई वही वनों में प्रवेश कर जाती है। जितना भी जीवन की धाराओं का स्रोत कहलाता है। वो मुनिवरो! देखो, उत्तरायण ब्रहे वह मुनिवरो! देखो, वरुण कहलाता है। हे! वरुण! तू आ, हमें वृष्टि कर, हमारे अन्नाद को मानो गृह में भरण कर।

निर्माण की शक्ति

मेरे पुत्रो! देखो, कृषक इस वरुण की उपासना करता है। कृषि कर रहा है, यजन कर रहा है। हे वरुण! तू आ, तू हमें वृष्टि कर। मानो देखो, ये पृथ्वी जब वरुण की पिपासी रहती है। जब ये मानो ग्रीष्म ऋतु में तपा करती है और तपती हुई मानो देखो, तपायमान हो करके ये याचना करती है और यह अपने में तपोमयी सोम देखो, वरुण के लिए तपा करती है। वरुण मेरे पुत्रो! देखो, वही जीवन शक्ति के रुप में, अपने को परिवर्तित करता हुआ, समुद्रों से मिलान करता हुआ, मेधा की वृष्टि मेघो का उत्पन्न होना और मुनिवरो! देखो, मेघां ब्रह्म वाचाः देवाः मेघ बनकर के मुनिवरों! देखो, इन्द्र उनके ऊपर प्रहार करता है। वह जब मानो देखो, प्रहार करता है। इन्द्र वायु तो मेघों का छिन्न भिन्न हो जाना, मेघो में जो वृष्टि समुद्रो से आई है वही मुनिवरो! देखो, धीमी–धीमी वृष्टि के रुप में परिणत हो जाना, वह धीमी वृष्टि बनकर के वही वरुण बनकर के, वह अन्न का द्योतक कहलाता है। वनस्पतियों में जीवन आ जाता है और अन्नाद की उत्पत्ति हो जाती है पृथ्वी के गर्भ में मानो देखो, वह जो अग्नि का भण्डार है। जो अग्नि मानो देखो, पृथ्वी को अभी तपा रही थी, उसमें शांति आ जाती है। वह अपने में सोम बन जाती है। वह अपने में सोम बन करके पृथ्वी को मानो देखो, निर्माण की शक्ति प्रदान कर देते हैं।

मेरे प्यारे! देखो, अप्रतां ब्रह्मवाचोः वही तो मुनिवरो! देखो, अग्नि की धाराओं में रत रहने वाला एक नृत कहलाता है। विचार विनिमय क्या मुनिवरो! देखो, वह जो सोम है वही मुनिवरो! देखो, अन्न का भण्डार, अन्न की प्रतिभाषितता में मानो पश्चिमानं व्रते प्राणाः वायु वेग में गति कर रहा है। वरुण को लेकर के गति कर रहा है। मेरे पुत्रो! देखो, वह आगे चल करके सोम बन जाता है। मुनिवरो! देखो, वही वरुण सोम के रुप में मानो परिवर्तित होता हुआ, सोम बनकर के ज्ञानियों का ज्ञान है, और वैज्ञानिकों का विज्ञान है और ध्यानावस्थित होने वालों का ध्यान है देखो, संध्या में वो अप्रताम् मेरे प्यारे! सोम बन करके रहता हैं।

मोक्ष की प्रतिभा का स्रोत

हमारे यहाँ सोम की विवेचना करते हुए जहाँ वेदों से सोम की वृष्टि होती है। जहाँ मानो देखो, ये पृथ्वी अपने में सोम को धारण करती है। वहीं मुनिवरो! देखो, वह सोम बनकर के बाह्य जगत् में सोम मेरे पुत्रो! देखो, ज्ञान को कहते हैं आध्यात्मिकवाद में जब प्रवेश करते हैं तो सोम ही ज्ञान बनकर के रहता है। सोम ही मेरे प्यारे! देखो, अद्भुत मोक्ष की प्रतिभा का एक स्रोत बनकर के रहता है। वही सोम मेरे प्यारे! ज्ञान का, विज्ञान का पुंज कहलाता है। वही सोम मुनिवरो! देखो, मानव में सौम्यता आ जाती है, पवित्रता आ जाती है क्योंकि वह प्रभु सोम कहलाता है। वह प्रभु मानो देखो, सोम की प्रतिभा में रत रहने वाला है। वही सोम अमृतमयी धाराओं को रमण करता हुआ मेरे प्यारे! देखो, सोम को जब ऋषि मुनि अपने में धारण करते हैं, मानो सोम को मेरे पुत्रो! देखो, मूलाधार से लेकर के वे नाभिचक्र में ये जो इंगला, पिंगला, सुषुम्णा तीन प्रकार की नाड़ियाँ कहलाती है। मेरे पुत्रो! देखो, मूलाधार से इन नाड़ियों का चलन होता है। इन्हीं में प्राण अपनी प्रतिभाषितता में गति कराता रहता है। मानो देखो, उसी में उदान अपने में रत होकर के चित्त के मण्डल को लेकर के, आत्मा की प्रतिभा को लेकर के मूलाधार से वो गति करता है। गति करता हुआ वही देखो, नाभिचक्र में नाभिचक्र को हमारे यहाँ देखो, अयोध्याचक्र भी कहते हैं।

अयोध्यापुरी

मेरे पुत्रो! देखो, इस शरीर को, अयोध्या के रुप में भी परिणत किया गया है। अष्टचक्रा नवद्वारा एक अयोध्या को ये जिसमें रमं ब्रह्मवाचोः जिसमें मानो एक आत्मा वास करता है और वह मोक्ष के लिए मानो देखो, इस पुरी में आया है तो मुनिवरो! देखो, वह अयोध्यापुरी है जो किसी से विजय नहीं हो पाती। मानो देखो, विजय करने वाला, विजय करता है। वह मानो देखो, दशावृत्तिका कहलाता है। उसको दशरथ कहते हैं। क्योंकि दशरथ वह कहलाता है जो देखो, इंद्रियों को विजय करने वाला हो।

त्रिवेणी में स्नान

तो मानो देखो, इसी प्रकार इस आत्मा का नाम दशरथ कहा जाता है। जब ये मानो देखो, मूलाधार में जहाँ नाना प्रकार की अव्रेत गतियाँ होती रहती है ये नाभि चक्र में जहाँ पवन अपना प्रवाह करती रहती है जहाँ वायु वेग में गति कर रहा है। वह जो उदान प्राण है वह ही देखो, चित के मण्डल को, आत्मा को लेकर के रमण कर रहा है। वह ही मानो देखो, हृदय चक्र में, जहाँ हृदय में समता आ जाती है। जहाँ सौम्यता का दिग्दर्शन होता है। जहाँ नाना ब्रह्माण्ड, ये खिलवाड़ की भाँति मानो सौर मण्डलों के रूप में देखो, एक खिलवाडता में दृष्टिपात आने लगता है। मानो देखो, वही चित्त का मण्डल आत्म

ब्रह्मेः वाचोः मेरे प्यारे! वो कण्ठ चक्र में जाता है। कण्ठ चक्र में जहाँ नाना प्रकार के जो रस प्रकृति में गतियां कर रहे हैं अथवा बह रहे है उनको अपने में धारण करता है। उनका स्वादन करता है और स्वादन करता हुआ मुनिवरो! देखो, योग की, प्रतिभा में प्रतिभाषित हो जाता है। वही चक्रो ब्रह्माः वही उदान प्राणों का समूह मेरे पुत्रो! देखो, वही सूत्र बन करके जब वह चक्र में गति करता है तो वह देखो, त्रिवेणी में स्नान करता है।

त्रिवेणी उसे कहते हैं जहाँ इंगला, पिंगला सुषुम्णा तीनों प्रकार की नाडियों का मिलान होता है। मानो देखो, जहाँ गंगा, यमुना और सरस्वती का मिलान होता हो मेरे प्यारे! गंगा कहते हैं, पवित्रता को, सरस्वती कहते हैं उसमें रत रहने को, मेरे पुत्रो! देखो सरस्वती अमृतां ज्ञानापि अस्तो, वेद का वाक् कहता है कि वह जो सरस्वती है वही तो ज्ञान है, वही तो वीणा को लेकर के अपनी ध्वनियाँ कर रही है। वही तो मानो वीणा को लेकर के, वीणा के सहित सरस्वती बनकर मुनिवरो! देखो, नाना प्रकार के व्यंजनों को जन्म देकर के नाना प्रकार के सुरों को जन्म देती है।

शब्दों की उत्पत्ति का स्रोत

जैसे मैंने पुरातन काल में कहा था पुत्रो! कि नाना प्रकार के स्वरों की ध्वनियाँ वह ध्वनित होती रहती हैं तो घ्राण चक्र में एक ध्वनि आने लगती है। जब ये मानो त्रिवेणी में स्नान करके जहाँ तीनों नाड़ियों का मिलान होता है। जहाँ तीनों नदियों का मिलान होता हो, वहाँ मुनिवरो! देखो, जब ये चित्त का मण्डल, आत्मा और उदान प्राण उसमें स्नान करते हैं। तो वहाँ मुनिवरो! देखो, प्रत्येक ये जो भस्तिकां ब्रह्मवाचाः इसमें ध्वनियाँ उत्पन्न होने लगती है। मेरे पुत्रो! देखो, इसी ध्वनि को ले करके व्याकरण की उत्पत्ति होती है। शब्दों की प्रतिभाषितता होने लगती है। वही तो शब्दों का एक पुंज कहलाता है। शब्दों का एक भण्डार कहलाता है। जिसको जानकर, योगेश्वर देखो, व्याकरण की प्रतिभा को जानता है। यही प्रतिक्रिया देखो, भगवान शिव में आई थी। जब महाराजा शिव ने पार्वती को लेकर के मुनिवरो! देखो, किसी काल में नृत्य किया था और नृत्य करके उन्हें एक ध्वनि हुई थी और उस ध्वनि का नाम मेरे प्यारे! देखो, नृत के रूप में, उसका परिवर्तित हुआ था। वह डमरु के रुप में, उस ध्वनि का परिवर्तित हुआ उसी डमरू के मुनिवरो! देखो, चौदह सूत्रों का, चौदह अवतारों को लेकर के मुनिवरो! देखो, व्याकरण के शब्दों की उत्पत्ति हुई। वही उत्पत्ति का स्रोत बना।

सोम

तो इसी प्रकार आज मैं बेटा! गम्भीर और यौगिक क्षेत्रों में ले जाने के लिए नहीं आया हूँ। केवल विचार विनिमय यह कि मुनिवरो! देखो, वही योगेश्वर जब त्रिवेणी का स्नान करके जब स्वाधिष्ठान चक्रों में जाता है तो वहाँ मेरे पुत्रो! देखो, ये रसों का पान करता है। उस सोम रस का पान करता हैं जहाँ ब्रह्मरन्ध्र से उसका समन्वय हो करके ये ब्रह्माण्ड का सर्वत्र बेटा! ब्रह्मरन्ध्र के रूप में मानो नृत्य करने लगता है। और जब वह नृतिका होने लगती है।

तो यह मेरे पुत्रो! देखो, योगेश्वर रसना के अग्रभाग से जिन रसों का पान करने लगता है। जो मुनिवरो! देखो, अब तक यह मानो छिद्र यही मुनिवरो! देखो, छिद्र ब्रहे यह नाना बाह्य स्वाद में, बाह्य रसों में रसित हो रहे थे। मानो देखो, जहाँ मधु है। मानो कटु इन रसों में रसित हो रहे थे। परन्तु देखो, वह अपने अन्तराकृतियों में परिणत हो करके वही रसना के अग्रभाग को मेरे पुत्रो! देखो, कागावचिम् को और ब्रह्मरन्ध्र में, अवृत्तियों में रमण कराके पिपाद में प्रवेश करके बेटा! वह मानो देखो, उन्हीं छिद्रो से सोम का पान कर रहा है। वाह रे! मेरे प्रभु तू कैसा सोम है, कैसा प्रकाश है, जो योगीजन तेरा पान करके मानो सौम्य बन जाते है मेरे पुत्रो! देखो, सोम की प्रतिभा में रत रहकर के वो अग्ने प्रकाश की सौम्यता में परिणत हो जाता है। मेरे पुत्रो! देखो, सोम का पान करना हमारे लिए बहुत अनिवार्य है। बाह्य जगत् में भी सोम का वर्णन आता है। आन्तरिक जगत् में भी सोम का वर्णन आता है। मेरे पुत्रो! आध्यात्मिक प्रकाश को पान करना भी सोम है। और जगत् को, विवेक से दृष्टिपात् करने का नाम भी सोम है और शरीर को पौष्टिक बनाने का नामोकरण भी सोम है क्योंकि घृतोमयी श्रद्धाः श्रद्धामयी दृष्टा ऐसा भी कहते हैं। यागां ब्रह्मे प्रत्येक इन्द्रियों से सुकर्म कर्म करना है और उसके परिणाम का नाम सोम कहलाता है। मानो देखो, ऋषिजन नाना प्रकार की औषधियों का पान करके सोम को पान करते थे।

सोम पान

जैसा मैंने पुरातन काल में वर्णन कराते हुए कहा था महात्मा रवि जी के यहाँ सोम का पान होता था। प्रातः कालीन नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करके सोम का पान करते थे। वह सोम का पान क्या है? तेलखण्डाः मृचिका अन्वेषण, सुदृव्रता वंचकेतु वंचोवृत्तिका इन सब औषधियों को मेरे प्यारे! रात्रि में, जल में वेग करते हुए प्रातः कालीन खरले करके उनको पान किया जाता था तो वह सोम कहलाता है। जो बुद्धि को वज्र बनाने वाला, मन को शांति देने वाला, प्राण को अपनी आभा में परिणत कराने वाला सोम कहलाता है।

तो मेरे पुत्रो! आज मैं तुम्हें विशेष विवेचना न देता हुआ केवल यह उच्चारण कर रहा हूँ कि मुनिवरो! देखो, सोम का पान करना। जब यह आत्मा मेरे प्यारे! चित्त के मण्डल को लेकर के और उदान प्राण के साथ में जब ब्रह्मरन्ध्र की पंखुड़ियाँ में गति करत है तो सोम मानो देखो झरने लगता है। उसे बेटा! योगी जन पान करते हैं। उसे प्राणेस्वरुप पान करते हैं जो प्राण को पान करने वाले है। मेरे पुत्रो! देखो, मैं आज तुम्हें योग के क्षेत्र में ले जाना नहीं चाहता हूँ, केवल परिचय देने आया हूँ और वह परिचय दे रहा हूँ कि सोम का पान करना हमारा कर्तव्य है।

तो मेरे पुत्रो! देखो, सोमं भवाः देवाः वह परमपिता परमात्मा सोम के रुप में विद्यमान है। मानो जिसको योगीजन पान करते हैं। वही मानो देखो, परमपिता परमात्मा विष्णु के रुप में परिणत रहते है। वह जो विष्णु है, जो हमारा कल्याण कारक है, जो हमारा पालन करने वाला है। वो मानो पालक कहलाता है। मेरे प्यारे! हे विष्णु! तू मानो संसार को रचाता है। रचाने के पश्चात् इसका पालन करता है। जैसे माता अपने पुत्र की मानो देखो, गर्भ में प्रति अवरुत होती है और वह बाह्य जगत में आकर उसका पालन भी करती है, उसका पालन कर रही है। हे! विष्णु! तू मानो देखो, कहीं यज्ञोमयी विष्णु बन करके रहता है। कहीं राजा, राष्ट्रीयता में ही विष्णु बन करके रहता है। कहीं तू सूर्य के रुप में विष्णु बन करके रहता है। कहीं मानो देखो, तू अव्रेत मानो देखो, समुद्रों के रुप में विष्णु बनकर के रहता है। विष्णु परम पिता परमात्मा चेतना के रुप में एक विष्णु बनकर के रहता है। तू विष्णुश्चम् कहलाता हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, विष्णु! तू कल्याण कारक है। तू कल्याण करने वाला है। मानो देखो, तू हमारा पालन कर रहा है। मेरे पुत्रो! देखो, वह विष्णु है जो ऊर्ध्वा में बृहस्पति बनकर के मुनिवरो! देखो सर्वत्रता में रत रहने वाला है वह बृहस्पति कहलाता हैं वो कैसा बृहस्पति है? कल्याण कारक है। हमें ज्ञान देता है। चरणों में विद्यमान होकर, मेरे पुत्रो! देखो, अपनी आभा में प्रवेश करता है। अपनी आभा में आभायित होता हुआ ब्रह्मचारी को अपनी वृत्तियों को प्रदान करता रहता है।

परमात्मा की विद्यमानता

तो मेरे प्यारे! देखो, वह परमपिता परमपिता विष्णु बनकर के हमारा प्रायः कल्याण कर रहा है। आभा में प्रगट करा रहा है। तो विचार विनिमय क्या मुनिवरो! देखो, वह परमपिता परमात्मा सर्वत्रता में विद्यमान है। कहीं मेरे पुत्रो! अग्नि बन करके रहते हैं कहीं इन्द्र बनकर के रहते हैं। कही मानो वरुण बन करके रहते हैं, कहीं मुनिवरो! सोम बन करके रहते हैं। वही मेरे पुत्रो! देखो, कहीं विष्णु और बृहस्पति बन करके रहते है। कोई स्थली ऐसी नहीं है जहाँ मानव तू पाप कर्म करने के लिए तत्पर हो जाए। जहाँ जाता है, जहाँ मन जाता है वहीं परमपिता परमात्मा विद्यमान है। परन्तु देखो, ये कैसा प्रिय अनुपम

जगत् है मुनिवरो! देखो, उनके पश्चात् भी मानव अपने विवेक में न होने के कारण मानो देखो, धृष्टता करता ही रहता है। परमात्मा को मानो दूरी करने से मानव नाना प्रकार के पापाचार कर्मो में तत्पर रहता है।

मोक्ष रूपी कमण्डलु

इसीलिए हे! भगवन् हे मनु लभब्रहे हे मातेश्वरी! तू मानो संध्या बनकर के हमारा कल्याण कर। यही मानो देखो, संध्या मोक्ष के रुप में मानो ब्रह्मा के कमण्डलु में रहने वाली है। ब्रह्मा के कमण्डलु मे प्रवेश करने वाली यही औषध बन करके और जन–जन के हृदयों में समाहित हो रही है। प्रत्येक वाक् में यह संधि करना चाहता है। मानो बेटा! जब ये समाज के द्वार पर आता है तो समाज से संधि चाहता है। जब मुनिवरो! ये एकन्त स्थली पर विद्यमान होता है तो कहता है हे मन! तू बड़ा चंचल है। तेरी संधिकर, तेरी सन्धि किस काल में होगी? तो शांत हो करके ये प्राण से अपनी संधि चाहता है। प्राण और अपना दोनों का समावेश करना चाहता है। समावेश करके मुनिवरों! देखो, वह एकोकी आत्मा में प्रवेश करके, मोक्ष के द्वार पर जाना चाहता है। मेरे पुत्रो! देखो, यह संधि, जहाँ से आई है वहीं के लिए पुकार रही है। आओ, तुम देखो, उसके कमण्डलु में प्रवेश हो जाओ। ये जो ब्रह्माण्डं मोक्षामि ब्रह्म वाचः ये जो मानो मोक्ष रूपी कमण्डलु है इसमें तुम प्रवेश हो जाओ। इसी में तुम रत हो जाओ। ये ब्रह्मा का मानो कमण्डलु कहलाता है। इसके ऊपर मानव परम्परागतों से बेटा! अपनी कृतिकाओं को रमण कराता रहता है। तो ऊर्ध्वा में संध्या होते ही संधि होते ही ऊर्ध्वा में शयन हो जाता है।

प्रभु की आराधना

मेरे प्यारे! देखो, एक मानव का मानव से विवाद हो रहा है। जब वह विवाद से संधि काल में मधुरता में आता है तो बेटा! वो ऊर्ध्वा में गति करना चाहता है। तो वो कहता, आओ, हम मानो देखो, संधि में होकर के ऊर्ध्वा में कर्म करने के लिए तत्पर हो जाए। जब बेटा! देखो, रात्रि और दिवस दोनों का संधि काल आता है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह न रात्रि के रूप में, न वह अंधकार के रुप में, न प्रकाश के रुप में। वह अपनी संधि को जान करके वह या तो प्रकाश में जाना चाहता है या अंधकार में जाना चाहता है। परन्तु प्रातः काल की संधि प्रकाश को लेकर के आती है और सांयकाल की संधि, देखो, अंधकार, रात्रि को लेकर के आती है। उसमें देखो, रात्रि का अधिपति सोम कहलाता है और मुनिवरो! देखो वह दिवस का प्रातःकाल की संधि का स्वामी आदित्य कहलाता है। वो प्रकाश में उसका ज्ञानं ब्रह्मवाचो मेरे पुत्रो! देखो, उस रात्रि में जब सांयकाल की संध्या का अग्र होता है तो उस काल में योगी अपने को जागरूक करना चाहता है और जिस समय देखो, संध्या का काल होता है। उस समय मानो देखो, संसार जागरूक हो जाता है। निद्रा, आलस्य को त्याग करके वह आदित्य के प्रकाश में क्रियाकलाप करने लगता है। और देखो, योगीजन उसको रात्रि स्वीकार करता है। और मुनिवरो! देखो, सांयकाल की संध्या को वो अपने में दिवस स्वीकार करके वो प्रभु की आराधना करता है।

तो मेरे पुत्रो! देखो, ऐसा विचित्र संधिकाल है जिसके ऊपर मैंने बहुत पुरातन काल हुआ, बेटा! अपने में चिंतन करने का प्रयास किया। आज का वाक् हमारा यह कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन करते हुए! प्रातः काल की अग्नि तू प्रकाश को लेकर मानव को प्रकाश में ले जाना चाहती है। यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा, मैं शेष चर्चाएँ काल प्रकट करूँगा। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन–पाठन होगा।

आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, संसार सागर से पार हो जाए। हमारे वाक्यों का अंतिम चरण यही है। कि हम प्रभु की उपासना करते हुए, प्रभु को एक–एक कण–कण में स्वीकार करते हुए, पापाचार से दूरी होकर के प्रभु के द्वार पर चले जाएँ, अपने प्रभु से संधि कर ले। जहाँ से हमारा विच्छेद हुआ है, वहीं से अपनी संधि करके प्रभु में रत हो जाएँ। ये आज के वाक् उच्चारण करने का वाक् मुनिवरो! देखो, व्रताः है। अब समय मिलेगा तो शेष चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे। अब वेदों का पठन–पाठन।

ओ३म् वाचनः देवं रथाः वायुः गतां
मनुः वैश्णः गा ताः मां धेनु रथाः।
ओ३म् ब्रह्माश्चाहं चः वाचन् गताः देवं सर्वां।
ओ३म् भद्राः मा रथा वाचन्नमः।

7.5.1984
डी.ए.वी., ककर खेड़ा मेरठ

प्रभु का यज्ञोमयी स्वरूप

जीते रहो,

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मंत्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मंत्रों का पठन–पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना ममत्व को धारण करने वाले, अनुपम प्रभु की महिमा का वर्णन किया जाता है अथवा उसके यज्ञोमयी स्वरुप का वर्णन आता रहता है। हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में परमपिता परमात्मा की भिन्न–भिन्न प्रकार की विवेचनाएँ होती रहती है। मानो विवेचनाकारों ने, उस परमपिता परमात्मा को यज्ञोमयी स्वरुप माना है। क्योंकि परमपिता परमात्मा का यज्ञ ही आयतन माना गया है। मानो वो उसका गृह है। और अनुसंधान करने वालो को भी कुछ ऐसा ही प्रतीत हुआ है कि मानो ये ब्रह्माण्डरूपी जो यज्ञशाला है यह उस ब्रह्म का आयतन है। उस परमपिता परमात्मा की प्रतिभा कहलाती है। जिसके ऊपर मानव अपने में अनुसंधान करने लगता है।

यज्ञोमयी विष्णु

आज का हमारा वेद मंत्र कह रहा था यज्ञोमयी विष्णुः मानो यज्ञ ही विष्णु है। और विष्णु कहते हैं पालन करने वाले को। जो पालन करने वाला है वो यज्ञोमयी विष्णु कहलाता है। जिसके ऊपर हम अपने में अन्वेषण करते रहते हैं। हमारे वैदिक साहित्य में विष्णुमयी यागों का वर्णन होता रहता है। और उस परमपिता परमात्मा को विष्णु के रुप में परिणत किया गया है। तो आओ मेरे पुत्रो! आज मैं विचार विनिमय क्या देना चाहता हूँ। हमारे यहाँ यज्ञो के बड़े ऊँचे–ऊँचे प्रकरण अथवा उनकी प्रतिभा का प्रायः वर्णन होता रहता है। हमने तुम्हें बहुत पुरातन काल में मानो वर्णन करते हुए कहा था कि यज्ञोमयी प्रतिभाषित रहता है जितना भी संसार का सुकर्म है। आत्मीय में कर्म है वो सर्वत्रता का नाम एक यज्ञ के रूप में परिणत किया गया है।

वैदिक साहित्य यही तो कहता है। वेद मंत्र यही कहता है कि यज्ञं भविते देवाः अभ्यां रुद्रो अवर्णं ब्रह्म वाचोः वृत्तिकृत्ता। मेरे प्यारे! वो परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप है। ये जो ब्रह्माण्ड है ये एक प्रकार की यज्ञवेदी के रूप में इसको हम प्रायः स्वीकार करते रहते हैं और अन्वेषण करते रहते हैं।

विज्ञान के तत्वावधान में विद्यमान होकर के, कि वास्तव में यह ब्रह्माण्ड एक प्रकार की यज्ञवेदी है। परमपिता परमात्मा ब्रह्मा बन करके मानो उद्‌गीत गा रहा है। उद्‌गीत गाता हुआ, उद्‌गं गृत्तिया स्वाहा वह उद्‌गीत गाता हुआ स्वाहा कह रहा है। स्वाहा गृणं ब्रह्म वाचो मेरे पुत्रो! जब हम परब्रह्म परमात्मा की प्रतिभा में रत होने लगते हैं। तो प्रायः हमें ऐसा दृष्टिपात होता है कि वे परमपिता परमात्मा हमारे समीप विद्यमान है। उसी की प्रतिभा से ये संसार और हम सब प्राणी प्रतिभाषित हो रहें हैं। तो हम उस परमपिता परमात्मा को यज्ञोमयी स्वरुप इसीलिए ही तो स्वीकार करते हैं कि वह परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरुप माना गया है। जिसके ऊपर मानव अपने में अपनेपन की प्रतिभा में रत होकर के अपने जीवन को महान बनाता है।

कर्तव्यवाद की प्रतिभा

आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, केवल यह विचार दे रहा हूँ कि हमें याग करना है और याज्ञिक बनकर के बेटा! द्यौलोक में प्रवेश करना है। क्योंकि द्यौलोक में जाना ही हमारा एक कर्तव्यवाद की प्रतिभा कहलाती है जिसके ऊपर, हम परम्परागतों से अपना अन्वेषण, अपने में विचार विनिमय करते रहते हैं जिसके ऊपर हमारा जीवन निर्धारित रहता है। मानो देखो, यज्ञशाला ये मानव शरीर है। इसका हमें शोधन करना है। इसको हमें अच्छी प्रकार रक्षा में लाना है जिस यज्ञशाला में आत्मा विद्यमान होकर के याग कर रहा है। और चित्त के मण्डल में ये ऊँची–ऊँची मानो देखो, अपने संकल्पों को धारण करा रहा है। जिसके ऊपर हमारा मानवीय जीवन निर्धारित रहता है।

प्रभु का याग

आओ मेरे पुत्रो! आज का हमारा विचार ये क्या कह रहा है कि हम अपने प्रभु के उस महान याग की चर्चा करें जो मानो देखो, तारा मण्डलों से आ रहा है। जो सूर्य मण्डल से आ रहा है। जो चन्द्रमा से आ रहा है। नाना प्रकार के एक दूसरा मण्डल एक दूसरे में ओत प्रोत हो करके बेटा! वो याग कर रहा है। याग में परिणत हो रहा है। ममत्वं ब्रह्म वाचोः माता याग कर रही है। तो बेटा! इसीलिए प्रत्येक परमाणु अणु त्रिसरेणु मानो देखो, सर्वत्रता में यागां भविते देवाः प्राण शक्ति को देने वाला ऊर्ज्वा को प्राप्त कराने वाला, सूर्य की किरणों में रत रहने वाला ये पवित्र याग कहलाता है।

तो आज मैं मुनिवरों! विशेष विवेचना न देता हुआ, आज मैं अपने मानो देखो, मेरे पुत्र महानन्द जी की सदैव ये आकांक्षा रहती है कि मैं भी दो शब्द उच्चारण करूँ। उनकी यह पिपासा रहती है। अब मेरे प्यारे महानन्द जी केवल दो शब्द उच्चारण करेंगे। जो मानो देखो, इनके विचारों में एक उद्‌गारता होती है। मानो इनके हृदय में दहा है। एक विडम्बना रहती है। अब वे विडम्बनामयी कुछ शब्दों का उच्चारण करने वाले हैं।

पूज्य महानन्द जी का प्रवचन

ओ३म् मम ब्रह्माः रेवौ सर्वाणि गतौः यशश्चां रथा यं तना तनोषं भवायाः।

मेरे पुज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे। अथवा गागर में सागर की आभा में रमण करा रहे थे। प्रायः हमें ऐसा प्रतीत हो रहा था। जैसे हम यज्ञशाला में विद्यमान हो करके ब्रह्मपुरी में विद्यमान हैं क्योंकि ब्रह्मपुरी, यह संसार आभा में रमण कर रहा है। परन्तु जहाँ हमारी ये आकाशवाणी जा रही है। वहाँ मेरे मानं बृह्नि व्रतां मैं सामगान की आभा में एक याग का दिग्दर्शन कर रहा था। मेरा हृदय बड़ा प्रसन्न हो रहा था और मेरे हृदय की जो संवेदना रहती है वो यज्ञमान के सहित रहती है। मानो मेरा हृदय परम्परागतों से यह कहता रहा है कि हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। क्योंकि जिस यज्ञमान के द्रव्य का सदुपयोग हो करके, देवताओं की हवि बनकर के, वह अन्तरिक्ष में मानो भेदन कर रही है, परमाणुओं का भेदन हो रहा है। इस मानो देखो, विचित्र युग में, जिस युग में मानव, मानव अपने में स्वार्थ परता के आँगन में विद्यमान हो रहा है। मानव–मानव के भक्षण करने के लिए तत्पर हो रहा है। ऐसे भव्यकाल में, मैं यज्ञमान को यही कहता रहता हूँ, हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहें।

क्योंकि जहाँ द्रव्यों का सदुपयोग होता है। जहाँ द्रव्यों की महती का वर्णन आता रहता है। इसीलिए द्रव्यां भविते देवाः मानो देखो, यह द्रव्य महान बनना चाहिए और द्रव्य तभी महान बनता है जब तू इससे देवताओं की हवि प्रदान करेगा। अग्नि में स्वाहा कह करके वायुमण्डल में प्रवेश कर देगा। मानो हे यज्ञमान! इसीलिए मेरी जो भावना है। मेरी जो अन्तर्मयी विचारधारा है वो यज्ञमान के साथ रहती है। परन्तु आधुनिक काल के क्षेत्र में, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को कुछ दो शब्दों में अपने वाक्यों को समाप्त करने वाला हूँ मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी–अभी दो शब्दों की विवेचना के लिए कहा है।

आधुनिक वैज्ञानिकों का कथन

मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को इस संसार के सम्बन्ध में, आधुनिक काल के सम्बन्ध में, मैं कुछ परिचय दिलाना चाहता हूँ अथवा कुछ परिचय देना चाहता हूँ और वह परिचय क्या है कि ये जो आधुनिक जगत् है, ये बड़ा विचित्र मुझे दृष्टिपात आ रहा है। जब मैं यहाँ के राष्ट्रवाद अथवा मानव समाज पर अपनी दृष्टिपात करने लगता हूँ तो प्रायः ऐसा मुझे दृष्टिपात आने लगता है कि ये समाज कहाँ चला गया है। मानो जिस समय राजा का निर्वाचन अथवा राष्ट्र का निर्माण हुआ तो उस समय सबसे प्रथम ये कहा गया कि राजा के राष्ट्र में रुढ़ियों नहीं रहनी चाहिए। मानो रूढ़ियों का अभाव रहना चाहिए परन्तु जब मैं यह विचारता हूँ कि रूढ़ि बलवती हो रही है और रूढ़ि रूढ़ि में परिणत होकर के रक्त का पिपासी बन रहा है। वह मानो देखो, धर्मं ब्रह्वे ब्रहाः धर्म के नामों पर अपने स्वार्थ की मानो पूर्ति कर रहा है। जब मैं इन वाक्यों पर विचार विनिमय करता हूँ तो अपने पूज्यपाद गुरुदेव को भी मैं यह वाक्, परिचय कराता रहा हूँ। कि आधुनिक काल का वैज्ञानिक मानो यह कहता है कि मानव में दोषारोपण हो गया है। आधुनिक काल का विज्ञान कहता है कि मानव, मानो एक क्षण समय में भस्म हो जाएगा। परन्तु देखो, मैं यह कहता हूँ हे भोले प्राणियों! हे वैज्ञानिकों! मानो देखो, प्राणीमात्र यदि नष्ट हो जाए नष्टं ब्रह्मा, परमात्मा की सृष्टि तो अपनी अवधि पर ही समाप्त होती है। अपनी अवधि पर मानो इसके प्राणसूत्र का विच्छेद हो जाता है और उससे परले काल का एक रूपम बन जाता है।

आधुनिक वैज्ञानिक प्रवृत्ति

परन्तु देखो, आधुनिक काल के विज्ञान की यह प्रतिभा रही है। विज्ञान का यह सिद्वांत रहा है कि ये मानव मानव की एक दूसरे में प्रतिद्वन्द्वता करा देता है। क्योंकि एक मानव विज्ञान के यंत्र को लेकर के ऐश्वर्य में परिणत हो रहा है। एक मानव को यंत्र की उपलब्धि नहीं होती तो देखो, एक दूसरे में विरोधाभास हो गया है। वह जो विरोधभास है वह राष्ट्र की राष्ट्रीय प्रणाली को, मानवीयता में नष्ट करना चाहता है। वह अपने विचारों में एक कान्ति लाना चाहता है। इसीलिए जब मैं यह विचारता हूँ कि इस क्रांति के मूल में क्या है? तो वेदं ब्रह्माः हमारे समीप एक ही वाक् आता है कि इसमें शोषण की जो प्रवृत्ति है। मानव मानव में जो शोषण प्रवृत्ति आ गई है वह शोषण प्रवृत्ति उसके में मूल में दृष्टिपात आती है।

जब मानो देखो, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह कहता रहता हूँ कि आधुनिक काल का विज्ञान, वैज्ञानिक जब समुद्र के तट पर विद्यमान होते हैं। तो मानो देखो, नाना प्रकार की विचारधारा देने लगते हैं। मैं यह कहता रहता हूँ हे भोले वैज्ञानिकों! इस समुद्र के तट पर तो देखो, महाराज हनुमान और गणेश जी भी विद्यमान होते थे और विद्यमान हो करके अपना अन्वेषण करके अपने विचार मानो, देखो वायु की तरंगों में, समुद्र की प्रतिभा में ओत–प्रोत करा

करके उसके यंत्रों की उड़ाने उड़ते रहते थे। इसी प्रकार आधुनिक काल का वैज्ञानिक भी इस प्रकार की उड़ान उड़ रहा है। परन्तु इस उड़ान का चलन भिन्न हो रहा है इसीलिए मैं यह कहता रहता हूँ। अभी कुछ समय हुआ पूज्यपाद गुरुदेव को तो यह प्रतीत नहीं होता।

पुरातन यन्त्र का प्रभाव

आधुनिक काल के वैज्ञानिकों का समुद्र के तट पर एक समूह विद्यमान था और एक अब होने वाला है, कुछ ही काल में। परन्तु देखो, मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन कराया था कि मानो देखो, त्रेता के काल में एक यंत्र का निर्माण हुआ था मानो देखो, महाराजा बब्रीत और महाराजा घटोत्कच्छ के द्वारा वह यंत्र मानो आधुनिक जगत में भी, अभी वर्तमान काल में भी विद्यमान है। वह मानो देखो, बुद्ध और मंगल की जहाँ आकर्षण शक्ति का एक रुपण हो रहा है वहाँ वह यंत्र विद्यमान है। परन्तु ये यंत्र देखो, महाराजा बब्रीत ने, जो पाताल पुरी के राजा कहलाते थे। महाराजा बब्रीत, बब्रुभान और देखो, भीम के पुत्र घटोत्कच्छ तीनों ने विद्यमान होकर के यंत्र का निर्माण किया था और मानो देखो, वह जहाँ बुद्ध और मंगल की जहाँ सीमा का व्रेद होता है वहाँ वह यंत्र विद्यमान है। परन्तु पृथ्वी मंडल पर उस यंत्र की छाया आज रही है। यंत्र की छाया आते हुए, वही छाया देखो, आधुनिक काल का जितना भी यंत्रवाद है जो उस छाया के अन्तर्गत आ जाता है वह उसको भस्मीभूत कर जाता है।

मैंने कई काल में यह वर्णन किया। आधुनिक काल के वैज्ञानिकों का यह कथन है कि मानो कोई देखो, प्रेतम्ब्रीह आभा है। ये कोई प्रेत मानो एक देव रहता है। उसको असुर भी कहते है। मानो देखो, उसको किसी काल में राक्षस रूपों से भी उच्चारण करते हैं। परन्तु जहाँ तक अनुमान है कि वहाँ एक देव रहता है। आधुनिक काल का वैज्ञानिक जिन शब्दों का प्रतिपादन कर रहा है। परन्तु जब मैं यह विचारता हूँ की वह यंत्रों की छाया में यंत्र चाहे वायुमण्डल का ही वायुयान हो, चाहे वह देखो, जलयान हो वह कोई भी यान हो उसकी छायामात्र से भस्म हो जाता है। एक अंकुर भी प्राप्त नहीं होता है वैज्ञानिकों को, तो मैं यह कह रहा हूँ।

वायु मण्डल का शोधन

मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को परिचय देना चाहता हूँ कि आधुनिक काल का वैज्ञानिक उसमें लगा हुआ है। वहीं वह यह कहता है कि वायुमण्डल दूषित हो रहा है। मैं इसके ऊपर मानो देखो, अपने विपरतम् ऐसे तत्वों को, अपनी धाराओं को जन्म देना चाहता हूँ जिससे वायुमण्डल का शोधन हो जाए। परन्तु वैज्ञानिक इस आभा में लगा हुआ है। जब मैं यह कहता हूँ हे भोले वैज्ञानिकों! आधुनिक काल के वैज्ञानिको! तुम एक पंक्ति में विद्यमान हो जाओ। अब तुम गौ घृत के द्वारा, नाना साकल्य के द्वारा देखो, चंदन की समिधा लेकर के शमि की समिधा लेकर के चिरीति काल की समिधा लेकर के, चिरी वोणकेतु वृक्ष की समिधा ले करके और गुलवीतिका की मानो देखो, समिधा लेकर के तुम याग करो। जब तुम गौ घृत के द्वारा याग करोगे, जावत्री सुनीति सभेति वाचनकेतु संभो व्राणस्ते मानो देखो, सत्यानाशी इस प्रकार की औषधियों को एकत्रित करके तुम याग करोगे तो उस याग के द्वारा मानो देखो, तुम इस वायुमण्डल को पवित्र बना सकोगे।

देखो, जब विद्यालयों में इस प्रकार के याग होते हैं। जब मैं पुरातनकाल के वैज्ञानिकों में प्रवेश करता हूँ तो वैज्ञानिकों में क्या? महाराजा अश्वपति के यहाँ विज्ञान प्रकाष्ठा पर रहता था। विज्ञान की भिन्न–भिन्न प्रकार की उड़ाने उड़ी जाती थी परन्तु विद्यालयों में, प्रत्येक गृहों में याग होते थे। विद्यालयों में जब ब्रह्मचारी याग करते थे मानो देखो, आत्मीय याग, शुद्ध विचार धारा को जब वायुमण्डल में प्रवेश कराते तो वायुमण्डल मानो देखो, परमाणुवाद का शोधन होता। इसी प्रकार आज विद्यालयों में, जहाँ याग होने थे, ब्रह्मचारियों के जीवन चरित्र को ऊँचा बनाना था। वहाँ मानो देखो, ब्रह्मचारियों को कोई ओर ही दशा प्राप्त हो रही है। वहाँ मानो देखो, रक्त भरी क्रांति के अवशेषों का जन्म हो रहा है। जिन विद्यालय में मानो देखो, राष्ट्र को सांत्वना देने वाले ब्रह्मचारियों का निर्माण करने वाली विद्या प्रदान की जाती थी।

आधुनिक विद्यालय

परन्तु आधुनिक काल का जो विद्यालय है, उस विद्यालय में रक्त भरी क्रान्ति के अवशेषों का जन्म हो रहा है। कैसे हम दूसरे के द्रव्य को मानो देखो, अपना आहार बना करके और अपने ऐश्वर्यों की पूर्ति कर सकते हैं। आधुनिक काल का विद्यार्थी तो यह शिक्षा अध्ययन कर रहा है। परन्तु पुरातन काल का ब्रह्मचारी तो यह अध्ययन कर रहा था कि देखो, हम एक ऐसी आभा को जानना चाहते हैं जिससे हमारा आत्मतत्व ऊँचा बने और जब आत्मतत्व ऊँचा होगा, शरीर महान होगा, मन की प्रवृत्ति ऊँची होगी राष्ट्रवाद होगा तो राष्ट्रवाद पवित्र बनेगा तब देखो, दूषित वायुमण्डल नहीं होगा। इस प्रकार की विचार धाराओं में अन्तर्द्वद्व हो गया है। मैं उस अन्तर्द्वद्व में नहीं जाना चाहता हूँ परन्तु मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह निर्णय कराता रहता हूँ।

विद्यालयों की आभा

पूज्यपाद गुरुदेव का बड़ा अनुभव रहा है। विद्यालयों में जहाँ ये मानो नाना प्रकार की शिक्षा प्रदान करते हैं वहाँ याग भी होते है। प्रातः काल ब्रह्मचारी जन जब विद्यालयों में वेद ध्वनि से ध्वनित होने वाला एक मानो देखो, शब्दनाद होता है वो विद्यालय की आभा को पवित्र बना देता है। वहाँ के क्रियाकलाप को ऊँचा बना देता है। राजा की प्रतिभा को ऊँचा बनाता है। महाराज अश्वपति का जीवन मैंने बहुत पुरातन काल में पूज्यपाद गुरुदेव भी मुझे वर्णन कराते रहते थे।

आज भी मैं उसका वर्णन करा रहा हूँ कि उनका मानो देखो, प्रातः कालीन यज्ञन होता था। प्रातः कालीन याग होना, सुगन्ध देना, देवताओं का आह्वान करना, पाण्डितव आकर वेद की पोथी को लेकर, अपनी आभा में रमण करते रहते। और विद्यालयों में इस प्रकार के पठन–पाठन जब होते रहते हैं, गृहों में होते रहते हैं तो उस राजा के आचरण को श्रवण करने वाला सर्वत्र अपने को ऊँचा बनाना चाहता है। परन्तु आज मैं विचार ये दे रहा हूँ कि आधुनिक काल के वैज्ञानिक और राष्ट्र की जब मैं तुलना करने लगता हूँ तो मुझे बड़ा आश्चर्य आता है। पुरातन काल का वैज्ञानिक महाराजा घटोत्कच्छ देखो, नित्य प्रति याग करते रहते थे। जब नित्य प्रति याग करते यागों में से सुगन्धि आती, परमाणु आते, उन परमाणुओं का भेदन होता और उस भेदन प्रतिभा क्रिया को लेकर के उनसे यंत्रों का निर्माण करते रहते थे। जब मैं यह विचारधारा अपने तक ही सीमित नहीं, विस्तृत करना चाहता हूँ केवल हमारे मनों में यह सदैव विचार रहता है कि आधुनिक काल का समाज क्या कर रहा है।

आधुनिक समाज

आधुनिक काल का समाज पदों की लोलुप्ता में रत हो गया है। द्रव्य की लोलुप्ता में रत हो गया है। परन्तु देखो, अपने स्वार्थवाद में रत होने जा रहा है। परिणाम यह होगा, कि कुछ काल में ही स्वार्थ जब बलवती हो जाता है तो रक्त भरी क्रांतियाँ उत्पन्न हो जाती है समाज में, परन्तु आज मैं जब यह विचार विद्यालयों की प्रतिभा में रत करने के लिए मैं नहीं आया हूँ। पूज्यपाद गुरुदेव को तो यह सब प्रतीत है। उन्हें ज्ञान है इस प्रकार का। मानो देखो, यहाँ घटोत्कच्छ और बब्रीत भी याग करते थे। यागां भविते देवाः याग का अभिप्राय यह है कि वे सुगन्धि के द्वारा, गम्भीर चिंतन करते थे। मननशील रह करके यंत्रों का निर्माण करते रहते थे। मानो देखो, आधुनिक काल का वैज्ञानिक तो उन यंत्रों का नामोकरण भी नहीं जानता। मानो देखो, उसके रूप को भी

नहीं जानता कि किस प्रकार कौन सी धातु का पिपात मिलान करता हुआ इन यंत्रों का निर्माण होता रहता है। परन्तु मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह निर्णय दे रहा हूँ मेरा अपना कोई विशेष वक्तव्य नहीं है। आज केवल यह उच्चारण करना है कि प्रत्येक मानव को विचारना है। कि समाज का परिवर्तन होता रहता है। किसी काल में किसी प्रकार की धारा का जन्म होता है तो किसी काल में किसी धारा का जन्म होता है। परन्तु वह जन्म होना और उसका समापन होना ये भौतिकवाद का एक स्वाभाविक रुप माना गया है अथवा वो गुण माना गया है।

अपवित्र वायुमण्डल

इसी प्रकार मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन कराते हुए कहा था। बहुत पुरातन काल में कहा कि वैज्ञानिकों को ऊँचा बनना है और प्रजा को ऊँचा बनाना है। राष्ट्र को महान बनाना है, राजा को पवित्र बनना है, याग करना है तो समाज ऊँचा बनेगा। परन्तु समाज में महानता कब आएगी? जब राजा स्वयं अपने क्रियाकलाप से शून्य रहता है तो समाज भी शून्य रहता है। जब समाज और राजा दोनो शून्य बन जाते हैं, तो दोनों में स्वार्थपरता आ जाती है। जब दोनों में स्वार्थपरता आ जाती है तो प्राणी, प्राणी का हनन होना प्रारम्भ हो जाता है। जब प्राणी–प्राणी का हनन होता है तो उसकी जो दाह है उसका जो अभिमान है वो वायुमण्डल को अपवित्र बना रहा है।

मानो देखो, आज जब हम विद्यालयों में और देखो, शिक्षालयों में ये दृष्टिपात करते हैं तो आश्चर्य आता है। पुरातन काल में जब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के द्वारा अध्ययन करता था तो महाराजा अश्वपति के यहाँ विद्यालय में अध्यापन हो रहा था। परन्तु पूज्यपाद गुरुदेव जब देखो, अध्यापन कराते थे विज्ञान की शिक्षा देते–देते ये आध्यात्मिकवाद में हमें मानो देखो, स्नान कराते रहते थे। जब वह आध्यात्मिकवाद में स्नान कर लेता है ब्रह्मचारी, तो मुनिवरो! देखो, जब ब्रह्मावच्क्कृति लोकाः वह ब्रह्मचारी देखो, पवित्र, महान और स्वर्ण बनकर के अपने जीवन को महान बना देता।तो विचार विनिमय क्या? मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को आधुनिक काल के कुछ मानो देखो, अंशों की चर्चा कर रहा हूँ और वह चर्चाएँ क्या है? वह चर्चाएँ ये है कि आधुनिक काल का वैज्ञानिक त्रास, राजा स्वार्थवश, प्रजा में स्वार्थपरता आ गई है। मानो द्रव्य की तत्परता आ करके ही देखो, मानव, मानव का ह्रास हो रहा है। परमात्मा के नामोकरण पर देखो, वह उसको दूषित किया जा रहा है। धर्म के नामों पर देखो, वह रूढ़ियाँ बनाकर के अपने जीवन को नष्ट कर रहे हैं। परमात्मा की प्रतिभा से दूरी हो गए हैं।

परन्तु देखो, इस प्रकार मैं अपने विचारों को देने के लिए आया हूँ मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई काल में वर्णन करते हुए कहा था कि यागां ब्रह्मवाचोः यहाँ नाना प्रकार के यागों का चलन रहा है। परन्तु उन यागों में देखो, हिंसा का भी चरण रहा है। महाभारत काल के पश्चात् नाना प्रकार का मानो देखो, रूढ़िवाद परिणत हो गया है। यागों के ऊपर आक्रमण होने लगे, विचारों पर आक्रमण होने लगे। परन्तु देखो, इन विचारों की प्रतिभा एक रूढ़ि में विशेष हो गई। इससे राष्ट्र समाज मानो सबका ह्रास होता चला गया। एक दूसरे में, एक दूसरे को नष्ट करने की प्रवृत्ति में लग गया, तो इसीलिए विशेष चर्चाएँ देना नहीं चाहता हूँ।

पूज्यपाद गुरुदेव को मैं कुछ सूक्ष्म वाक्यों का परिचय देना चाहता हूँ और वह परिचय यह कि हम ब्रह्मेः वाचो अपने में अपनेपन को, अपने प्रभु को, अपने देव को यज्ञोमयी स्वीकार करके हमें भी याज्ञिक और सुकर्म में संलग्न हो जाना है और मानो अपने को आदर्शवादी बनाना है। **शेष अनुपलब्ध**

14.5.1984
ग्राम भैंसवाल

राष्ट्र की पवित्रता का आधार

जीते रहो,

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारें समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मंत्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मंत्रों का पठन–पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद वाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है। अथवा वो अग्रणं व्रहि वाचाः मानो वो यज्ञोमयी स्वरूप माने गए हैं। जितना भी ये संसार रूपी हमें यह ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आ रहा है मानो एक प्रकार की वो यज्ञशाला के रूप में, हमारे आचार्यों ने बेटा! कल्पना की है। हमारे यहाँ प्रत्येक वेद मंत्रः मानो यागों का बड़ा विशेष वर्णन करता है और यह कहता है कि यह संसार रूपी ही यज्ञशाला है और यहाँ प्रत्येक मानव याग कर्म करने के लिए आया है। जो भी संसार का प्राणी मात्र है। वह एक दूसरे का साया और एक दूसरे का सहायक बना हुआ है।

संगतिकरण

परन्तु जहाँ एक दूसरे में एक दूसरे की संगतिकरण की पवित्र भावना होती है तो जानो वो यज्ञोमयी मानो उसका संगतिकरण हो रहा है। जिस संगति करण के ऊपर, बहुत पुरातन काल से बेटा! यह विवेचना चली आ रही है कि यदि जगत् में संगतिकरण नहीं है, तो वो यज्ञरूप नहीं है। तो इसीलिए हमारे यहाँ यागों का विशेष वर्णन और उसकी प्रतिभा का मानो स्रोत एक मानव का ह्रदय ही माना गया है।

तो मुनिवरो! देखो, आज का हमारा वेद मंत्रः भिन्न भिन्न प्रकार की जहाँ विवेचना कर रहा है वहाँ यागों का बड़ा वर्णन और उसकी प्रतिभा का मानो एक कृतिकाओं में रत रहने वाला यह एक अमूल्यतव है? तो मेरे प्यारे! यह जो परमात्मा का रचाया हुआ अमूल्य जगत् है। यह प्रायः यज्ञमयी स्वरूप माना गया है। जैसे हमारे यहाँ, इससे पूर्व शब्दों में मानो देव पूजा के सम्बन्ध में विवेचना हो रही थी। देवताओं के लिए हम कुछ नाना विचार, तुम्हारे समीप नियुक्त कर रहे थे। परन्तु देखो, जहाँ ये संसार, ये देवपुरी के रुप में, जहाँ ऋषि मुनियों ने, दार्शनिकों ने कल्पना की है। परन्तु इसी प्रकार यह कल्पना न बनकर रह जाए, इसका वास्तविक स्वरुप है। जहाँ देवपुरी के रुप में कल्पना की है वहाँ आचार्यों ने बेटा! इस संसार को यज्ञशाला के रुप में वर्णन किया है और यह कहा है कि यह संसार तो यज्ञशाला है। यहाँ प्रत्येक मानव याग कर्म करने के लिए आया है।

याग की प्रतिभा

याग का अभिप्राय है सु मानो देखो, सु है जो सूत्र में पिरोया हुआ है। जो सूत्र में पिरोया हुआ है और सु है, उसी का नाम याग माना गया है। मानो जैसे हमारे यहाँ बेटा! यागाम् इस संसार को याग और यहाँ प्रत्येक मानव याज्ञिक कर्म कर रहा है। जब मैं लोक लोकान्तरों की अथवा यागों की प्रतिभाओं में रत होने लगता हूँ तो प्रायः हमें ऐसा दृष्टिपात आने लगता है कि यह संसार तो एक यज्ञशाला है और मानव याग कर्म करने के लिए आया है। तो माता भी याग कर रही है। आचार्य भी याग कर रहा है। अपने विद्यालय में जब ब्रह्मचारी को मानो उसकी प्रत्येक इंद्रियों को जो ज्ञान, विज्ञानमयी इंद्रियाँ है उन्हें अपने में धारण करता है और स्वाहा कह करके मेरे पुत्रो! देखो, इंद्रियों को एक स्वर में, एक मानो सूत्र में पिरो देता है और वह जब सूत्रित कर देता है तो

मानो आचार्य याग कर रहा है। वो मानो कहीं गो मेघ याग में परिणत हो रहा है कहीं अश्वमेघ यागों में मानो गान गा रहा है, कोई मानो देखो अस्सुति अग्निष्टोम याग में लगा हुआ है।

प्रभु की यज्ञशाला

तो इसीलिए भिन्न–भिन्न प्रकार की धाराओं में मानव जब रत हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, एक मानवीय आभा रुद्र आभा समय वर्णव्रति ब्रह्माः मानो देखो, अपनी आभा में रत रहता है। तो विचार विनिमय मैं विशेष नहीं देना चाहता। विचार केवल यह देने के लिए कि हमारा जो ये संसार है, ये जो जगत है ये प्रभु का रचाया हुआ, एक प्रकार की यज्ञशाला है। माता अपने यागों में परिणत होती हुई, साकल्य प्रदान करती रहती है। यज्ञमान मानो साकल्य की हूत में लगा हुआ है। तो मुनिवरो! वह जो परमपिता परमात्मा है वो महानवादी ब्रह्मा के रूप में वर्णन किया गया हैं। जिसकी आभा एक महानता में रत रहने वाली है।

याग से प्रकाश

परन्तु देखो, आज मैं विशेष चर्चा देने नहीं आया हूँ, यह संसार, परमपिता परमात्मा का रचाया हुआ ब्रह्माण्ड है और यह यज्ञमयी स्वरूप माना गया है। माता बालक को लोरियों का पान कराती हुई याग कर रही है। यागां भविते पुत्रो भवि वाचं ब्रह्म लोकाम् वेद की आख्यायिका कहती है कि माता लोरियों का पान कराती हुई मानो एक प्रिय याग कर रही है, शिक्षा दे रही है ओजस्वी बना रही है। हृदय से हृदय का समन्वय करा रही है। तो मानो देखो, पुत्र प्रसन्न हो रहा है और उसी की आभा में रत होकर के बेटा! अपने जीवन और संसार रूपी यागों में लगा हुआ है। जैसे सूर्य प्रातः काल में उदय होता है और उदय हो करके वो प्रकाश देता है, वो अमृत भी देता है। वह मानो देखो, अंधकार को धारण करके उस प्रकाश में मानव को लाता है तो बेटा! वो एक याग कहलाता है क्योंकि याग ही मानव को अंधकार से प्रकाश में लाता है। आध्यात्मिकवाद की प्रतिभा में रत कर देता है।

तो परिणाम क्या है! मुनिवरो! देखो, प्रत्येक मानव अपने में मानवीय तत्वों को अपने में धारण करता है। तो आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ अब मेरे प्यारे महानन्दजी कुछ दो शब्दों की विवेचना प्रकट करेंगे।

पूज्य महानन्द जी का प्रवचन

ओ३म् देवः सम्भवः वरुणं ब्रह्माः वाचन्नं प्रजाः

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी–अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अमृतमयी वृष्टि कर रहे थे। क्योंकि उनके जो अमृतमयी शब्द है वो हमारे जीवन का निर्माण करते रहते हैं। मानो देखो, जिस विषय में वो रत होते हैं वो विषय हमारे लिए वरदान बन करके रहता है। वो हमारे लिए एक आशीर्वाद बनकर के रहता है। मानो जैसा वो अभी–अभी याग के सम्बन्ध में बहुत–सी विवेचना करते रहते हैं। देव पूजा के सम्बन्ध में बहुत सी विचार धाराएँ, हमें नवीन– नवीन प्रगट करते रहते हैं।

आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को मानो देखो, अपनी कुछ चित्रावलियों में, अपनी वाणी में मानो देखो कुछ चित्रण करना चाहता हूँ। क्योंकि मैं व्याख्याता नहीं हूँ क्योंकि पूज्यपाद गुरुदेव के समीप तो ऐसा है जैसे जुगनी की अग्राः मानो जैसे बहुत बड़े प्रकाश के अग्रणीय सूक्ष्म सा प्रकाश रहता है। परन्तु जहाँ मैं यह वाक् उच्चारण करने जा रहा हूँ कि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव नाना प्रकार की चर्चाएँ प्रकट करते रहते हैं मानो एक आभा में नियुक्त करते रहते हैं। जिसकी धाराओं में रत हो करके मानव अपने जीवन को विचित्र बनाता रहता है। परन्तु वो चित्रण करता रहता है। प्रत्येक मानव की धाराओं में मानवीय तथ्य और मानवीय जीवन की एक पवित्र आभा में रत रहने वाला है।

आज मानो जहाँ हमारी आकाशवाणी जा रही है। वहाँ मैं एक याग का दर्शन कर रहा था। मेरा अन्तरात्मा बहुत प्रसन्न हो रहा था। क्योंकि मेरे अन्तर्हृदय का यज्ञमान के हृदय से समन्वय रहता है। और मैं कहता रहता हूँ हे यज्ञमान! तेरे जीवन का प्रायः सौभाग्य अखण्ड बना रहे। क्योंकि तेरे गृह में जो द्रत्य है इसका प्रायः सदुपयोग होता रहे। द्रव्य का जिस गृह में मानो सदुपयोग होता, जिस यज्ञमान के गृह में वो प्रायः याज्ञिकता में रत रहने वाला है।

आधुनिक समाज

तो इसीलिए मैंने, अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कुछ अपना मानो परिचय देना है क्योंकि वो जानते है मैं इनको परिचय ही क्या दे सकता हूँ परन्तु जो ये आधुनिक काल का प्रायः जगत चल रहा है मैं इसका बहुत–सा परिचय देता रहता हूँ पूज्यपाद गुरुदेव को। पूज्यपाद गुरुदेव से जब मैंने यह प्रश्न किया था कि संसार में मानो ये कि मानव के विचारों में खिलवाड़ हो रहा है, तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने उसके ऊपर कोई विशेष टिप्पणियाँ नहीं दीं। परन्तु देखो, इन्होंने कोई अपना विचार व्यक्त नहीं किया। तो इसीलिए मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से बारम्बार ये मानो देखो, इनके स्रोत आधुनिक काल की जो प्रति क्रियाएँ हैं। चाहे वह विज्ञान के ऊपर हों, चाहे वह विद्यालयों के ऊपर हो मानो देखो, वह चाहे किसी भी रुप में रत होने वाला एक समाज है उसमें कई प्रकार की धाराओं में रत रहने वाला यह प्राणी मात्र कहलाता है।

तो मेरे पूज्यपाद ने तो कई काल में, नाना ऋषि मुनियों के अपने विचार व्यक्त किए और देखो, उनके ऊपर उन्होंने बहुत सी टिप्पणियाँ, बहुत से विचार दिए और यह कहा कि यह संसार तो अंधकार में मानो परिणत हो रहा है। ये मानो देखो, अपने कर्तव्य की विहीनता में रत हो गया है। जब मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, मुझे यह प्रगट कराते हैं तो मानो मेरा जीवन आश्चर्य में रत हो जाता है। मैं आश्चर्य चकित हो जाता हूँ हे यज्ञो भवः सम्भवः पूज्यपाद गुरुदेव यागों की बड़ी विशेषताओं में, उसकी गम्भीरता में ले जाते हैं और परमपिता परमात्मा का एक रचनामयी, एक याग बन जाता है।

परन्तु जब मैं यह विचारता हूँ कि महाभारत काल के पश्चात याग मानव का केवल मौखिक कर्म न रह करके वो केवल एक मानो बाह्य एक पूजा का स्थल बना मानो देखो, याग प्रायः पूजा का स्थल तो है ही परन्तु देखो, जहाँ मैं एक पूजा की वार्ता प्रकट करता हूँ कि पूजा का एक स्थल हैं तो इसमें मानो दो प्रकार की आभाओं का जन्म होता रहता है। जिस जन्म में मानव अपनी मानवीयता का एक दिग्दर्शन कराता रहता है। जैसा पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई काल में वर्णन कराया था कि मानं ब्रह्मे वाचो ये जो महाभारत काल के पश्चात का जो याग क्रिया कलाप है वह भिन्न भिन्न प्रकार की रूढियों में परिणत हो गया। मानो याग भी क्रियाकलापों में न रहकर वो रूढ़ि में परिणत हो गया। मानो देखो, अहिंसा परमो धर्म में न रहकर वो हिंसा का एक क्षेत्र बन गया।

जब मैं आधुनिक काल में अग्निष्टोम याग, या वाजेपयी यागों की चर्चा करता हूँ, और पूज्यपाद गुरुदेव से उसका निर्णय भी कराता रहता हूँ तो प्रायः मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि ये जो यागों का चलन है ये मानो देखो, इसका द्वितीय रूपों में परिवर्तन हो गया, उसी परिवर्तन से मानव अपनी परिवेशता चाहता रहता है। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से एक समय देखो, अनुष्ठान देखो, अग्निष्टोम के सम्बन्ध में चर्चा की। तो पूज्यपाद गुरुदेव ने बड़ा विशुद्ध रुप से उसका विश्लेषण किया। परन्तु जब मैं आधुनिक काल के जगत् से आधुनिक काल के पाण्डित्यों से यह प्रश्न करता हूँ? तो वह सबसे प्रथम अग्निष्टोम याग को जानता ही नहीं, वाजपेयी याग की कल्पना भी नहीं करता परन्तु कहीं कहीं मुझे जब ये प्राप्त होने लगता है। इसकी धारायें मुझे दृष्टिपात होने लगती है। तो मानो देखो, वो अपनी धाराओं में रत रह करके और वह ओगा ब्रहि वाचः वेद की एक–एक आख्यायिका मानो देखो, उसके स्वरुप में परिणत करने लगता है। उसमें अशुद्धवाद आ गया है। कर्मकाण्ड में भिन्नता आ गई है और जब कर्मकाण्ड में भिन्नता आ जाती है तो उसके स्वरुप में अधूरापन आ

गया है। मानो देखो, यहाँ का आधुनिक काल का पाण्डितव जब ब्रह्म की छटा में नहीं मानो देखो, जब उसमें अर्पित नहीं होता है तो वह उसे अग्निष्टोम याग या वाजपेयी याम इन यागों का नामोकरण भी उसने अपने जीवन में श्रवण नहीं किया। मानो जब नहीं किया तो उसकी चेतना उसके कर्मकाण्ड को क्या जान सकता है।

आज मैं इस सम्बन्ध में कोई विवेचना नहीं, केवल यह वाक् उच्चारण करने आया हूँ। कि यह एक रूढ़ि बन करके रह गया। बाल्य का जन्म हुआ है, माता कहती है कि यज्ञ कराओ मानो देखो, गृह शुद्धो ब्रहेः यह शुद्धिकरण के यहाँ स्थलों में रत रहने वाला है। वहाँ मानो देखो, यह अमृतमयी क्रियाओं में रत रहने वाला है। जब मैं यह विचारता रहता हूँ तो पूज्यपाद गुरुदेव मुझे इसका बड़ा सुन्दर निराकरण करते रहते हैं। यह तो प्रायः निराकरण का कर्म है, इनकी प्रतिभा है, इनका कर्तव्य है।

याग में दो वेदियाँ

परन्तु देखो, आज महाभारत काल के पश्चात् मैंने जब पूज्यपाद गुरुदेव से एक समय वर्णन कराया कि याग में दो प्रकार की वेदियों का निर्माण हुआ। एक मानो देखो, अहिंसा में, एक हिंसा में है। देखो, अग्निहोत्र में जब साकल्य, वह तो हिंसक बना दिया जो अहिंसा में लाने वाला था और उसमें भिन्न–भिन्न प्रकार के काल्पनिक देवताओं की मानो उसमें देखो, पूजा करना, वेदी भिन्न बन गई मानो देखो, उसमें हिंसा का प्रश्न नहीं था। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह प्रश्न किया तो इन्होंने यह उत्तर दिया कि मैं इस सम्बन्ध में नहीं जानता। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा प्रभु! इस सम्बन्ध में मैं जानता हूँ। परन्तु देखो, ये कर्मकाण्ड की आभा मानव से दूरी हो गई है। अज्ञान के आने से मानो देखो, विदर्मी देखो, विदर्मी क्या? देखो, रूढ़िवाद आने से, उन रूढ़ियों में जाने के पश्चात् मानव का विचार नग्न रह गया और विचार नग्न रहने से मानो देखो, उसके उतने औजस्वी विचार न रह करके, जीवन की धारा ओर किसी दिशा को अपनाना उसने प्रारम्भ किया।

जब ये विचार मानो मेरे समीप आते हैं तो मेरा जीवन आश्चर्य में चकित हो जाता है। हे मानव! ब्रह्मे वाचः पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई काल में यह वर्णन कराया कि ये दुर्भाग्य है। परन्तु देखो, जहाँ मैं कर्मकाण्ड की वार्ता लेता हूं तो पाण्डितव उससे दूरी चला गया है। उसने यागों के सर्वत्र नामों का मानो देखो, उन्हें स्मरण भी नहीं है। इसी प्रकार आज मैं विशेषता में न जाता हुआ, आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को राष्ट्रवाद में ले जाना चाहता हूँ। मानो जहाँ यागों का चलन, यागों का चयन इस प्रकार विशुद्ध रूपों में रत रहने वाला वहाँ मानो देखो, राष्ट्र की चर्चा आती रहती है।

राष्ट्रवाद

हमारे यहाँ विचार आता है कि ये राष्ट्रवाद क्या हैं? राष्ट्रवाद किसे कहते हैं? हमारे यहाँ जब दार्शनिकों में यह राष्ट्रवाद की चर्चा जाती है तो विचार यह आता है कि यह जो राष्ट्रवाद है। ये मानो देखो, दार्शनिक दृष्टि में कोई धारा नहीं है। यह राष्ट्रवाद कोई वाद नहीं है। यह तो केवल देखो, अपने को अनुशासन में लाना है और प्रजा को अनुशासन में लाने के पश्चात् मानो उसका नृत करना है। उसे अपने में धारण करना है। तो विचार क्या? मानो देखो, यह राष्ट्रवाद है। जिसकी चर्चाएँ परम्परागतों से ही प्रायः होती रहती है। तो राष्ट्रवाद मुनिवरों! देखो, आधुनिक काल का राष्ट्र और पुरातन राष्ट्रवाद को हम जब अपने में मापना प्रारम्भ करते हैं तो वो प्रायः उस रूप में मापा नहीं जा रहा है। उस रूपों से मापने में अधूरापन आता जा रहा है। जैसे अग्नि ब्रह्म वाचाः अग्नि यागा वह जो एक याग हो रहा है, अग्न्याधान हो रहा है। परन्तु देखो, वो जो एक याग में परिणत होने वाला अनुपम ज्योर्तिमयी आभा में मानो देखो, एक राष्ट्रवाद की विवेचना हो रही है। और मैं राष्ट्रवाद के लिए इतना ही उच्चारण कर सकता हूँ कि यह राष्ट्रवाद है क्या? मुनिवरो! देखो, राष्ट्रवाद केवल समाज का खिलवाड़ है। परन्तु जब दार्शनिकों में यह राष्ट्रवाद पहुँचा तो उन्होंने अपना मन्तव्य दिया कि राष्ट्रवाद अपने में कोई वाद नहीं है। मानो देखो, वह तो कर्तव्यवाद है। कर्तव्य के पालन करने के लिए, राष्ट्र का निर्माण होता है और वह मानो देखो, कर्तव्य में कौन–से ब्राह्मण है, कौन से ब्रह्मवेत्ता है, जो राष्ट्र को चुनौती प्रदान करते हैं। और राष्ट्र को चुनौती देकर के और उसे मानो देखो, एक सीमितता में परिणत कर देते हैं। पूज्यपाद गुरुदेव ने तो राष्ट्रवाद के सम्बन्ध में, पुरातन काल में बहुत–सी चर्चाएँ की हैं परन्तु बहुत सी आख्यिका मेरे समीप आती रही हैं। आज का मैं यह विचार पूज्यपाद गुरुदेव को इसलिए दे रहा हूँ, कि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने यह कहा था एक काल में कि रक्त भरी क्रांति का संचार होने जा रहा है। मानो देखो, यह समाज एक रक्त में परिणत होने जा रहा है। समाज ही नहीं राष्ट्र होने के लिए तत्पर हो रहा है। पूज्यपाद गुरुदेव ने कई काल में यह वर्णन कराया।

परन्तु जब मैं आधुनिक विचार को लेता हूँ, शिक्षालयों में प्रवेश मानो देखो, वैज्ञानिकों के समीप पहुँचा। अभी–अभी कुछ समय हुआ मैं वैज्ञानिकों के समूह में विद्यमान हो गया। पूज्यपाद! तो यह वैज्ञानिकों के समूह में याग हो रहा था। यागां सुगन्धं ब्रह्मेवाचः प्रवाह मानो वो देखो, याग के रूप में परिणत हो रहा था। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने देखो, इसके ऊपर पुरातन काल में बहुत–सी टिप्पणियाँ की है। आज मैं उन विचारों में टिप्पणी देने नहीं आया हूँ, विचार केवल यह देने के लिए कि प्रत्येक मानव रक्त में ही अपने जीवन को, राष्ट्र को चाहता है। इसके मूल में क्या है? इसके मूल में मानव–मानव में प्रीति न रहना है। मानव–मानव में रक्त का जो प्रहार चल रहा है उसमें उसकी आभा निहित कही गई है।

वर्तमान विद्यालयों की शिक्षा प्रणाली

तो विचार क्या, मैं यह विचार केवल इसलिए दे रहा हूँ कि मानव समाज कहाँ चला जा रहा है। विद्यालयों में प्रवेश करता हूँ तो विद्यालयों में शिक्षा प्रणाली का ह्रास हो रहा है। शिक्षा प्रणाली अपने में प्रणाली नहीं रह गई है, केवल मानो देखो, रक्तं भा सम्भवः देखो, वह अपने में अपनेपन की धारा को लेकर गति प्रारम्भ करते हैं। तो आज मैं पूज्यपाद गुरुदेव से यह उच्चारण कराने के लिए आया हूँ। पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कुछ समय दिया है और उस समय में मैं कुछ कहता चला जाऊँ और वह उच्चारण क्या? मेरा अभिप्राय है कि मैं यही चाहता हूँ कि समाज, राष्ट्र ऊँचा होना चाहिए, कर्तव्यवाद का पालन होना चाहिए। जब राजा अपने कर्तव्यवाद के पालन को लेकर के वह मानो देखो, अनुष्ठान करता है तो मानो प्रजा उसी के संरक्षण वाली, विचारधारा वाली मानो उसके समीप विद्यमान हो जाती है।

तो परिणाम यह बना कि हम अपने में धाराओं को अपनाते हुए, इस सागर से पार होने का प्रयास करें। परन्तु जहाँ मैं ये विचारता हूँ अग्निष्टोम याग के सम्बन्ध में ये पूर्णरूपेण मानो यज्ञ के कर्मकाण्ड का एक स्रोत है। याग के कर्मकाण्ड में जहाँ प्रवेश होता रहता है। वहाँ अपनी धाराओं को मानो द्वितीय स्वरुप देता रहता है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मैं आज केवल इतना ही वाक् उच्चारण करने आया हूँ कि ये समाज रूढ़ियों से पृथक् होना चाहिए, परन्तु आधुनिक काल जो है, ये रूढ़ियों से युक्त हो रहा है। रूढ़ियों में ये परिणत हो रहा है। इसलिए मैं राजा से कहता रहता हूँ हे राजन्! तू अपने राष्ट्र में, अपनी मानवीयता को अपनाने का प्रयास कर, जिससे वह विशुद्ध स्वरुप बनकर के वह मानव के समीप आ जाए और मानव उसके अनुसार ही अपना क्रियाकलाप प्रारम्भ कर दे। तो इस प्रकार जब मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह वाक् प्रकट किया था तो पूज्यपाद गुरुदेव ने अपनी महामहिमा अपने देवतत्व को अपनाते हुए इस सागर की प्रतिभा बनकर के रही।

तो विचार विनिमय क्या है मेरे इन वाक् उच्चारण करने का कि प्रत्येक मानव को, प्रत्येक याज्ञिक को अपने गृह में याग करना चाहिए। प्रत्येक को अपनी सुगन्ध करनी चाहिए और दुर्गन्धियों को नष्ट करना चाहिए। ऐसा मेरी मानो देखो, सदैव यह विचार रहा है। मैं इन विचारों में विशेष चर्चा देने के लिए नहीं आया हूँ, मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ केवल संक्षिप्त परिचय देने के लिए, इसीलिए आता रहता हूँ। कि हे मानव! तू अपनी राष्ट्रीयता को ऊँचा बना।

राष्ट्रीयता उस काल में ऊँची बनेगी। जब मानो देखो, प्रीति और संगठन होता है। जब संगठन होता है तो प्रीति का संगठन एक विशाल होता है। परन्तु जब इसको अपना करके, जब अग्रणीय गति बनाता है। तो मानो देखो, जीवन में एक अमूल्य धाराओं का जन्म हो जाता है।

याग से देवपुरी

मैंने देखो, अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह प्रश्न किया था कि भगवन्! यज्ञं भवो सम्भवा कि ये जो याग है यह अंतरिक्ष में भी हो रहा है अथवा नहीं तो ऋषियों ने बेटा! निर्णय करते हुए कहा अपनी वाणी का उद्घोष करते हुए कहा है कि मेरे जो शब्दार्थ है वह अपनी कृतियों में रत हो जाएँ। इससे जीवन की धारा एक अनुपम बन करके रह जाए। तो जब मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने यह वर्णन किया तो मुनिवरो! देखो, वर्णन आता रहता है। मैंने कई काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह कहा था कि यह संसार को ऊँचा बनाने वाले प्राणियों! अपने संसार को ऊँचा बनाने का प्रयास करो। परन्तु संसार क्या है? इस संसार के सम्बन्ध में बहुत–सी विचार धारा मुनिवरो! देखो, हमने प्रकट की है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे इन वाक्यों का अनुभव कराया, अपने में रत रहने का मानो प्रयास किया। तो विचार आता रहता है। हमारे यहाँ कि ये जो नाना प्रकार के याग हो रहे हैं। इन यागों में मानव को परिणत रहना चाहिए। याग एक अपनी स्थलियों में विचित्र बनकर के, ये देवपुरी में मानव को ले जाता है।

तो आओ, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मैं आप से कुछ परिचय कराने के लिए आया हूँ और वह परिचय आगे क्या है कि देखो, इस याग को संसार के प्राणियों ने निगलना चाहा। परन्तु देखो, इसके पश्चात् भी ये प्राण एक आभा में बनकर के मुनिवरो! देखो, वह उसकी प्रतिभा में रत हो गया तो परिणाम यह है कि हम अपने जीवन की धारा को एकोकी अंग न बनाकर के सर्वत्र उनका अनुभव करना चाहिए। तो आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कोई विशेष चर्चा का अवलोकन करने नहीं आया हूँ। मैं केवल पूज्यपाद गुरुदेव को यह विचार दे रहा हूँ कि ये संसार कितना विचित्र बनता चला जा रहा है। ये संसार कितना मर–मग्न होता जा रहा है।

तो मेरे प्यारे! देखो, यहाँ सबसे प्रथम मानव की मानवीयता ह्रासता में नहीं रहनी चाहिए, उसमें ओज और तेज होना चाहिए। परन्तु मैं राष्ट्रवाद की चर्चा कर रहा था। राष्ट्रवाद कहते किसे है? जो अन्धकार से प्रकाश में ला दे। मूलागंवृहि वाचं वाचन्नमं ब्रह्मे वाचाः पूज्यपाद गुरुदेव ने इन वाक्यों की वेदना बहुत पुरातन काल में की थी। आज भी मैं उन्हें श्रवण करने के लिए तत्पर हो रहा हूँ। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने यह वर्णनशाला में अपनी वर्णमाला में यह प्रगट किया था कि संसार में ये जो गौतम ब्रहाः चहे सम्भवा ब्रह्मवाचाः कृति लोकां हिरण्यं रथं ब्रह्मः वायु गताः देवो गातं वाचन्नमं ब्रह्मेः कृतो मानो देखो, ये जो राष्ट्रवाद है ये मानो एक देवपुरी के रूप में परिणत रहती है। जब राजा के समीप जाते हैं देवयाग करने वाले तो मानो उसका स्वरूप कुछ ओर ही होता है उसके स्वरूप की कल्पना करना एक हमारे लिए मानो देखो, अनुद्योतक होगा। परन्तु केवल विचार यही है कि हमें उन वर्ण आख्यिकाओं के ऊपर चिंतन और मनन करना चाहिए और चिंतन और मनन के पश्चात् हम अपने याग को पूर्ण करें।

परन्तु देखो, हम ये उच्चारण कर रहे थे कि राजा कहते किसे हैं? जो राजा अपनी प्रजा के हृदयों में सुखद का अनुभव करें। अपने हृदय में सुखद का जो अनुभव करता है मानो देखो, उसने अपनी नाना प्रकार की टिप्पणियों को त्याग दिया है और टिप्पणियों के पश्चात् मानो देखो, उसमें कुछ धारा का जन्म होता है। जिस जन्म को लेकर के मानो अपनी मानवीयता की धाराओं में रत होकर के मानो देखो, अपने में धन्यवाचक बन करके रह सकता है। परन्तु रहा ये कि राष्ट्रवाद की मैं चर्चा करता रहता हूँ मैंने कई काल में राष्ट्रवाद का एक अभिप्राय, एक ही वाक कहा था कि जो कर्तव्य का पालन करता है और यदि कर्तव्य का पालन राजा के राष्ट्र में नहीं होता तो राजा का राष्ट्र अग्नि के मुखाबिन्द में परिणत हो जाता है या अग्निकांड बन करके रहते हैं। सूक्ष्म–सूक्ष्म अग्नि के कांड बनकर के माना देखो, अपनी आभा और ऋचा वाचों में ही ओत–प्रोत हो जाता है।

तो विचार विनिमय में क्या, मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह वर्णन कराया कि मानव को अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहिए। मानव को अपने जीवन को महान बेला से युक्त बनाना चाहिए। जिससे मानव अपनी स्थलियों में, मानो देखो, रत होता हुआ इस सागर की प्रतिभा, इस सागर की अंतिम चरण की मानो वो प्रतिभा में रत हो जाता है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने राष्ट्रवाद की कई काल में चर्चा की थी उन्होंने यह कहा था कि राजा राष्ट्रवाद को अपने जीवन में, अपनी प्रजा को महान बनाना है और प्रजा को महान बनाकर के ही मानो देखो, वह अपने लोलुक्तियों में प्राप्त होता हुआ लोलुक्तियों में रत हो जाता है।

परन्तु आज मैं विद्यालयों में नहीं, मानो जब मैं राजस्थलियों पर इन वाक्यों को विचारता हूँ, चिंतन करता हूँ तो मेरे विचार में एक दीर्घता का दर्शन आता रहता है। परन्तु मैं इन वाक्यों पर ले जाना नहीं चाहता हूँ परमपिता परमात्मा की आराधना का प्रसंग है। वहाँ परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन है। वहाँ मानो देखो, आधुनिक काल का जो राष्ट्रवाद है मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से इस राष्ट्रवाद के सम्बन्ध में बहुत–सी चर्चाएँ की हैं। परन्तु राष्ट्रवाद, आधुनिक काल का जो राष्ट्रवाद है वो मानो देखो, कुछ व्यक्तियों में उस राष्ट्रवाद की प्रतिभा मुझे दृष्टिपात नहीं आती है। तो जब मैं इन वाक्यों को लेता हूँ कि राष्ट्रवाद कोई अपने में कोई प्रियतम नहीं है। परन्तु देखो, अपनी धाराओं में रत रहते, अपने जीवन को महानता की वेदी पर ले जाएँ, जिससे जीवन की सार्थकता बनी रहे। तो आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह वर्णन करने चला कि अपने में धारयामि, रत रहने वाला यह अमूल्यतव कहलाता है।

साम्यवाद

आओ, जब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के समीप इन वाक्यों को करता हूँ, तो पूज्यपाद कहते हैं तुम तो साम्यवाद में चले गए हो। मानो देखो, साम्यवाद किसे कहते है? साम्यवाद उसे कहते है, जिससे हमारे मानव शरीर पर, मानव मस्तिष्क पर कोई वस्तु भी हम वृत्तियों में नहीं ला सकते तो मानो देखो, उनका स्वरूप कुछ और बन जाता है। परन्तु देखो, इसी वाक् को ले करके, अपने वाक् की धाराओं को ले करके वो अपने में रत रहकर के मानो सागर की आभाओं में रत रहने लगा है।

तो विचार क्या है? मैं यह विचार देता चला जा रहा है पुत्रो भवा पवे तत्तनं वाचन्नमं ब्रह्मी वाचः पुत्रो सम्भवाः देवाः मानो देखो, जब मेरे पूज्यपाद गुरुदेव इसकी विवेचना करते हैं कि यह राष्ट्रवाद, अपने में राष्ट्रवाद नहीं रहा है। इसमें अग्नि की धाराएँ, अग्नि की तरंगे मानो ओतप्रोत होने जा रही है। वो रक्त भरी क्राँति का, एक क्राँति–तव चला जा रहा है। परन्तु जब मेरा यह विचार, मानो दार्शनिकों के समूह में प्रवेश करता है। तो वो कहते हैं कि सोमं अब्रहाः तुम सोम अम्ब्रहा हो। यहाँ कर्तव्य का पालन न किया जाता है। इसीलिए क्षुधा से बाल्य देखो, पीड़ित होता रहता है। प्रीति से पीड़ित होता रहता है। तो उस पीड़ित होने वाले अग्रो जगत् को अपने में धारण नहीं करना चाहिए। तो मानो देखो, मुझे ऐसा स्मरण है कि वह अपने आंगन से अपनी–अपनी स्थलियों पर, अपने अपने गृह में, अपनी–अपनी धाराओं को ले जाकर के एकत्रितम करते हुए जीवन देखो, एक असुतो बन जाता है। और यह जगत उन्मूलन बन करके मानो देखो, नाना प्रकार की रूढ़ियों में परिणत हो गया है।

रूढि से राष्ट्र में निम्नता

मैंने बहुत पुरातन काल में कहा था कि रूढ़ि नहीं होनी चाहिए जितनी मानव समाज में रूढ़ि होती है उतना राष्ट्र मानो देखो, निम्न श्रेणी का बन जाता है और जब राष्ट्रवाद में रूढ़ियाँ नहीं होती तो मानो देखो, रूढ़ियों का निराकरण करने का परिणाम वो कहता है सम्भवा गातप्रह्नि लोकाम् मानो देखो, ये जो रूढ़ि है यह राष्ट्र और समाज का विनाश करने वाली है। कोई भी मानव अपने में विनाश वृत्तियों में जाने के लिए तत्पर हो जाता है। परन्तु जब मैं

यह विचारता हूँ कि आधुनिक काल के राष्ट्रवाद में, पुरातन काल के राष्ट्रवाद में मानो दोनों में अन्तर्द्वन्द्व क्या है? तो उन्होंने कहा कि एक तो अन्तर्द्वन्द्व यह कहलाता है जो मानो देखो, अपने को प्रकाश में लाना चाहता है और जो उसे अन्धकार में ही मानो देखो, श्रवण करना चाहता है। तो मानो देखो, इस प्रकार की जो अमूल्य धाराएँ है यह मानव के समीप आती रहती है एक मानो अपनी धाराओं में रत रहता हुआ मानो देखो, रक्त भरी क्रांति को अपने में शान्त्वना नहीं दे सकेगा। जब मैं वैज्ञानिकों के मध्य में प्रवेश करता हूँ वैज्ञानिक जन नाना प्रकार की तरंगे लेकर के, वे तरंगित हो करके ही मानो देखो, यहाँ अपने रूप में प्रवेश कर गए है।

इसी प्रकार जब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से इन वाक्यों के ऊपर अपनी कुछ टिप्पणियाँ देता हूँ तो उसमें मानो मेरे पूज्यपाद आभां ब्रह्मे वाचो देवं वृत्तियों में रत रह जाते हैं। परन्तु देखो, मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन किया। आज भी मैं उस वर्णन को पुनः से नहीं, केवल यह उच्चारण करने आया हूँ कि मानव को अपने यागां भविते देवाः देखो, प्रत्येक मानव को यागों में परिणत रहना चाहिए। राजा जब तक याज्ञिक नहीं बनेगा तो राष्ट्र कदापि भी ऊँचा नहीं बन सकता।

गुरुदेव का पुरातन वर्णन

मैंने वो काल दृष्टिपात किया, एक समय मेरे पूज्यपाद गुरुदेव और हम कजली वनों से भ्रमण करते हुए मानो शोभनी राजा के समीप पहुँच गए थे। तो शोभनी राजा प्रभु का चिंतन कर रहे थे। तो शोभनी राजा एक मानव तत्वों में रत रहने वाले थे। तो शोभनी राजा जब अन्न का पान कर रहे थे तो मानो राजा हमारे लिए जब जल पात्रों में, वह जल लाए तो वे पात्र स्वर्ण के थे तो मानो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा हे राजन! हम तुम्हारा यह भोजपान नहीं करना चाहते हैं। हम तुम्हारा यह जल अमृत नहीं पान करेंगे। उन्होंने कहा–क्यो? क्योंकि जलो वाचप्रह्वे अमृताः जल तो अमृत है। परन्तु तुम्हारे राष्ट्र में ये जो क्रियाकलाप हो रहा है। मानो देखो, अन्नाद को तुम पान कराना चाहते हो यह हमारे लिए शोभानीय नहीं है। राजा के राष्ट्र में मानो जो अन्नाद होता है वो रक्त से सना हुआ होता है। मानो इसको पान नहीं करेंगे हमारी बुद्धि का क्षय, वह अशुद्ध हो जाएगी।

जब पूज्यपाद गुरुदेव ने यह कहा तो शोभनी राजा आश्चर्य चकित हो करके बोले कि प्रभु! अप्रतो अन्नाद भूतं बह्रे मैं मानो देखो, अन्न को अपने कृषिका उद्गम करके प्राप्त करता हूँ। मेरे असुतो ब्रह्मे वाचं ब्रह्वे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव को तो वाक् स्मरण है अथवा नहीं, परन्तु मुझे स्मरण है। जब यह कहा गया कि मैं स्वयं अपने में कला कौशल में रत रहता हूँ, मैं कृषि का उद्गम करता हूँ और मैं उस अन्न को महापुरुषों को, ऋषि मुनियों को प्रदान करता हूँ। उस अन्न को पा करके ही देखो, ऋषि मुनि अपने में मानो देखो, सचेत चैतन्य की धाराओं में रत हो जाते हैं। इसी प्रकार जब मांगले ब्रह्म वाचः सम्भवः वाचन्नमं ब्रह्मे कृति लोकाम् जब इस प्रकार का अन्न होता है तो देखो, जो पान करता है वो देवपुरी और देवत्व को प्राप्त होता है। आज जब मैं यह विचारता हूँ कि अन्नाद में सूक्ष्मता बन गई है। मानं ब्रह्मे जब अन्नाद में सूक्ष्मता, अन्नाद उस प्रकार का पान नहीं कराया जाता तो मानो देखो, अपने में अनुवृत्तियों में एक गढेले में परिणत हो जाता है।

तो परिणाम क्या मानो देखो, मैं यह उच्चारण कर रहा हूँ कि आधुनिक काल के राष्ट्रवाद को और पुरातन काल के राष्ट्रवाद को जब मैं मापना प्रारम्भ करता हूँ तो वो मापने में नहीं आ रहा है। उसके मापने का देखो, जो एक... **शेष अनुपलब्ध**

4.1.1985
ग्राम मढ़ी, मेरठ

सृष्टि का समन्वय

जीते रहो!

देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद–मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन–पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद वाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वे परम पिता परमात्मा अनन्तमयी हैं। मानो वे ज्ञान–विज्ञान, में निहित रहने वाले है। वे परमपिता परमात्मा पुरोहित हैं। वे पराविद्या के प्रसारण करने वाले हैं मानो वो पराविद्या में निहित रहते हैं, वे परमपिता परमात्मा ''वेदज्ञ ब्रहाः कृतम्'' मानो वेद सर्वत्र कहलाते हैं। जितना भी वेद में ज्ञान है अथवा जितने उसमें शब्द हैं और जितने मन्त्र हैं अथवा ऋचाओं के रूप में जिसका वर्णन आता है मानो वो सर्वत्रता में विद्यमान हैं।

वेदों के विभिन्न पाठ

हमारे यहाँ जब भी वेदों का पठन–पाठन होता रहा है, वेदों के पठन–पाठन के भिन्न–2 प्रकार माने गये हैं जैसे हमारे यहाँ जटापाठ धनपाठ, उदात्त, अनुदात्त और माला पाठ और भी नाना प्रकार माने गये हैं। परन्तु वेदमन्त्र मानव के अन्तःकरण को प्रकाश देनेवाला है। जिस भी काल में मानव, वेद मन्त्रों की ध्वनियों में ध्वनित होता रहा है मानों वेदों का जो अनुपम जो विचारणीय शब्दों में विज्ञान और ज्ञान की प्रतिभा और उसमें जो यौगिकवाद है वह मानव के हृदय में जब समाहित, अपने में धारण करने लगता है तो वह वेदज्ञ बन जाता है। मानो वह वीरत्व को प्राप्त हो जाता है।

तो आओ, मुनिवरो! देखो, हमारा वेद–मन्त्रः उस परम पिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गा रहा है मानो जैसे ये सूर्य हमारे नेत्रों का प्रकाशक है मानो नेत्रों को प्रकाश देता रहता है, इसी प्रकार, वेदरूपी सूर्य अथवा प्रकाश है वह मानव के अन्तःकरण को पवित्र बनाता है। अन्तःकरण में प्रकाश लाता है। तो मुनिवरो! देखो, उस परमपिता परमात्मा का जो वेदज्ञ ज्ञान है वह बड़ा अनूठा और प्रकाश में ले जाता है। मानव तो प्रकाश के लिये सदैव अपने में उपासना करता रहा है और यह विचारता रहता है कि मेरे में अनुपम प्रकाश आ जाये, जिस प्रकाश में मैं रत हो करके और प्रकाशमयी माला को मैं अपने मैं धारण करता रहूँ। क्योंकि मानव एक माला को धारण करना चाहता है। मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब ऋषि मुनि एकान्त स्थलियों पर विद्यमान हो करके परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान में सदैव रत रहे हैं। मैंने यह वाक्य पूर्वकालों में भी प्रायः कई समय उद्गीत रूप में गान गाया है, और यह गान गाने के लिये कि हम परमपिता परमात्मा के अमूल्य–रूप में रत होना चाहते हैं क्योंकि हमारा ये जो मानवीय दर्शन है अथवा मानवीयत्व है यह एक आभा में नियुक्त हो रहा है।

आध्यात्मिकवाद की उडानें

आओ मेरे प्यारे! आज मैं ऋषिमुनियों के, जहाँ मैं आध्यात्मिकवाद की क्या भौतिक विज्ञान और लोक–लोकान्तरों का वर्णन आता रहता हैं वहीं मुनिवरो! देखो आध्यात्मिकवाद और मानव के हृदय में समाहित होने की विवेचना भी आती रही है। मुनिवरो! देखो, जब हमारे ऋषि मुनि मानो एकत्रित हो करके आध्यात्मिकवाद के ऊपर विचार विनिमय करते रहे हैं। हमारे यहाँ पुरातन काल में राष्ट्रवेत्ताओं में राज्यसभाओं में बेटा! देखो, ब्रह्मयाग होता रहा है। ब्रह्मयाग का अभिप्राय यह है कि ब्रह्म के ऊपर चिन्तन करना और ब्रह्म के ऊपर मनन और अपने को इसमें समाहित करना हैं मानो देखो, ज्ञान और विज्ञान की जो

उड़ानें हैं आध्यात्मिकवाद की जो उड़ानें हैं ये परम्परागतों से बेटा! मानवीय मस्तिष्कों में प्रायः होती रही है। आज मैं तुम्हें बेटा! एक माला के कुछ सूत्रों को धारण कराने के लिए आया हूँ कि जो मानव यौगिक क्षेत्र में प्रवेश करता है अथवा यौगिकवाद में जाता है तो वह माला के मनको के ऊपर मनन और चिन्तन करता रहा है।

गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज

आओ मेरे प्यारे! देखो, आज मैं तुम्हें महर्षियों के आश्रम में ले जाना चाहता हूँ। गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज एक समय बेटा! एकान्त स्थली पर विद्यमान थे और महर्षि रेवक मुनि महाराज बहुत बड़े महान तपस्वी मानो अनुष्ठान करने वाले थे। मेरे प्यारे! उन्होंने 105 वर्ष की तपस्या की और केवल गाड़ी के नीचे अपने जीवन को व्यतीत करते रहे। मेरे प्यारे! जब भी वे विचार विनिमय करते तो ज्ञान और विज्ञान की उड़ान और आध्यात्मिकवाद में प्रवेश हो जाते। मानो देखो, प्रत्येक मानव अपने में जब अनुसन्धान करने लगता है, अपने में गम्भीर मनन और चिन्तन करने लगता है तो बेटा! वह परमपिता परमात्मा के अभ्योदय जो प्रकाशरूपी जगत है, उससे भी उपरान्तता की वार्त्ता को अपने में लाना प्रारम्भ करता है। जहाँ तक लोक लोकान्तरों की चर्चाएँ हैं, आकाश गंगाओं, निहारिकाओं और अवन्तिकाओं की चर्चाएँ हैं ये तो मानव, प्रायः अपने लघुमस्तिष्कों में, अपने चिन्तन में लाता रहा है। परम्परागतों से ही जब, क्योंकि विज्ञान तो मानव का एक स्वाभाविक गुण बना हुआ है, क्योंकि मानव जिस भी काल में विज्ञान में प्रवेश करता रहा है, अथवा परमात्मा के ब्रह्माण्ड को निहारने लगता है, और परमपिता परमात्मा के ब्रह्माण्ड को निहारता–निहारता बेटा! वह ब्रह्माण्ड के अन्तिम छोर पर चला जाता है और निहारिकाओं, अवन्तिकाओं के ऊपर मानो देखो, सौर–मण्डलों में प्रवेश होता हुआ सौर–मण्डलों में आकाश गंगाओं को धारण करता हुआ, अवन्तिकाओं और निहारिकाओं में प्रवेश होता रहा है।

चार प्रकार की सृष्टियाँ

मेरे प्यारे! देखो, मानो मैं उस क्षेत्र में न ले जाता हुआ, आज का हमारा वेद मन्त्रः कुछ आभा की चर्चा प्रकट कर रहा है। मुनिवरो! देखो, मुझे वह काल स्मरण आ रहा है जिस काल में गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज के समीप मुनिवरो! देखो, नाना ऋषि मुनियों का एक समूह पहुँचा। उन ऋषि मुनियों में महर्षि प्रवाहण, महर्षि शिलक महर्षि, दालभ्य महर्षि रेणकेतु ब्रह्मचारी वृत्तिका, ब्रह्मचारी कवन्धी सोमवृत्तिका, महर्षि विभाण्डक, महर्षि वैशम्पायन, महर्षि पारेत्वर ऋषि महाराज, महर्षि सोमकेतु आदि ऋषिमुनियों, का बेटा! एक समाज गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज के द्वार पर पहुँचा। गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने उनका स्वागत किया और उनका ''आदरं ब्रहे'' मानो स्वागत करते हुए वह बोले–कहो, ब्रह्मे तुम्हारा आगमन कैसे हुआ? गाड़ीवान मुनि ने जब यह कहा तो मुनिवरो! देखो; महर्षि प्रवाहण मुनि महाराज उपस्थित हुए। महर्षि प्रवाहण मुनि महाराज ने कहा कि भगवन! हम आज इसलिये आये हैं कि आज हम बहुत समय की वार्त्ता को स्मरण कर रहे थे। एकान्त स्थली पर विद्यमान हो करके, इस संसार के सम्बन्ध में, हम मनन कर रहे थे और मनन करते हुए यह विचार रहे थे कि ये संसार मानो क्या है?

ये जो संसार है जो दृष्टिपात आने वाला जगत् है, यह नाना प्रकार लोक लोकान्तरों वाला, यह जगत् नाना आकाश–गंगाओं वाला जगत्, निहारिकाओं, अवन्तिकाओं वाला जगत ''अप्रोतं ब्रहे'' यह जो जगत् है, जिसमें यह संसार अपने में नृत्य कर रहा है। मानो देखो यह ब्रह्माण्ड है और ब्रह्माण्ड के नीचे जब हम देखो, पृथ्वीतल पर आते हैं तो इसमें मानो चार प्रकार की सृष्टि दृष्टिपात आती है। वह चार प्रकार की सृष्टि मानो सबसे प्रथम स्थावर कहलाती है। दूसरी सृष्टि का नाम अण्डज है, अण्डज के पश्चात् जंगम है और जंगम के पश्चात उद्भिज कहलाती है। यह जो चार प्रकार की सृष्टि है, मानो ये पृथ्वी के गर्भ, में बाह्यता में दृष्टिपात आ रही है। जब हम विचारते हैं कि स्थावर सृष्टि में भी अनन्तमयी ज्ञान और विज्ञान है, अनन्तमयी मानो देखो, आयु का वेग विद्यमान है। अण्डज सृष्टि में भी नाना प्रकार की मानो देखो, योनियों का व्यवधान है ''नाना ब्रहे वृत्तम्'' देखो, नाना प्रकार माने गये हैं। इसी प्रकार जंगम सृष्टि में भी मानव से लेकर के नाना पशु तक जंगम सृष्टि कहलाता है। उन सृष्टियों के वृत्तों में उद्भिज जिसे हम श्वेदज भी कहते हैं। अहा! ये चार प्रकार की सृष्टियों वाला जो जगत हैं, जो हमें प्रायः दृष्टिपात आता है जब हम विज्ञान के वांगमय में प्रवेश होते हैं, तो पाँच प्रकार की गतियाँ भी उसके साथ दृष्टिपात आ रही हैं। हे प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं कि ये संसार किसमें प्रतिष्ठित रहता है, हम इसकी प्रतिष्ठा को जानना चाहते हैं?

संसार की प्रतिष्ठा

मेरे प्यारे! देखो, महर्षि प्रवाहण मुनि ने सबकी अध्यक्षता करते हुए आचार्यों की, गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज से यह प्रश्न किया कि महाराज! यह संसार किसमें ओतप्रोत हो जाता है? चार प्रकार की सृष्टि नाना प्रकार के लोक–लोकान्तरों में दृष्टिपात आती हैं। जब हम पृथ्वी के गर्भ से ऊर्ध्वा में गति करते हैं, मंगल–मण्डल में प्रवेश करते हैं तो मंगल में भी प्रायः देखो, हमें इसी प्रकार की सृष्टि दृष्टिपात आती है। जब हम मानो देखो, ऋषि मुनियों के वांगमय में प्रवेश करते, उनकी उड़ानें रही हैं लोक–लोकान्तरों में जाने की, जब हम शुक्र–मण्डल में प्रवेश करते हैं तो वहाँ भी प्रायः हमें चारों प्रकार की सृष्टियाँ दृष्टिपात आती हैं। इसी प्रकार और भी नाना प्रकार के मण्डल हैं।

आज मैं उस गणना में तो जाना नहीं चाहता हूँ परन्तु देखो, ये सर्वत्र ब्रह्माण्ड में प्रायः ये चारों प्रकार की सृष्टियों का अवधान है। ये परमपिता परमात्मा का अनूठा ये जगत् है, इस जगत में तो मैं विशालता के रूप में जाना नहीं चाहता हूँ परन्तु यह जानना चाहता हूँ कि प्रभु! ये चारों प्रकार की जो सृष्टियाँ हैं ये मानो देखो, किसमें प्रतिष्ठित होती है? किसमें ओत–प्रोत हो जाती है? किसमें ये समाहित हो जाती है?

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब यह प्रश्न किया तो गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज इसका उत्तर देने लगे। उन्होंने कहा–कि महाराज! ये जो दृष्टिपात आने वाला जो जगत् है, चाहे निहारिका, आकाश–गंगाओं और सौर मण्डलों में व्यक्त रहने वाला जगत् हो, यह जो संसार है, यह सर्वत्र मानो देखो, पार्थित्व में समाप्त हो जाता है। ये जो दृष्टिपात आ रहा है यह पृथ्वी में ओत–प्रोत हो जाता है। यह जब पृथ्वी में ओत–प्रोत हो जाता है क्योंकि ये गुरूत्व अपने में समाहित हो जाता है और गुरुत्वता के रूप में दृष्टिपात आता रहता है। तो मानो, देखो, ये ''अब्रहं ब्रह्माः वाचन्नमं ब्रह्मे कृतम'' वेद की आख्यिका कहती है कि जो ''सम्भव बृहि'' मानो देखो, ये पृथ्वी में सर्व प्रतिष्ठित हो जाती है। ये पृथ्वी में ओत–प्रोत होने वाला, चारों प्रकार की सृष्टि वाला जगत्, ये पृथ्वी में ओत–प्रोत हो जाता है। मानो ये उसी में प्रतिष्ठित हो जाता है, जहाँ से जिसका प्रारम्भ होता है वहीं उसका समापन हो जाता है। मानो ये प्रकृति की एक नियमावली मानी गयी है। जहाँ जिसकी प्रतिभा का रूपान्तर अपृत्ति होता है वहीं उसकी आभा में यह जगत् भी समाहित हो जाता है।

पृथ्वी की प्रतिष्ठा

मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार उत्तर दिया कि यह गुरुत्व पृथ्वी में सब ओत–प्रोत हो जाता है। यह दृष्टिपात नहीं आ रहा है। यह मानो देखो, उसी में परोक्ष रूप से, अपने में समाहित होता हुआ दृष्टिपात आता है। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि प्रवाहण ने नतमस्तक होकर कहा–हे प्रभु! जब हम आचार्यकुल में अध्ययन करते थे तो मानो देखो, ऋषि मुनि अपने में अध्ययन करना प्रारम्भ करते हैं तो मानो देखो, यह विचारते हैं कि यह व्याख्या तो हमने कई साल में श्रवण की है कि यह पृथ्वी में ओत–प्रोत हो जाता है। यह पृथ्वी की प्रतिष्ठा क्या है? क्योंकि ये पृथ्वी भी तो कहीं न कहीं प्रतिष्ठित हो जाती है। जहाँ मानो यह जगत पृथ्वी में ओत–प्रोत है, इस पृथ्वी की भी कोई प्रतिष्ठा है? तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा–कि यह जो पृथ्वी है यह ''मानं'' ब्रहे

कृतं ब्रहाः'' मानो देखो, यह पृथ्वी आपो में ओत–प्रोत हो जाती है। जल में ओत–प्रोत हो जाती है, यह उसी में समाहित हो जाती है, उसी में प्रतिष्ठित हो जाती है। एक–एक, कण–कण में प्रवेश कर जाता है। जितना गुरुत्व है इसको धारण करने वाला मानो, इसको अपने में समाहित करने वाला, यह आपो कहलाता है। बेटा! आपो ही तो मानव का, आसन बना हुआ, आपो ही तो ओढ़न बना हुआ है, आपो ही तो पासे बने हुए हैं।

जब बेटा! वह विचारता है कि यह आपो में ही ओत–प्रोत रहने वाला है। मेरे प्यारे! मैंने तुम्हें कई कालों में वर्णन किया है, माता के गर्भस्थल में मानो देखो, बिन्दु रूप में जब शिशु का प्रवेश होता है, शिशु का जब आकार बनता है। माता के गर्भस्थल में हम जैसे पुत्रों का निर्माणवेत्ता निर्माण करता हुआ, उसमें स्थिर करता है, तो मानो उस शिशु की देवत्व रक्षा मानो एक आपोमयी ज्योति है। यह आपो ही इसका आसन रहता है, आपो ही ओढ़न रहता है, उसके पासे भी वो बने हुए हैं। मेरे प्यारे! देखो, हम जैसे पुत्र माता के गर्भ में, उस आपो ज्योति के आँगन में उसी में प्रवेश करते रहते हैं अथवा उसी में ओत–प्रोत रहते है। इसी प्रकार मुनिवरो! देखो, यह पृथ्वी भी मानो देखो, आपो में ओत–प्रोत हो जाती है। आपो ही प्राण का वर्धक करने वाला है, आपो ही ज्योति बन करके अन्नाद का प्राण बन जाता है। यह मानो देखो, अन्नाद का प्राण ही, जितना भी सृष्टि–चक्र है, सबका मुनिवरो! देखो, यह प्राणरूप बनकर के सबको रसों का पान कराने वाला है। यह आपोमयी ज्योति है, आनन्दमयी में प्रवेश कराने वाला है। मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि कहता है कि आपो की हमें उपासना करनी है। यह आपो ही तो मेरे प्यारे! अपने में समाहित हो करके पृथ्वी को अपने में समाहित कर लेता है, अपने गर्भ में धारण कर लेता है।

आपो की प्रतिष्ठा

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा ''आपं ब्रह्मे लोकाम्'' हे प्रभु! हम अपने में अन्वेषण करते रहें हैं, विचारते रहे हैं कि आपोज्योति की प्रतिष्ठा क्या है? यह किसमें ओत–प्रोत हो जाता है? उन्होंने कहा आपोज्योति अग्नि में प्रतिष्ठित हो जाता है। यह अग्नि अपने में समाहित कर लेती है। यह अग्नि कही अणु रूप में है, कहीं परमाणु के रूप में विद्यमान रहती है। मेरे प्यारे! यही तो संसार के ज्ञान और विज्ञान का मूलक बना हुआ है बेटा! विचारने में आता है, अनुसन्धान करने से प्रतीत होता है कि यह अग्नि ही काष्ठों में रहने वाली है, यही अग्नि कहीं बढ़वानल अग्नि बनकर के समुद्रों में रहती है, यही अग्नि कहीं लोक–लोकान्तरों का सूत्र बनी हुई है। जो यह अणु के रूप में विद्यमान रहती है मानो यही अग्नि है बेटा! जो मानव के गृह में गृहपथ्य नाम की अग्नि बनकर के रहती है।

अग्नि के प्रकार

आज मैं बेटा! विशेष विवेचना नहीं देता हुआ विचार केवल यह कि यह जो अग्नि है, यह भिन्न–भिन्न प्रकार की, कहीं समुद्रों में अग्नि प्रदीप्त हो जाती है तो जल–प्लावन आ जाते हैं। मानो यही अग्नि जब, सूर्य में प्रवेश कर जाती है, सूर्य में कहीं, कहीं जब अग्नि प्रदीप्त होती है, तब मुनिवरो! देखो, उसके विभाग बनकर के मुनिवरो! देखो! दूसरी आभा में ओत–प्रोत होने लगते हैं। लोक–लोकान्तरों में उसकी प्रतिभा निहित रहती है। यही अग्नि उष्ण बनाने वाली है, उष्णता देने वाली है, मेरे प्यारे! देखो, यही अग्नि समुद्रों के आँगन में, मध्य में जब प्रवेश कर जाती है, तो जल को तपाती रहती है ये जल अपने में अभ्युदय होता रहता है, अमृत को बिखेरता रहता है। यही अग्नि है बेटा! वो प्रकाश, और तेजोमयी बन करके मानव के हृदय में प्रवेश होती रही है। यही अग्नि मानो वैज्ञानिकों के युग में प्रवेश हो करके, वैज्ञानिकों की मानो विज्ञानशाला को ऊर्ध्वा में प्रवेश करा देती है। मेरे प्यारे! वैज्ञानिक जब अणु और परमाणु की प्रतिभा में प्रतिष्ठित हो जाते हैं तो बेटा! देखो, लोक–लोकान्तरों के यातायात में चले जाते हैं।

मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें निर्णय देते हुए कहा था–कि देवर्षि नारद मुनि महाराज के विद्यालय में, उनकी विज्ञानशालाओं में महात्मा ध्रुव जैसे मुनिवरो! देखो, ध्रुव–मण्डलों की यात्रा करते रहे हैं। नाना प्रकार के लोक–लोकान्तरों में यातायात बनाना विज्ञान के वांगमय में होता रहा है। आज मैं बेटा! यौगिकता में न जाता हुआ, केवल यह वाक्य उच्चारण कर रहा हूँ कि मुनिवरो! देखो, नाना प्रकार के ज्ञान और विज्ञान के वांगमय में जब अग्नि का, उनके अपने स्थान को चुनौती प्रदान की जाती है तो अग्नि का प्रमुख स्थान रहा है। यह अग्नि ही द्यौ–लोकों में प्रवेश करती हुई मेरे प्यारे! ये सूर्य–मण्डल को उसमें ऊर्ज्वा देकर के यह सूर्य ऊर्ज्वावादी है।

दिव्य दृष्टि

मेरे पुत्रो! देखो, उसी आभा में रत होने वाले ऋषि गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने उत्तर देते हुए कहा कि हे ऋषिवर! हे प्रवाहण जी! तुमने यह जान लिया होगा कि यह अग्नि ही हमारे प्रकाश का द्योतक है, अग्नि ही मानो देखो, प्रकाश के देने वाली है। ''अग्नं ब्रह्माः'' देखो, यह एक अणु के रूप में विद्यमान रहती है। एक समय ऋषि मुनियों ने उद्घृत करते हुए कहा–कि जब एक अणु का विभाजन किया गया, तो मानो! देखो, दिव्यदृष्टि से ऋषि मुनियों ने अणु को दृष्टिपात किया तो बेटा! सर्वत्र ब्रह्माण्ड, उसमें दृष्टिपात आने लगा। एक–एक, अणु– अणु में परमाणुवाद में बेटा! ब्रह्माण्ड का ब्रह्माण्ड निहित रहता है।

अग्नि की प्रतिष्ठा

तो मुनिवरो! देखो, इस अभ्युदय में जाते हुए ऋषि ने, उन्हें यह प्रश्न किया कि महाराज! अग्नि के ऊपर तो हमारे पूज्यपाद गुरुदेव बहुत कुछ विवेचना देते रहे हैं। हम यह जानना चाहते हैं भगवन्! कि देखो, अग्नि किसमें प्रतिष्ठित रहती है? अग्नि का भी तो कोई मानो देखो, गृहालय है। तो उस समय मुनिवरो! देखो, वर्णन करते हुए गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने कहा, कि ''ब्रह्मे वाचप्रमाणं लोकां वाची सम्भवः'' मानो देखो, यह अग्नि ही वायु में ओत–प्रोत हो जाती है, वायु में प्रतिष्ठित हो जाती है। वायु अपने में धारण करने वाली है। क्योंकि अग्नि की जो माँ है वह मानो देखो, वायु कहलाती है। वायु में प्राणत्व है, गति है, वो गति, इन तीन प्रकार के परमाणुओं को लेकर के गति करती रहती है। मुनिवरो! देखो, गुरुत्व, तरलत्व, और तेजोमयी परमाणुओं को लेकर के वायु ही तो गति दे रही है।

प्रकृति और ब्रह्म की छाया

मेरे प्यारे! देखो, वायु अपने में मानो देखो, कृतिका कहलाती है। ये गति को प्रदान करती हुई, मानो देखो, वायुवेग में गति कर रही है। जब वह गतिवान परमाणुओं की आभा में, अपने में धारण करने वाली है, अपने में, जब उन्हें गति प्रदान कर रही है, तो वह वायुतव कहलाती है, वहीं तो वायु है। मुनिवरो! आओ मेरे प्यारे! वायु प्राणत्व है, यह प्राण की सत्ता है। यह ब्रह्म के एक रूप में, एक छाया रूप बनी रहती है, ब्रह्म की छाया है। जैसे ये मानो प्राण है तो ब्रह्म की छाया माना गया है, कहीं–कहीं बेटा! देखो, आत्मा की छाया भी, मानो देखो, जैसे प्रकृति की छाया ये मन है इसी प्रकार मुनिवरो! देखो, ब्रह्म की छाया प्राण है। यह प्राण और मन दोनों का विभाजन ही तो मुनिवरो! विभक्त होना है, यही तो नाना प्रकार के रूपों में दृष्टिपात आ रहा है।

वायु की प्रतिष्ठा

तो वेद के ऋषि ने जब इस प्रकार बेटा! वर्णन किया तो वर्णन करते हुए आदि आचार्यों ने मेरे प्यारे! देखो आगे ब्रह्मा उन्होंने कहा प्रभु! हम विशेषता अथवा व्याख्या नहीं चाहते हैं। यह व्याख्या तो आचार्य जनों ने हमें वर्णन की है। हम ये जानना चाहते हैं कि यह जो वायु है, मानो देखो, वायु की प्रतिष्ठा, यह कहाँ रहती है? उन्होंने कहा– वायु अन्तरिक्ष में प्रतिष्ठित हो जाता है। अन्तरिक्ष में ही तो अपनी गति करता रहता है। परमाणुओं को लेकर के अन्तरिक्ष उन्हें गतियाँ देता रहता है। यह वायु ही अन्तरिक्ष में ओतप्रोत है। अन्तरिक्ष में ही प्रतिष्ठित हो जाता है। सर्वत्र जितना भी परमाणुवाद है वह मेरे प्यारे! सर्वत्र अन्तरिक्ष में ओत–प्रोत है। मुनिवरो! देखो, मानव के शब्द से ले करके मानव के शरीर के भस्मासन्न होने से मानो देखो, सब परमाणु अन्तरिक्ष में ओत–प्रोत रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, मानव का शव बन जाता है, शव को अग्नि में प्रवेश कर देते हैं, और अग्नि मेरे प्यारे! परमाणुओं को अपने, अपने रूप में प्रवेश करा देती है। मुनिवरो! वह शव, गुरुत्व, तरलत्व और तेजोमयी, वायु के अब्रत रूपों में सब देखो, अन्तरिक्ष में ओतप्रोत हो जाते हैं। अन्तरिक्ष अपने में देखो, भव्यतम आभा में परमाणुओं का समूह है।

अन्तरिक्ष में परमाणुओं का समूह

मेरे प्यारे! शब्दों का समूह है। मैंने कई काल में वर्णन कराते हुए कहा कि यहाँ वैज्ञानिक क्या, यज्ञवेत्ता क्या, याज्ञिक भी अपने पूर्वजों का दर्शन करते रहे हैं। अन्तरिक्ष में बेटा! देखो, भारद्वाज इत्यादि मुनियों के यहाँ तो यन्त्र इस प्रकार के निर्माणित किये गये और मुनिवरो! देखो, विज्ञान के युग में हम जाना नहीं चाहते हैं, विज्ञान केवल अपने आसन पर एक अनूठे रूप में विद्यमान रहता है। यह आध्यात्मिक विज्ञान अपने में देखो, अनूठा है। वेद का आचार्य यह कहता है कि अन्तरिक्ष अपने में सर्वत्रता को सूक्ष्म रूप में समाहित कर लेता है। नाना ब्रह्माण्ड को अपने में समाहित कर रहा है।

अन्तरिक्ष की प्रतिष्ठा

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि प्रवाहण ने कहा कि हे प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं कि अन्तरिक्ष का भी तो कहीं न कहीं समापन होता है। उन्होंने कहा–यह जो अन्तरिक्ष है, यह शून्य बिन्दु में प्रवेश कर जाता है मानो इसे महत्तत्व कहते हैं। जिसे महत् कहते हैं मानो देखो, यह उसमें समाहित, ये परमाणु उस बिन्दु रूप में प्रवेश कर जाते हैं, बिन्दु रूप बन जाते हैं। अपने ही स्वरूप में मानो बिन्दु रूप में अभ्युवृत्तियाँ हैं जिनमें ओतप्रोत हो जाते हैं।

मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो उन्होंने कहा–यह शून्य बिन्दु ही तो विकास है और विकास ही शून्य बिन्दु है। जब यह वर्णन उन्होंने किया तो मेरे प्यारे! अपने में इसी प्रकार प्राणस्तव, मनस्तव को जानकर के देखो, मानव भी शून्य गति को प्राप्त होता रहता है।

ध्रुवा से ऊर्ध्वा और ऊर्ध्वा से ध्रुवा में गति

इतने में बेटा! प्रवाहण ऋषि ने गाड़ीवान से कहा–हे प्रभु! मैं यह जानना और चाहता हूँ कि ऋषि मुनियों की जो शैली रही है। एक समय मानो देखो, हमारा, ऋषि मुनियों का समूह, जब हमें ब्रह्म जिज्ञासा जागरूक हुई और यह निश्चय हो गया कि ब्रह्म तो है परन्तु ब्रह्म की जिज्ञासा और पिपासा मानो बलवती होते ही एक समय हम मगध राष्ट्र में पहुंचे। मगध राष्ट्र में जाकर के कात्यायन के गृह में हमारा वास हुआ। कात्यायन ने यह प्रश्न किया था कि शून्य बिन्दु से आगे चलकर के क्या है? मुनिवरो! देखो, ऋषि मुनियों की विचार–विनिमय करने की जो शैली रही है वह ध्रुवा से ऊर्ध्वा में और ऊर्ध्वा से ध्रुवा में रही है। तो हम भगवन! देखो, ध्रुवा की विवेचना और चाहते हैं। आपने ध्रुवा से ऊर्ध्वा में तो हमें पहुँचा दिया परन्तु ऊर्ध्वा से ध्रुवा में हमें और पहुँचा दीजिये।

शून्य की प्रतिष्ठा

मेरे प्यारे! देखो, इतने में ऋषिवर बड़े मग्न हुए और गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने कहा कि हे ऋषि मुनियो! तुम अपनी पंक्ति लगा लो। उन्होंने पंक्ति लगा ली तो मानो देखो, उन्होंने कहा–अब मैं तुम्हारी पंक्तियों की गणना कराना चाहता हूँ। उस पर तुम देखो, विचार विनिमय करना। मेरे प्यारे! ऋषि कहता है कि यह शून्य बिन्दु कहाँ ओत–प्रोत होता है? मेरे प्यारे! उन्होंने कहा–कि यह सूर्य लोकों में ओत–प्रोत होता है। सूर्य ही इस अमृत को देने वाला है। देखो, वह "सम्भवः ब्रह्माः वृत्तं सम्प्रोकेतु प्रहा वास्त्वेमा वर्णस्सुतं प्रवाहः" वेद के आचार्य ने कहा कि यह शून्य बिन्दु मानो चन्द्रमा में ओत–प्रोत रहता है। यह चन्द्रमा ही तो अमृत को देने वाला है। यह चन्द्रमा रात्रि को, अन्धकार को अपने गर्भ में धारण करने वाला है। वो "गर्भस्तं ब्रह्माः" वो गर्भ में धारण कर रहा है, मेरे प्यारे! यही संसार को अमृत देने वाला है। क्या वनस्पतियाँ हैं, क्या गुरुत्व वाला परमाणु है, तरलत्व, उस अमृत को बहाता रहता है। जब मुनिवरो! इस प्रकार ऋषि ने इसकी विवेचना अद्वितीय रूप में प्रारम्भ की। वेद का ऋषि कहता है कि महाराज! ये चन्द्रमा ही अमृत है, यही बृहस्पति है, यही वैद्यों के वैद्य राजों के हृदयों में प्रवेश हो करके नाना औषधियों का, नाना प्रकार के रसों का अवधान कर रहा है।

चन्द्रमा की प्रतिष्ठा

मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने यह कहा तो ऋषि ने पुनः प्रश्न किया कि महाराज! चन्द्रमा की प्रतिष्ठा क्या है? उन्होंने कहा–कि चन्द्रमा की प्रतिष्ठा यह सूर्य है। सूर्य से ही तो चन्द्रमा प्रकाश को ले करके, अमृत को बहाता है और यह सूर्य ऊर्ज्वा को देने वाला है। वह सूर्य ही तो देखो, उदेव कहलाता है, यही तो आदित्य है, यही तो भास्कर कहलाता है, यही वर्ष कहलाता है। इसके वैदिक साहित्य में भिन्न–भिन्न प्रकार के पर्यायवाची शब्द माने गये हैं। मानो देखो, ये सूर्य प्रकाश और ऊर्ज्वा को देने वाला है। यह ऊर्ज्वावादी है। यह मानो द्यौ से प्रकाश लेकर के ही तो मुनिवरो! देखो, यह प्रकाश देता रहता है। यह प्रकाश में अभ्युदय होता रहता है। इसकी जो नाना प्रकार की ऊर्ज्वा है, वही तो ऊर्ज्वा मानो देखो, शिव का वीरत्व कहलाता है।

मेरे प्यारे! देखो, यह प्रकाश अनुपम ज्योर्तिमयी और सत्य अरूणिमा को प्रदान करने वाला है। मेरे प्यारे! देखो, वह अपने में प्रकाश देता हुआ मुनिवरो! देखो, नाना प्रकार की वृष्टि के मूल में विद्यमान रहता है। वह सूर्य मानो देखो, नाना प्रकार के लोक–लोकान्तरों को प्रकाश और आभा में उदय होने वाला है।

सूर्य की प्रतिष्ठा

तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने प्रकार वर्णन किया तो उन्होंने कहा कि हे प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं, कि यह जो सूर्य है, इसकी भी तो कोई प्रतिष्ठा है? उन्होंने कहा, सूर्य–मण्डलों की जो प्रतिष्ठा है, 'वह बेटा! देखो, गन्धर्व–लोक माने गये हैं। मैंने गन्धर्व लोकों की चर्चा, इससे पूर्वकाल में भी प्रकट की है। आज भी मानो देखो, वे चर्चाएँ मुझे स्मरण आ रही हैं। बेटा! देखो, गन्धर्व–लोकों से ही जैसे मैंने वर्णन कराया, यह सौर–मण्डलों की चर्चा करते हुए, आचार्यों ने यह निर्णय दिया है, योगाभ्यासवादियों ने कि ये जो सौर–मण्डल है, यह जो मानो मनका है, जिसे हम गन्धर्व कहते है यह गन्धर्व सौर–मण्डल का अन्तिम मनका कहलाता है। मानो देखो, पृथ्वी से लेकर के ये गन्धर्व तक देखो, अन्तिम मनका है। इस मनके से ही सूर्य देखो, वह द्यौ से उसका समन्वय रहता है, और द्यौ से सूर्य का और सूर्य द्यौ से प्रकाश लेकर के उसको बिखेर देता है।

मेरे प्यारे! देखो, इस गन्धर्व–मण्डल आतल में देखो, पारत्व एक धातु उसमें विद्यमान रहती है। वही मुनिवरो! देखो, द्यौ में प्रकाशित होती रहती है और वही मुनिवरो! देखो, अपने में अभ्युदय होता हुआ, सूर्य प्रकाश के मूल में प्रकाश देता हुआ ऊर्ज्वा देता हुआ, मुनिवरो! देखो, वैज्ञानिकों ने, जब मैं विज्ञान के युग में जाता हूँ तो बहुत से वैज्ञानिक ऐसे हुए हैं जिन्होंने सूर्य की किरणों के साथ अपने यन्त्रों को मानो देखो, सूर्य की परिक्रमा के लिये परिणत किया है। आज मैं विज्ञान के युग में जाना नहीं चाहता हूँ।

गन्धर्व–लोकों की प्रतिष्ठा

जब मुनिवरो! देखो, ऋषि ने गन्धर्व–मण्डल की चर्चाएँ की तो बेटा! देखो, ऋषि नतमस्तक हो करके गाड़ीवान रेवक मुनि से बोले–कि महाराज! हम यह जानना और चाहते हैं कि यह गन्धर्व लोक किसमें प्रतिष्ठित होता है? इसकी प्रतिष्ठा क्या है? उन्होंने कहा इन्द्रलोक। देखो, इन्द्र की हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में भिन्न–भिन्न प्रकार की चर्चाएँ हैं, भिन्न–भिन्न प्रकार के पर्यायवाची शब्द हैं। इन्द्र नाम राजा का है, इन्द्र नाम मानो देखो, मण्डल का है, इन्द्र नाम परमपिता परमात्मा का है, इन्द्र नाम विद्युत का है, यहाँ नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्द आते हैं। इन्द्र कहते हैं जो अधिपति है, इन्द्र कहते हैं कि जो मानो सौर–मण्डलों के ऊपर देखो, जैसे माला होती है और माला के ऊपर एक सुमेरू होता है, तो इन्द्र मानो देखो, सुमेरू के सदृश कहलाता है। इसी प्रकार राष्ट्र में भी उसी को इन्द्र कहते हैं जो सब राजाओं के ऊपर एक सुमेरू कहलाता है, उसे इन्द्र कहते हैं। इसी प्रकार सब विद्युतों के मूल में, सब तरंगों के मूल में एक विद्युत है और विद्युत देखो, उसके ऊर्ध्वा में, उसके गर्भ में इन्द्र रहता है मानो देखो, उस माला का वह सुमेरू कहलाता है।

इन्द्र की प्रतिष्ठा

बेटा! मैं विशेष विवेचना में नहीं ले जाना चाहता हूँ, यह तो विशाल वन है। आज मैं एक, एक मनके की चर्चा करने लगूं तो बेटा! बहुत समय चाहिए। आज मैं तुम्हें संक्षिप्त परिचय ही देने आया हूँ। इस माला के मनकों की तुम्हें गणना कराना चाहता हूँ। मेरे पुत्रो! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो आचार्य ने पुनः यह प्रश्न किया कि महाराज! हम यह जानना चाहते हैं, कि ये जो इन्द्र है अनेक रूपों वाला, यह किसमें प्रतिष्ठित रहता है? उन्होंने कहा–हे ऋषिवर! ये जो इन्द्र है, ये मानो देखो, प्रजापति में ओत–प्रोत रहता है। जो प्रजा का प्राणत्व करने वाला है, मानो देखो, प्रजापति पितर कहलाता है। इस प्रकार कोई भी हो वही पितर कहलाता है, वही प्रजापति है। मेरे प्यारे! परमपिता परमात्मा प्रजापति कहलाता है, जब देखो, प्रजाओं के हृदयों में ओत– प्रोत होने वाला है, मानो देखो, आत्मा के समीप जो विद्यमान है, जो चेतनामयी गति कर रहा है, वह मानो प्रजापति है। प्रजापति नाम बेटा! राजा को भी कहा जाता है। जो मानो प्रजा का संचार रूप से, निर्विघ्नता से अपने में पालन करने वाला है। प्रजापति नाम बेटा! देखो, गृहस्वामी का भी कहलाता है। जो गृह को ऊर्ध्वा में गति कराने वाला है, उसका नाम भी प्रजापति है। प्रजापति नाम बेटा! सूर्यों का भी है। मानो देखो, यहाँ नाना प्रकार प्रजापति के आते हैं परन्तु यह प्रजा ही अपने में प्रजापति को, जो धारण कर रहा है, उनका पालन कर रहा है, उसका नाम प्रजापति कहलाता है।

प्रजापति की प्रतिष्ठा

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा ''ब्रह्मे वाचप्रवाहा प्रजं ब्रह्मे कृतम्'' हे प्रभु! वेद की आख्यिका यह प्रश्न कर रही है कि यह प्रजापति किसमें प्रतिष्ठित रहता है? क्योंकि प्रजापति की भी तो कोई प्रतिष्ठा होगी? तो मुनिवरो! देखो, ऋषि ने वर्णन करते हुए कहा कि यह जो प्रजापति है, यह मानो देखो, याग में प्रतिष्ठित हो जाता है। मेरे प्यारे! ''यागां भविता देवं वाचन्नमं यागाः'' यह याग में प्रतिष्ठित हो जाता है। मानो ये जो संसार में जो सुक्रिया–कलाप हो रहा है यह सर्वत्र याग है। जो सुगन्धियुक्त है, उस सर्वत्र का नाम याग माना गया है और उस याग में बेटा! देखो, प्रजापति ओत–प्रोत हो जाता है, मानो उसी में प्रतिष्ठित हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, वह जो प्रजापति है, वह हमारा ब्रह्मे। मानो प्रजापति याग में प्रतिष्ठित हो जाता है। हे यज्ञमान! तेरे याग में ही तो मानो प्रजापति ओत–प्रोत है। हे यज्ञमान! तेरी जितनी हृदय की भावना पवित्र होती हैं वे सुगन्धि के साथ में मानो देखो, वह दिव्य बन करके वह मुनिवरो! देखो, आदि पुरुष जो प्रजापति है उसके गर्भ में वह ओत–प्रोत हो जाती है। मेरे प्यारे! देखो, प्रजापति यज्ञ में ओत–प्रोत हो जाता है। ''यज्ञां भवितां लोकां यज्ञं महाव्रति'' मेरे प्यारे! देखो, यज्ञ में ओत–प्रोत होने वाला, अभ्युदय होने वाला जगत है।

याग की प्रतिष्ठा

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने ये यज्ञ की गाथा, यज्ञ के शब्द श्रवण करते हुए उन्होंने यह प्रश्न किया कि महाराज! ये याग किसमें प्रतिष्ठित रहता है? मैं याग को प्रतिष्ठा में दृष्टिपात करना चाहता हूँ? मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा–यह जो याग है यह दक्षिणा में ओत–प्रोत हो जाता है। मानो देखो, दक्षिणा ही याग है, याग ही दक्षिणा है। ऋषि ने इसकी विवेचना करते हुए कहा कि देखो, याग में द्रव्य देना, मानो देखो, वह दक्षिणा यज्ञ नहीं है ''द्रव्य ब्रह्माः वाचं ब्रह्मे'' मानो, देखो, दक्षिणा का अभिप्राय यह है कि द्रव्य देना तो उदर की पूर्ति है, ऋषियों ने, आचार्यों ने, अध्ययनवेत्ताओं ने कहा है, वेद के मन्त्रों के वांगमय में प्रवेश होकर के कहा है कि होता गणजन इसलिये प्रार्थना करते हैं कि मेरे यज्ञमान की वाणी पवित्र हो जा ये। मेरे प्यारे! देखो, उद्गीत गाने वाला उद्गाता, इसलिये गान गा रहा कि मेरे यज्ञमान की वाणी पवित्र हो जाये। मेरे प्यारे! वहाँ अध्वर्यु इसलिये द्रव्य प्रदान कर रहा है कि मेरे यज्ञमान की वाणी पवित्र हो जाये। वाणी का पवित्र होना, क्योंकि यही ध्वनि है।यही तो ध्वनि है बेटा! जो ध्वनित हो रही है, मानो देखो, प्रत्येक अणु की बेटा! गूंज आ रही है वायु वेग में गति करने वाली है। वह भी बेटा! अग्नि के परमाणुओं को मिलन करते हुए ध्वनि हो रही है, पृथ्वी से मिलान करती हुई वह भी ध्वनित हो रही है। तो विचार क्या? मेरे प्यारे! देखो, ध्वनि आ रही है, ध्वनि को चिन्तन करने वाली वाणी है और वाणी को पवित्र बनाने के लिये, हृदय को पवित्र बनाने के लिये, मुनिवरो! देखो, हृदय पवित्र होगा तो वाणी पवित्र होगी! वाणी पवित्र होगी तो बेटा! देखो ध्वनिवाद पवित्र होकर के उसका वायुमण्डल भी पवित्र हो जायेगा।

दक्षिणा की प्रतिष्ठा

तो मेरे प्यारे! मैं तुम्हें विशेषता में नहीं ले जाना चाहता हूँ। विचार क्या है? मुनिवरो! देखो, यज्ञमान अपनी कृतियों को बेटा! दक्षिणा में प्रदान कर देता है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि प्रवाहण ने कहा प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं कि यह दक्षिणा कहाँ प्रतिष्ठित रहती है? मेरे प्यारे! देखो, ऋषि गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने उत्तर दिया कि यह जो वाणी है, यह जो ध्वनि है, यह वाणी मानो देखो, हृदय में यह वाणी श्रद्धा ''दक्षिणां ब्रह्माः दक्षो वृत्ताः'' यह दक्षिणा द्रवित हो गयी है ओत–प्रोत हो गयी है इसलिये देखो, यह जो दक्षिणा है यह श्रद्धा में है। इसीलिये यह संसार सब मानो देखो, श्रद्धा में ओत–प्रोत रहता है। यह संसार श्रद्धामयी है। प्रत्येक मानव श्रद्धालु बन जाता है तो उसका जगत एक नवीन वन जाता है, उसका जगत एक बन जाता है। जब मानो अश्रद्धा हो जाती है तो हृदय में, विकृतियाँ आ जाती हैं। मेरे प्यारे! देखो, अश्रद्धा में विकृतियाँ आ जाती है यह देखो, प्रियता में नहीं रहता। विचार क्या, मुनिवरो! देखो, दक्षिणा मानो देखो, श्रद्धा में रहती है।

श्रद्धा की प्रतिष्ठा

ऋषि ने आगे जब प्रश्न किया कि महाराज! ये श्रद्धा किसमें प्रतिष्ठित रहती है? उन्होंने कहा कि यह श्रद्धा, हृदय में ओत–प्रोत रहती है यह जो हृदय है इसी में संसार सर्वस्व समाहित हो जाता है। यह हृदय ही मेरे प्यारे! महत् कहलाता है। इस हृदय का समन्वय, जब मानो देखो, प्रभु के, हृदय से हो जाता है तो मेरे प्यारे! देखो, उसको परमानन्द की प्राप्ति हो जाती है। वह हृदय से हृदय का मिलान ही तो करना है। छाया–छाया का ही तो मिलान करना है। मेरे प्यारे! उसी को हमारे यहाँ परमपिता परमात्मा का हृदय कहा गया है। जिसमें मुनिवरो! देखो, हृदय ग्राह्य हो जाता है, जैसे यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड सुदृष्टिपात आने वाला, हृदय में समाहित हो जाता है। इसीलिये बेटा! जब यह मानव देखो, नेत्रों की ज्योति, रसना का रस है, सुगन्ध, मन्द सुगन्ध और मुनिवरो! देखो, स्पर्श और शब्द, ये इन सबकी प्रतिष्ठा मानव के हृदय में, हृदय–ग्राह्य हो जाती है। मेरे प्यारे! हृदय से जानता है इसी हृदय में बेटा! देखो, आत्मा का वास है और इसका मिलान जब प्रभु के हृदय से हो जाता है तो बेटा! परमानन्द को प्राप्त हो जाता है।

तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तो तुम्हें प्रगट करने नहीं आया मैं तो बेटा! कुछ माला के मनकों की चर्चा करने आया हूँ। बेटा! हृदय देखो, श्रद्धा, श्रद्धा में दक्षिणा और दक्षिणा में याग, याग में प्रजापति–प्रजापति में इन्द्र, इन्द्र में गन्धर्व और गन्धर्व में यह सूर्य और सूर्य में चन्द्रमा, बेटा! ये तो मानो देखो, घ्रुवा से ऊर्ध्वा में और ऊर्ध्वा से ध्रुवा में, यह गुरुत्व देखो, यह गुरुत्व, आपो में ज्योति, अग्नि, वायु और अन्तरिक्ष बेटा! देखो, सम्बन्ध मानो देखो, एक एक सूत्र के ये मनके हैं। इन मनकों के ऊपर जो मानो चिन्तन ग्राही" बन जाता है वह बेटा! इस संसार सागर से पार हो जाता है।

आओ मेरे प्यारे! आज मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूँ। आज का विचार हमारा क्या कह रहा है? कि हम परमपिता परमात्मा की आभा को जानते हुए, उसके रचनामयी जगत् को जानते हुए, हमें परमात्मा के हृदय से अपने हृदय का समन्वय कर लेना चाहिए। बेटा! आज के हमारे वाक्यों का अभिप्राय अब ये समाप्त होने जा रहा है। हमारे वाक्य आज क्या कह रहे हैं? कि एक दूसरे में समाहित होता हुआ यह जगत् अन्त में बेटा! परमात्मा का जो भव्य जगत् है, मानो देखो, ये जो वेतकृताः है वह जो हृदय है उस हृदय में समाहित होना है। यह है बेटा! आज का वाक्य। समय मिलेगा शेष चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे, आज का वाक् समाप्त। अब वेदों का पठन–पाठन होगा।

1–1–1987 **कासिमपुर खेड़ी**
बागपत

राष्ट्रवाद

जीते रहो,

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति कुछ वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया हो गया, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन–पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस परमपिता परमात्मा की महिमा का प्रायः गुणगान गाया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप, मानो याग उसका गृह है, उसका आयतन है और वे उसी में प्रतिष्ठित रहने वाले हैं।

जीवन की प्रतिभा

आज का हमारा वेद मन्त्रः, कुछ प्रेरणा दे रहा है। यूं तो ये संसार परम्परागतों से बेटा! एक दूसरे में प्रेरणा का स्रोत रहा है और प्रेरणा को प्राप्त करता हुआ, नाना प्रकार की उड़ानें उड़ता रहता है। जितना भी मानव के जीवन में क्रियाकलाप होता है उस क्रिया–कलाप में मानो एक दूसरे की प्रेरणा प्राप्त होकर के ही यह अपने क्रिया–कलापों में तत्पर रहता है इसीलिए आज हम जैसी मुझे प्रेरणा प्राप्त हो रही है कि याग के सम्बन्ध में अपना कुछ विचार दिया जाये। यो तो बेटा! हम परमपिता परमात्मा की महती और याग के सम्बन्ध में भिन्न–भिन्न प्रकार का विचार देते रहते हैं। क्योंकि यागों के ऊपर ऋषि मुनियों ने प्रायः बड़ा अनुसन्धान किया है, अथवा अन्वेषण किया है। क्योंकि याग को किन्हीं–किन्हीं ऋषियों ने बेटा! याग को जीवन का एक प्रतिभासित, मानो अपना एक अंग स्वीकार किया है और यह कहा है कि याग सर्वत्रता में मानो एक महानतम जीवन की प्रतिभा कहलाती है।

विज्ञान की उपलब्धियाँ

मानो सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के बेटा! परम्परागतों से ऋषि मुनि, याग के ऊपर उनका बड़ा अनूठा अनुसन्धान रहा है। किसी, किसी काल में तो, मानो देखो, याग के द्वारा ही विज्ञान की उपलब्धि होती है। हमारे आचार्यों ने बेटा! याग किया, याग के पश्चात् जो साकल्य तरंगों का जन्म हुआ है उन तरंगों को साकार रूप दिया है और उन ही तरंगों के साकार रूप में मानो विज्ञान ने उपलब्धियाँ की हैं। जैसे इससे पूर्व काल में उद्यालक और महर्षि गाड़ीवान रेवक, महर्षि भारद्वाज ये नाना इस प्रकार के विचारकं हुए हैं। जिन्होंने याग के द्वारा, विज्ञान की उपलब्धियाँ की हैं अथवा परमाणुवाद को उन्होंने जाना है। और तरंगों की आभा में वो सदैव रत रहे हैं। क्योंकि तरंगें ही, मानव के मस्तिष्कों को ऊँचा बनाती है, तरंगें ही मानव के जीवन को सार्थक बनाती हैं और तरंगें ही बेटा! बाह्य जगत् का आन्तरिक जगत से समन्वय करके बेटा! विज्ञान की धाराओं को जन्म देने लगती हैं।

तो विचार हमारा यह, कि आज का हमारा वेद मन्त्रः हमें कुछ प्रेरणा दे रहा है। आज मुझे कहीं से, ओर की प्रेरणाएँ प्राप्त हो रही हैं। परन्तु याग का अभिप्राय क्या है कि "यागाम्" मानव के जीवन में जो भी क्रिया–कलाप है, उसमें शुद्धता है और जितनी पवित्रता है उस सर्वत्र का नाम याग रूप माना है। परन्तु हमारे विज्ञानवेत्ताओं ने क्या, दार्शनिक ऋषियों ने बहुत गम्भीर अध्ययन किया है। एक–एक धारा एक–एक शब्द को लेकर के अनुसन्धान किया है।

आओ, मुझे वो काल प्रायः स्मरण आता रहता है जिस काल में बेटा! महर्षि वैशम्पायन अपने में अनुसन्धान करते रहते। एक वेद का मन्त्र क्या, एक समय महाराजा अश्वपति के वृष्टि–याग में से, अपने आश्रम में पधारे। जब वह मानो देखो, रात्रि के काल में, निद्रा की गोद में जाने लगे तो उन्होंने न्यौदा में मन्त्रों का अध्ययन किया और निद्रा की गोद में चले गये। मध्य रात्रि हुई, मध्यरात्रि में जागरूक हुए। कुछ वेदमन्त्र स्मरण आने लगे "चित्रं गत्प्रमाणाः वासु सम्राज सम्भवः वाचन्नमं यज्ञमाना रथं भवू सम्भवः लोकां द्यौ लोकां दिव्या सम्भवो ब्रह्मरस्ता वाचन्नमः।" न्यौदा में वेद के मन्त्र जब स्मरण आये, तो ऋषि अपने में अनुसन्धान करने लगा। कि देखो, वेद–मन्त्र यह कहता है कि यज्ञमान का रथ बन करके द्यौ–लोक में जाता है और उस द्यौ–लोक जाने वाले रथ को मैं दृष्टिपात करना चाहता हूँ। मानो देखो, यह ऋषि के हृदय में समाहित हो गया, परन्तु निर्णय देने लगे, तो अग्नि की धाराओं पर विद्यमान होकर के प्रत्येक शब्द मानो चित्रों के साथ में वह अन्तरिक्ष में गमन करता है और वह वहाँ से शुद्धिकरण करता हुआ द्यौ–लोक में प्रवेश कर जाता है।

मेरे प्यारे! देखो, द्यौ में प्रवेश करता हुआ, वह शब्द चित्रों के साथ में और जो भी उसका क्रिया–कलाप हो रहा है मानो देखो, जिस स्थली पर वह विद्यमान है उसका रथ भी बन जाता है। तो ये दर्शनों में, वेद मन्त्रों में घटित हो रहा है परन्तु ऋषि अपने में साक्षात्कार में निपटारा नहीं कर पा रहे थे।

द्यौ गामी रथ का चिन्तन

मेरे प्यारे! देखो, विचार विनिमय करते रहे, प्रातः कालीन हो गया। सूर्य उदय हो गया। महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज का आश्रम निकटतम था। विभाण्डक मुनि ने विचारा कि ऋषि ने अपने आसन को, नहीं त्यागा, इसके मूल में कोई न कोई रहस्य, मानो मूल में कोई न कोई कृतिका है। मेरे पुत्रो! देखो, ऋषिवर विभाण्डक ने वहाँ से गमन किया और वह वैशम्पायन ऋषि के द्वार पर पहुँचे। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि से कहा, कहो भगवन! आज आप शान्त, अपने आसन को नहीं त्याग रहे हैं, इसके मूल में क्या है? क्या रहस्य है। उन्होंने कहा–कि प्रभु! मैं क्या करूँ? वेद मन्त्र मानो देखो, मुझे स्मरण आ रहे है। एक नहीं, दो नहीं, नाना मन्त्र है कि यज्ञमान का रथ बन करके द्यौ–लोक को जाता है। मैं उस द्यौ–लोक वाले रथ को दृष्टिपात करना चाहता हूँ। महर्षि वैशम्पायन वृत्तियों में बेटा! विभाण्डक सहित इसके चिन्तन में लग गये। चिन्तन होने लगा, परन्तु वह चिन्तन कर रहे थे कुछ ही समय, मध्य दिवस में मानो देखो, कहीं से ऋषि मुनियों का एक समाज, भ्रमण करते हुए, महर्षि वैशम्पायन के आश्रम में आ पहुँचे। उन ऋषियों में बेटा! नाना ऋषि थे। जिनमें बेटा! देखो, प्रवाहण, शिलक और दालभ्य मेरे प्यारे! रेवकेतु, यज्ञदत्त और रोहिणीकेतु, संकृतिका अम्योव्रतक और भी नाना ऋषि जैसे सोमकेतु मुनिवरो! इत्यादि मुनियों का अश्वल दिग्य और अर्धभाग, इन सब ऋषि मुनियों का एक समाज, वैशम्पायन के आश्रम में आ पहुँचा।

वेद मन्त्रों की प्रतिभा

मेरे पुत्रो! देखो, वे विचार विनिमय कर रहे थे तो ऋषि भी, इसी विचार में लग गये। वेद–मन्त्रों की प्रतिभा में मानो देखो, वे रत हो गये। परन्तु ऋषि अपने में निपटारा नहीं कर सके। मेरे प्यारे! देखो, इतने में महर्षि कागभुषुण्ड जी आ पहुँचे। महर्षि कागभुषुण्डी जी ने कहा–भई! यह तो तुम्हारा वाक्य यथार्थ है। तुम दर्शनों में घटित कर रहे हो। शब्दावलियों से इसका निर्णय कर रहे हो। परन्तु यदि साक्षात्कार दृष्टिपात करना है तो एक याग का आयोजन किया जाये और ऋषि मुनियों को निमन्त्रित किया जाये। उन्होंने कहा–वह याग, चलो अयोध्या में गमन करेंगे और राम से यह प्रार्थना करेंगे।

मेरे प्यारे! देखो, यह वाक्य सब ऋषि मुनियों ने श्रवण करके, मानो देखो, उस वाक् की प्रशंसा की और यह कहा कि बहुत प्रियतम! मेरे प्यारे! देखो, वहाँ से ऋषि मुनियों का समाज भ्रमण करते हुए, सायंकाल के समय, महर्षि सुनीतिमुनि के आश्रम में उनका आगमन हुआ, महर्षि सुनीति मुनि ने उन्हें आसन दिया और नाना प्रकार का अतिथि करने के पश्चात्, रात्रि के समय मानो स्नान किया मानो प्रातःकाल रात्रि के अन्तिम प्रहर में वहां से उन्होंने गमन किया। भ्रमण करते हुए बेटा! अयोध्या में उनका आगमन हुआ। मानो भगवान् राम के यहाँ प्रातः कालीन याग होता रहता था। उस याग में भिन्न–भिन्न प्रकार के आसन विद्यमान है ऋषि मुनि मेरे प्यारे! अपने अपने आसनों पर विद्यमान हो गये। क्योंकि भगवान् राम का उपदेश चल रहा था। भगवान राम की उपदेश–मंजरी मानो प्रारम्भ हो रही थी और वहाँ राष्ट्रवेत्ता विद्यमान थे।

भगवान् राम की उपदेश मँजरी

तो भगवान् राम का यह कथन था, वे उच्चारण कर रहे थे कि हे राष्ट्रवेत्ताओं! यदि तुम राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहते हो तो मानो देखो, वेद का वाक्य कहता है कि तुम्हारे गृह–गृह में याग होना चाहिये अथवा सुगन्धि होनी चाहिए। मानो देखो, याग का अभिप्राय यह है कि विचारों की सुगन्धि बहुत अनिवार्य है और विचारों की सुगन्धि से ही मानो देखो, साकल्य की सुगन्धि, वायुमण्डल में प्रवेश कर जाती है।

मेरे प्यारे! भगवान् राम का यह कथन था कि एक दूसरे का ऋणी नहीं रहना चाहिए संसार में, राष्ट्र को ऊँचा बनाने के लिये, समाज को महान बनाने के लिये मानो देखो, प्रत्येक मानव के द्वारा वाणी की पवित्रता और देखो, साकल्य की सुगन्धि बहुत अनिवार्य है।

वायुमण्डल की पवित्रता

मेरे पुत्रो! देखो, भगवान् राम उच्चारण कर रहे थे। हे राष्ट्रवेत्ताओं! इस अयोध्या राष्ट्र में मानो यह घोषणा करो कि मेरे प्रत्येक गृह में देखो, राष्ट्रीय याग होगा। याग प्रायः होता तो रहता, मैंने घोषणा की है नियमावली बनायी है। परन्तु क्योंकि हमारे पूर्वज महाराजा दिलीय जी, महाराजा दिलीप के नीचले भाग में रघु इत्यादियों का जीवन मानो हमारे वशलजों का जीवन, प्रायः यागों में रहा है। कहीं अश्वमेघ याग में रहा है, कहीं वाजपेयी, अग्निष्टोम याग होते रहे हैं मानो नाना प्रकार के यागों में मेरे महापिता दिलीप जी ने, बारह वर्षों तक मानो गौ धन की सेवाएँ की हैं। उन्होंने नन्दिनी के पिछल्ले भाग में मानो सर्वत्र राष्ट्र का भ्रमण किया है। और उसी के पीछे, उसी की रक्षा के लिये तत्पर रहे हैं। तो इसीलिये राष्ट्र को चाहिए, राजा को चाहिए कि ब्रह्मज्ञान का अध्ययन करता हुआ। मानो देखो, अपने राष्ट्र में, प्रत्येक गृह में, कही विचारों की सुगन्धि है तो कहीं अग्निहोत्र की मानो साकल्प की सुगन्धि हो रही है। दोनों सुगन्धियों का जब समन्वय होता है, दोनो सुगन्धियों का जब मिलन होता है तो मेरे प्यारे! वायुमण्डल पवित्र हो जाता है। आज प्रत्येक मानव ''ब्रह्मे वाचन्नमं ब्रह्माः'' मेरे प्यारे! देखो, राम उच्चारण कर रहे थे कि मेरा जो राष्ट्र है, हमारा यह राष्ट्र पवित्र बनना चाहिये, हमारे राष्ट्र में कुरीतियाँ नहीं रहनी चाहिए। क्योंकि जब याग होंगे तो कुरीतियाँ नहीं रहेंगी। माता, पिता अपने बाल्य को लेकर के, प्रातःकालीन जब याग में परिणत होते हैं। वेद ध्वनि होती है उसके पश्चात् प्रत्येक गृह में भिन्न–भिन्न प्रकार के उसके क्रिया कलापों में, मानव जब तत्पर हो जाता है तो वह राष्ट्र, वह समाज मानो सर्वोत्तम बन करके रहता है।

मेरे प्यारे! देखो, राम का यह उपदेश जैसे ही समापन हुआ, उसके पश्चात् उन्होंने दृष्टिपात किया कि आज तो बड़े महान देखो, ब्रह्मावेत्ताओं का मुझे दर्शन हो रहा है। मेरे प्यारे! जैसे ही उपदेश मंजरी समापन की, उसके पश्चात् वे ऋषि मुनियों के द्वार पर पहुँचे। बारी–बारी बेटा! चरणों को स्पर्श, करके राम ने कहा, वैशम्पायन से कहा महाराज! ये तो मेरा अहोभाग्य है, कि आपका आगमन हुआ। परन्तु यह मेरा दुर्भाग्य है कि मुझे आप सूचना दे देते तो मैं आपके वाहनों के द्वारा, अपने गृह में मानो, आपका आगमन कराता।

मेरे प्यारे! देखो, ऋषियों ने कहा, कोई नहीं भगवन! ये तो मानो देखो, हमारा भी कर्त्तव्य है कि हम भ्रमण करें और मानो देखो, अपनी कृतिका और अपनी आभाएँ देखो, उसका प्रसार करें। मुनिवरो! देखो, राम ने नमस्कार करके कहा–कहो, भगवन्! अब कारण उच्चारण कीजिये कि किस कारण आपका आगमन हुआ? उन्होंने कहा–भगवन! हम इसलिये आये हैं, वैशयापन और प्रवाहण जी ने कहा–कि महाराज हम इसलिए आए हैं कि आपके द्वारा एक याग का आयोजन चाहते हैं। उन्होंने कहा–बहुत प्रियतम। राम ने बेटा! वह स्वीकार कर लिया। राम ने कहा–प्रभु! यह तो मेरा सौभाग्य है। मैं मानो देखो, इतना सौभाग्य– शाली है कि ऋषि मुनियों की आज्ञा का मैं पालन करूँ। क्योंकि जो ब्रह्मवर्चोसि कहलाते हैं, ब्रह्म का चिन्तन और ब्रह्म को जानने वाले अपने अन्तर्हृदय में, जो ब्रह्म का दिग्दर्शन करते हैं। यह मेरा सौभाग्य है कि मैं उनकी आज्ञा का पालन करूँ।

ब्रह्मपुरी तुल्य यज्ञशाला

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि प्रसन्न हो गये और राम ने उन ऋषि मुनियों का, कक्षों में आगमन कराया। नाना प्रकार का प्रीतिभोज प्राप्त करने के पश्चात् राम ने शिल्पकारों को आज्ञा दी कि तुम यज्ञशाला का निर्माण करो। मेरे प्यारे! साकल्य एकत्रित होने लगा, तो मेरे पुत्रो! देखो, कुछ समय पश्चात् भगवान् राम के यहाँ यज्ञशाला का निर्माण हो गया और निर्माण होकर मानो देखो, साकल्य एकत्रित हो गया। मेरे प्यारे! देखो, जब वे सब सुकृतियाँ हो गयीं, मानो

सब साकल्य एकत्रित हो गया तो यज्ञशाला, ब्रह्मपुरी की भाँति उसको सजातीय बनाया गया। तो मेरे प्यारे! देखो, भगवान् राम ऋषि, मुनियों के समीप पहुँचे और उन्होंने कहा–कि आइए भगवन्! आपकी यज्ञशाला मानो सम्पन्न हो गयी है और आप भगवन्! याग का प्रारम्भ कीजिये।

द्यौ लोक वाला रथ

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि, मुनि बड़े प्रसन्न हो गये और मुनिवरो! देखो, यज्ञशाला में जा पहुँचे। यज्ञशाला में जाने के पश्चात भगवान् राम ने उनके चरणों की वन्दना की और बारी–बारी मानो देखो, उनका निर्वाचन किया और निर्वाचन करने के पश्चात् मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वैशम्पायन को उस याग का ब्रह्मा पद प्राप्त कराया। महर्षि विभाण्डक उद्गाता बने और मुनिवरो! देखो, महर्षि प्रवाहण उसके उद्गाता अध्वर्यु, बने और राम यज्ञमान बनकर के वशिष्ठ को पुरोहित के रूप में मानो उनका स्वागत किया। मेरे प्यारे! देखो, नाना ब्रह्मवेत्ता अपनी–अपनी स्थलियों पर विद्यमान हैं। याग का प्रारम्भ होने लगा जैसे ही याग प्रारम्भ हुआ तो मुनिवरो! देखो, वेद–मन्त्र मानो न्यौदा में जब उद्गीत रूप में गाये जाने लगे, तो क्या ''यज्ञमानं ब्रह्मे चित्रो रथं ब्रह्माः यज्ञमानः रथः अस्सुतं वाचो कृतिव्रता मेरे प्यारे! देखो, वेदमन्त्र जब इस प्रकार उद्गीत रूप में गाने लगे, भगवान् राम ने जब अग्निहोत्र, अग्नि प्रचण्ड होने लगी तो मुनिवरो! देखो, उन्होंने एक प्रश्न किया, ऋषि मुनियों से नतमस्तक होकर बोले कि प्रभु! यह वेद–मन्त्र, यह कहता है कि यज्ञमान का रथ बनकर के द्यौ–लोक को जाता है। मैं द्यौ लोक वाले उस रथ को दृष्टिपात करना चाहता हूँ।

यज्ञशाला में भारद्वाज ऋषि का आगमन

मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि ने दर्शनों से घटाया कि जैसे तुम स्वाहा उच्चारण कर रहे हो मानो यज्ञ का जितना आकार है, वह अग्नि की धाराओं पर, स्वाहा के साथ में, साकल्यों के साथ में वेदमन्त्रों की ध्वनि के साथ में द्यौ–लोक में प्रवेश कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, राम ने कहा कि भगवन्! मैं इसे साक्षात्कार करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! यह दर्शनों में घटित हो रहा है। दर्शन मानो अपनी स्थलियों पर क्रीड़ा कर रहा है, इतने में बेटा! भ्रमण करते हुए मानो नमन्त्रण के कथनानुसार महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज, अपने वाहन में बेटा! देखो, ब्रह्मचारिणी शबरी, महर्षि पनपेतु महाराज और मुनिवरो! देखो, सुकेता ये चारों मुनिवरो! देखो! उनका आगमन हुआ। जब आगमन हुआ तो याग शान्त है। और देखो, ऋषि मुनि मौन हैं।

महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने कहा, कहो, ''ब्रह्मे वाचन्नमं ब्रह्मे'' राम तुम्हारा याग कैसे शान्त है? उन्होंने कहा–प्रभु! यह याग इसलिये शान्त है, क्योंकि मैं यह चाहता था मैं यज्ञमान के रथ को दृष्टिपात करना चाहता हूँ। यह वेद–मन्त्र न्यौदा में आ रहा है। भारद्वाज मुनि ने कहा कि हे राम! मानो देखो, तुम ब्रह्मवेत्ताओं का अपमान तो नहीं कर रहे हो। उन्होंने कहा–प्रभु! मैं इन ब्रह्मवेत्ताओं के चरणों की धूल भी नहीं हूँ। मानो देखो, मैं इनका अपमान कैसे कर सकता हूँ भगवन्!

मेरे प्यारे! देखो, वह बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने ब्रह्मचारिणी शबरी और पनकेतु से कहा कि जाओ, मेरी विज्ञानशाला से यन्त्रों को लेकर आओ। मेरे प्यारे! देखो, भारद्वाज मुनि महाराज के ब्रह्मचारी पनकेतु व शबरी अपने वाहन में मानो देखो, उन्हें कजली वनों में भेजा, वे उन यन्त्रों को लेकर आये। जब वे यन्त्रों को लाए तो राम से कहा राम! अब तुम याग प्रारम्भ करो।

बेटा! उन्होंने याग जैसे प्रारम्भ किया। याग के प्रारम्भ होते ही उन्होंने यन्त्रों को स्थिर कर दिया, और मुनिवरो! देखो, स्वाहा उच्चारण करता मानो होता गण बेटा! देखो, उनका चित्र, अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके द्यौ–लोक को जाता हुआ बेटा! यन्त्रों में दृष्टिपात आने लगा। उन्होंने हे–राम! ब्रह्मे, देखो, तुम्हारा यह रथ द्यौ–लोक को जा रहा है जितना भी शाब्दिक है मानो देखो, पवित्र हृदय का शब्द होता है वह साकल्य के साथ में, अग्नि की धाराओं पर मानो देखो, वह द्यौ–लोक में प्रवेश होता है और देखो, वह यन्त्रों में तुम्हारा यह रथ दृष्टिपात आ रहा है। जितने आकार की यज्ञशाला, उतने आकार का वह रथ बनकर के द्यौ–लोक को जा रहा है।

रक्त के बिन्दु में चित्र

मेरे प्यारे! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि बोले–कि हे राम! तुम्हें यह प्रतीत है, ''सम्भवः–लोकां! वाचप्रहा'' तुम्हें प्रतीत हो गया होगा कि मानो ''ब्रहे कृतं लोकाम्'' मानो देखो, मेरे यहाँ ऐसे, ऐसे यन्त्र हैं जिन यन्त्रों में एक रक्त का बिन्दु प्रवेश करो और उसी रक्त के बिन्दु में मानो देखो, एक मानव का चित्र आ जाता है जिस मानव का वह रक्त है। मेरे प्यारे! देखो, उस मानव का साक्षात्कार दर्शन होता है। जितने भी रक्त के बिन्दु हैं मानों देखो, उतने ही चित्र उसमें दृष्टिपात आने लगते हैं।

मेरे प्यारे! देखो, राम घोर आश्चर्य से बोले कि धन्य है, प्रभु! ये मानो देखो, विज्ञान मुनिवरो! देखो, उन्होंने कहा–हे राम! तुम शबरी को जानते हो, यह जो ब्रह्मचारिणी शबरी है यह महर्षि पनपेतु मुनि महाराज की कन्या है, मानो देखो, यह वही देवी है, जब तुम रावण को विजय करने के लिये गये तो इन्होंने अखण्ड एक शस्त्रों–अस्त्रों का कोष मानो देखो, शबरी ने तुम्हें प्रदान किया। मेरे पुत्रो! देखो, जब उन्होंने शबरी के दर्शनों को किया तो राम बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा–धन्य, है प्रभु! मैं जानता हूँ, ये गुप्तचर के रूप में मुझे सर्वत्रता को प्रदान किया है।

मेरे प्यारे! देखो, हर्ष की कोई सीमा न रही याग चलता रहा और राम ने विचारा और देखो, महर्षि वैशम्पायन जी प्रसन्नता कर रहे। मेरे पुत्रो! वेद का एक–एक जो अक्षर है वो महानता को मानो सत्यता से गुथा हुआ है उसमें ज्ञान और विज्ञान निहित रहता है मेरे प्याारे! छह माह तक याग होता रहा। छह माह पश्चात् भगवान राम ने मानो देखो, उसकी पूर्णता को प्राप्त करने के पश्चात नाना प्रकार की अपनी कृतियों की दक्षिणा देकर के याग को सम्पन्न किया।

तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या? ये प्रेरणा मुझे आज कही से प्राप्त हुई है कि मैं याग के विषय में कुछ वाक्य उच्चारण करूँ। ये प्रेरणाएँ मुझे मेरे प्यारे महानन्द जी से प्राप्त होती रहती हैं। अब मेरे प्यारे महानन्द जी भी दो शब्द कुछ उच्चारण करेंगे।

पूज्य महानन्द जी का प्रवचन

ओ३म् देवाः रथं मानं यज्ञं गतप्रवाहं भवाः

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल! मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी–अभी याग के सम्बन्ध में बड़ी विचित्र उड़ाने उड़ रहे थे। इनकी उड़ान बड़ी विचित्र रहती है। परम्परागतों से ही, यागों के ऊपर, दर्शनों को व्यक्त करते हुए प्रायः अनुसन्धान होता रहता है और हम इनके चरणों में ओत–प्रोत होकर के, इन वाक्यों को श्रवण करते रहते हैं। जिन वाक्यों में संसार के ज्ञान और विज्ञान की प्रतिभा निहित रहती है।

आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कुछ आधुनिक और जहाँ हमारी यह आकाशवाणी जा रही है मानो वहाँ एक याग सम्पन्न हुआ है। याग के सम्पन्न होते समय मैं यह कहा करता हूँ, पूज्यपाद को कई समय वर्णन कराया है कि ये जो वर्तमान का काल है जिस को मैं मानो वाममार्ग काल कहा करता हूँ। वाममार्ग उसे कहते है जिसमें प्राणी को विवेक नहीं रहता है मानो विवेक ही न हो। आहार में और व्यवहार में। आधुनिक काल में, जो वर्तमान का काल चल रहा है पृथ्वी मण्डल का। मानो आहार और व्यवहार में प्रवृत्तियाँ नष्ट होती जा रही है, और देखो, ये आहार ऐसा अशुद्ध हो गया है कि देखो, दूसरों के रक्त को पान करने वाला अपने में गौरव स्वीकार करता है और ये कहता है ऊर्ध्वा में, कि मानव बन गए। परन्तु जब मैं ये कहता हूँ आज का याग मानो मेरा

अन्तर्हृदय कहता है हे यज्ञमान! मेरा हृदय तो यज्ञमान के साथ रहता है और मैं ये कहता हूँ हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। तेरे जीवन में मानो प्रकाश होता रहे और अपने में इच्छाओं की जो पूर्तियाँ है जो यथार्थ है, वे पूर्णता को प्राप्त होती रहे। हे यज्ञमान! तेरे जीवन मानो देखो, मेरा अन्तर्हृदय तेरे जीवन की आभा में ओत–प्रोत हो रहा है और मैं यही कहता हूँ कि इस समय में ये जो वाममार्ग चल रहा है मानो देखो, इसके मूल में ही याग है।

जब यागों का प्रसार हुआ था किसी काल में, महाभारत काल के पश्चात् वाममार्ग की कुछ उपलब्धियाँ हुई। वाममार्ग की जब उपलब्धियाँ हुई तो सबसे प्रथम यागों में आक्रमण हुआ, याग को अहिंसा परमो धर्म कहते हैं वहाँ यागों की आहूति प्रदान की, वहाँ नाना प्रकार की हिंसा हुई। अजामेघ में बकरी की आहुति, अश्वमेघ याग में अश्व की देखो, आहुति प्रदान की, गोमेघ याग में गऊ की आहुति मुनिवरो! देखो, उसका परिणाम ये है कि आधुनिक काल में गऊ का ह्रास, प्रत्येक प्राणी का ह्रास हो गया। प्राणी का ह्रास होने से देखो, याग तो रहे ही नहीं यागां ब्रहे मानो मानव का आहार स्वाभाविक बन गया उसको अपना स्वभाव स्वीकार करने लगा है प्राणी, ये किसकी सूक्ष्मता है? मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी–अभी राम की परिकल्पना कर रहे थे। राम के वाक् उच्चारण कर रहे थे जो ब्रह्म की आभा में सदैव उड़ाने उड़ते रहते थे।

ब्रह्मज्ञान से राम राज्य

आधुनिक काल का राष्ट्र कहता है कि राम राज्य की स्थापना हो परन्तु राम–राज्य की स्थापना कैसे हो सकती है? राम तो राष्ट्र चाहते ही नहीं थे। राम तो प्रातः कालीन अपने आसन को त्याग करके द्युतक का पान करते थे। आधुनिक काल का जो राष्ट्रवाद है वह प्रातः कालीन नाना प्रकार के प्राणियों को तपा करके देखो, उसका पान कर रहा है मानो देखो, ये राष्ट्र और समाज कैसे राम के राज्य की कल्पना कर सकता है। मैं ये उच्चारण कर रहा हूँ कि जब तक राजा ब्रह्मज्ञानी नहीं होगा, राजा के अन्तर्हृदय में ब्रह्म और विवेक नहीं होगा। तब तक राष्ट्र ऊंचा नहीं बनेगा। मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से ये कहा था कि राजा ब्रह्मज्ञानी नहीं होता तो नाना प्रकार की रूढ़ियाँ पनपा करती है। और वे जो रूढ़ियां है वे मानो हिसंक बनकर के राष्ट्र को नष्ट कर देती है। नाना प्रकार की रूढ़ियाँ नहीं होनी चाहिए।

पवित्रता का आधार

मैंने बहुत पुरातन काल में पूज्यपाद गुरुदेव से कहा था कि ये जो संसार है इसमें जब तक राजा को मृत्यु का भय लगा रहेगा, तब तक वो किसी भी प्राणी का, किसी भी मानव का कल्याण नहीं कर सकता। उस राजा को राष्ट्र का नेतृत्व करने का अधिकार नहीं होगा। क्योंकि वह राजा मृत्यु को विजय नहीं कर सकता। मृत्यु पर विजय कौन कर सकता है? जिस राजा के अन्तर्हृदय में ब्रह्मज्ञान होगा। परमात्मा तो सर्वज्ञ है। धर्म और मानवीयता को अपने में जो धारण करने वाला है वही तो ब्रह्म ज्ञानी होता है, और जब तक उसे ब्रह्म ज्ञान नहीं होता तो नाना प्रकार की रूढ़ियों से जो रक्त ग्रहण कर रहा है, जो घृणात्मक विचार है, उसको शमन नहीं कर सकता है। मानो देखो, मैंने पूज्यपाद गुरुदेव से कई काल में ये वर्णन कराया है, क्योंकि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव यागों के कर्मकाण्ड को मानो जानते हैं राम इत्यादियों के जीवन की प्रतिभा कितनी विचित्र रही है क्या वह अपने में घोषणा कर रहे हैं देखो, राम! प्रत्येक गृह में याग होना चाहिए, प्रत्येक गृह में सुगन्धि होनी चाहिये, आधुनिक काल में मानो प्रातःकाल ये गृह में सुगन्धि नहीं, दुर्गन्धि का प्रतिरोध हो रहा है। मानो देखो, दुर्गन्धि आ रही है, आहारों में पवित्रता नहीं रही तो कैसे समाज ऊँचा बनेगा। आहार पवित्र नहीं तो वाणी कैसे पवित्र बन सकती है। आज जब मैं विद्यालयों में प्रवेश करता हूँ तो विद्यालय, विद्यालय नहीं रहे है परन्तु उनमें भी हिंसा की प्रवृत्ति का प्रहार मानो देखो, हिंसा की प्रवृत्ति, विभिन्न रूपों में परिणत हो रही है।

हिंसा की समाप्ति का आधार

आज मैं विशेष चर्चा ने देता हुआ अपने पूज्यपाद गुरुदेव से ये वर्णन करा रहा हूँ कि ये संसार देखो, हिंसा की प्रवृत्ति में परिणत हो रहा है। हिंसा कैसे समाप्त होती है जब तक राजा के राष्ट्र में तपस्या नहीं होती, राजा तपस्वी नहीं होता तो वह हिंसा को दूरी नहीं कर सकता। मानो देखो, जब तक विज्ञान का दुरूपयोग होता है विज्ञान के सदुपयोग न होने से, उनके दुरुपयोग होने से देखो, समाज अन्धकार में चला जा रहा है। जब मानव नाना प्रकार से मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी–अभी वर्णन कर रहे थे मानो देखो, उस रक्त के बिन्दु में चित्र विद्यमान है और देखो, यज्ञमान का रथ भी द्यौलोक को जा रहा है वह भी चित्रावली रूप बना हुआ है।

परन्तु जब मैं आधुनिक जगत में जाता हूं, तो वह जो चित्रावली जिसमें मानो दार्शनिक तत्वों को दृष्टिपात कराया जाए, आज मानो देखो, उन चित्रावलियों में मेरी पुत्रियों का नृत्य हो रहा है। अब जब मेरी पुत्रियों के अश्लील चित्रों का नृत्य होता रहता है जिसको छात्र छात्राएँ ग्रहण करते है तो उनका ब्रह्मचर्य दूषित हो जाता है, अधिकार की पुकार करते है। जब अधिकार रह जाता है कर्तव्यवाद नष्ट हो जाता है तो रक्त भरी क्रान्ति आ जाती है।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन कराया कि विज्ञान का सदुपयोग होना ही मानो राष्ट्रीय स्वरूप बदलता है विज्ञान का दुरुपयोग होना ही राष्ट्र ही मृत्यु है। क्योंकि अधिकार को पुकार ने वाला मानो वो कर्तव्यवादी नहीं बन सकता, परन्तु देखो, अधिकार पुकारने लगता है क्योंकि ब्रह्मचर्य के दूषित होने पर आलस्य और प्रमाद आ जाता है। आलस्य और प्रमाद के आने पर ही वह कर्तव्यवादी न बनकरके वह पुकार कर रहा अधिकार की, अधिकार प्राप्त न होना ही रक्त भरी क्रान्ति आ जाना है।

मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई कालों में ये प्रगट करते हुए कहा था, क्या, मेरे हृदय में ये दहा बनी रहती कि वाम मार्ग कैसे समाप्त हो ये सब वाम मार्ग की ही तो रचना है जो विशुद्ध मार्ग को त्याग करके देखो अशुद्ध मार्ग पर ले जाए।

भयरहित राजा

मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा, कि हे राजन! यदि तू राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता है तो तुझे मृत्यु का भय नहीं होना चाहिए अब जब मृत्यु का भय लगा हुआ है और ये जो सृष्टि के प्रारम्भ से ही मानो तारतम्य बना हुआ है। कोई आ रहा है तो कोई जा रहा है ये तो आश्चर्य का वाक् नहीं है मानो मृत्यु आनी जानी है। ये मृत्यु क्या है? तेरे जीवन काल में यदि कोई हिंसक प्राणी हो जाता है तो वह तेरी मृत्यु कहलाती है शरीर को त्यागने का नाम मृत्यु नहीं कहा जाता है, मानव के जीवन में निराशा, और मृत्यु का भय और अभिमान की अभिलाशा बलवती हो जाती हे तो वह मृत्यु कहलाती है। मृत्यु शरीर को त्यागना नहीं है। शरीर तो आज नहीं कल अवश्य मानो देखो, इसका विच्छेद हो जाना है। जिस वस्तु का निर्माण हुआ है उस वस्तु का विच्छेद भी अनिवार्य है। विच्छेद होना कोई आश्चर्य नहीं है परन्तु जीवन काल में यदि निराशा और अभिमान की मात्रा मानो बलवती हो गई है तो तेरी मृत्यु बन करके रहती है।

राष्ट्रीयता

आज मैं विशेषता में नहीं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को ये निर्णय अपना वाक् प्रगट कराना चाहता हूँ कि हे प्रभु! अजामेघ याग का, नाना प्रकार के यागों का चलन है परन्तु आधुनिक जगत में मानो अपने स्वाद के लिए नाना प्रकार की कल्पनाएँ करता रहता है मानो अपने को ऊँचा बनाने के लिए नाना प्रकार

की कल्पनाएँ करता रहता है उन कल्पनाओं में क्या है? परन्तु देखो, उनमें आज राष्ट्रीयता की कल्पना कर रहा है और उनमें जान नहीं पाता कि राष्ट्रीयता क्या है? राष्ट्रीयता मानो उसे कहते है जो मानव अपने राष्ट्र के जीवन को ऊँचा बना सके। राष्ट्रीयता में मानवता की साधना कर ले मानो देखो, वही तो राष्ट्रवाद कहलाता है।

हमारे यहाँ पूर्व काल में, भगवान् राम के काल में, राम देखो, पुरुषार्थ करके भोज्यपान करते थे, महाराजा अश्वपति अपने में पुरुषार्थ करके अन्न को पान करते, जो दूसरों के वैभव को संग्रह करके उस अन्न को पान करता, दूसरे प्राणियों को भक्षण करने वाला मानो देखो, उसे मृत्यु का भय नहीं होगा, तो किसे होगा? विचार क्या देखो, ज्यादा चर्चा न देता हुआ। आज मानो गौरव स्वीकार कर रहा है क्योंकि मानो मैं दूसरे के गर्भ को पान कर रहा हूँ हम मानो भय बन रहे हैं दूसरो की कल्पना करने लगते हैं। और तुम अपनी भी तो कल्पना करों, मानव का धर्म, मानवीयता क्या कहती है, दर्शन क्या कह रहा है इस प्रकार के विचारों में जब मानव तन बदन हो जाता है तो उसकी मानवीयता पवित्र हो जाती है।

आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ मानो देखो, हिंसा नहीं होनी चाहिए। मेरा तो मन्तव्य एक ही है कि मानव का आहार और व्यवहार पवित्र होकर के, हिंसा न रहकर के मानव के, जब राष्ट्रवाद के गर्भ में हिंसा नहीं रहती तो बाह्य जगत् में भी हिंसा नहीं रहेगी।

आज का वाक् मैं उच्चारण कर रहा हूँ कि मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को निर्णय कराता रहता हूँ कि भगवन् आप तो राम की घोषणा कर रहे है आप तो राम के पवित्र क्रिया कलापों का वर्णन कर रहे हैं।

परन्तु आधुनिक काल में राम की घोषणा है और उसके पिछले विभाग में क्या हो रहा है मानो उसको प्रभु जानता है आज देखो, हम उसके उच्चारण करने में असमर्थ है। क्या हे प्रभु! आज का ये वाक् मैं आपको उच्चारण कर रहा हूँ जब कि आप अपने विचार देते रहते हैं। हम भी अपने विचारों को व्यक्त करते रहते है। आज का वाक् ये क्या कह रहा है। आज मैं मानो दूरी चला गया हूँ...........

(पूज्यपाद) तो आज का ये वाक् अब समाप्त होने जा रहा है आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः ये कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार हो जाए ये है बेटा! आज का वाक् अब वेदों का पठन–पाढन।

ओ३म् मां रथं माना वांच रथाः।

2.1.1987
कासिमपुर खेड़ी, बागपत

भारद्वाज ऋषियों की चर्चा

जीते रहो!

देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मंत्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मंत्रों का पठन–पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद वाणी में उस महामना, मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी है और जितना भी ये जड़ जगत् अथवा चैतन्य जगत् हमें दृष्टिपात आता रहा है। इस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वो मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। संसार में कोई भी ऐसी वस्तु नहीं है जहाँ वे परमपिता परमात्मा न हो, समुद्रो की कोई भी तरङ्ग ऐसी नहीं है, जहाँ वे परमपिता परमात्मा न हो। मानो वो सर्वज्ञ है और इस संसार का नियन्ता और निर्माण करने वाला है।

परमात्मा के गुणों की प्रतिभा

आज का हमारा वेद मंत्रः उस परमपिता परमात्मा के गुणों का गुणवादन कर रहा था अथवा उसके गुणों की प्रतिभा का वर्णन करते हुए, वेद मंत्र कहता है अग्नं रथं प्रह्वा वसु सम्भवाः मानो ये वर्णन कर रहा है कि हे परमात्मन्! तू अग्नि स्वरुप है मानो ये जो अग्नि है, यह सर्वत्रता में विद्यमान है। अणु और परमाणुओ के रूप में भी मानो यही चेतना अपने में क्रियाशील हो रही है।

तो आओ, मेरे पुत्रो! आज का हमारा वेद मंत्र, ये क्या कह रहा है। विष्णु भवः ब्रह्म वरुणा ब्रहे। हे विष्णु! तू महान और पवित्रतम कहलाता है। सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के, वर्तमान के काल तक ये जो नाना प्रकार की प्रतिक्रियाएँ हो रही है अथवा जितना भी ये जगत् है यह मानो एक अनूठे रुप में हमें दृष्टिपात आता रहता है। तो मेरे पुत्रो! आज का वेदमंत्रः दोनों प्रकार के ज्ञान और विज्ञान की चर्चा कर रहा था। हमारे यहाँ जितना भी याग है अथवा संसार के जितने भी अनुष्ठान है मानो उनके उनके क्रियाकलापों के गर्भ में, एक ही वस्तु हमें दृष्टिपात आ रही है, कि प्रत्येक मानव यह चाहता है कि मैं इस संसार में, प्रकाश में चला जाऊँ। अंधकार से मेरा उत्थान हो करके, मैं प्रकाश में चला जाऊँ और मृत्युंजय बन जाऊँ। मानो मृत्यु के ऊपर मानव सदैव उसी से भयभीत रहता है और ये विचारता रहता है कि मेरी मृत्यु नहीं आनी चाहिए। मेरी प्यारी माता, अपने में ये चिंतन करती रहती है कि मेरी मृत्यु नहीं आनी चाहिए। परन्तु जितना भी परम्परागतों से ही, सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के, वर्तमान के काल तक जितने भी क्रियाकलाप है, अथवा जितने भी अनुष्ठान है उन अनुष्ठानों के गर्भ में केवल मानव की एक ही मनोनीत भावना रहती है, एक मनोनीत विचारधारा रहती है कि मेरी मृत्यु नहीं आनी चाहिए।

मेरे प्यारे! देखो, माता का पुत्र माता से विच्छेद होता है तो माता रूदन करती रहती है कि मेरा पुत्र, मेरे समीप नहीं रहा। परन्तु जब दार्शनिक यह प्रश्न करता है कि हे माता! ये तेरा पुत्र मानो देखो, ये तेरा पुत्र क्या है? आत्मा चेतना है मानो वह शरीर से निकल गया है और ये शरीर ज्यों का त्यों अपनी स्थली पर निहित, विद्यमान है तो मैं जानना चाहता हूँ तुम्हारा पुत्र कौन है? यह शरीर तुम्हारा पुत्र है या आत्मा तुम्हारा पुत्र है। तो माता आत्मा को तो जानती नहीं है, परन्तु देखो, वह शरीर को अपना पुत्र कहती है तो वह तो ज्यों का त्यों निहित रहता है।

मृत्यु का स्वरूप

तो विचार क्या दर्शनकार कहता है, वेद का मंत्र कहता है कि मृत्यु अपने में मानो कोई वस्तु नहीं कहलाती। मेरे प्यारे! नाना ऋषिवर, अपनी–अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके, नाना प्रकार का विचार विनिमय करते रहे हैं और इस मृत्यु के सम्बन्ध में, गम्भीरता से अध्ययन किया जाता है। मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से, ब्रह्मचारी, विद्यालय में यही कहते रहते थे–कि मृत्यु क्या है? आचार्य ने यही कहा–कि मानो मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नहीं है मानो यह अज्ञान है, अन्धकार है। अन्धकार का नाम ही तो मृत्यु कहलाता है और प्रकाश का नाम ही जीवन कहा जाता है।

वेद का आदेश

तो मेरे प्यारे! देखो, वेद का मंत्र यह कहता है कि हे मानव! तू अपने प्रकाश के मार्ग को अपना और अन्धकार को त्यागने का प्रयास कर। हमारे यहाँ नाना प्रकार के ऐसे ऋषि हुए हैं। जिन ऋषियों के जीवन काल में बेटा! देखो, अंधकार भी उनके निकटतम नहीं आया। उन्होंने– बेटा! मृत्यु को विजय किया। मानो मृत्यु अन्धकार को कहा जाता है और जीवन प्रकाश को कहा जाता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, इसी विचारधारा को लेकर के हमारे यहाँ दो प्रकार के विज्ञान माने जाते हैं एक आध्यात्मिक विज्ञान है, तो एक भौतिक विज्ञान है। मेरे प्यारे! आध्यात्मिक विज्ञान वह कहलाता है, जहाँ आत्मा का वर्णन आता है और जहाँ मानो ब्रह्मे भौतिक विज्ञान वह कहलाता है मानो जो अणु और परमाणु के रुप में प्रायः विद्यमान रहता है। मेरे प्यारे! देखो, यहाँ नाना ऋषिवर अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके, मेरे पुत्रों! देखो, मृत्यु के ऊपर अपना विचार विनिमय करते रहे हैं, और विचारते रहे हैं। और उन्होंने ये कहा है–कि मृत्यु नहीं होनी चाहिए। क्योंकि मानव को मृत्युंजयी बनना है और मृत्युंजयी वो मानव बनता है जो अपने मानव दर्शन को जानता है अथवा मानवीयता को जानता है। और मानवीयता क्या है? जहाँ मनुष्तं ब्रह्माः बेटा! जहाँ प्राण और मन दोनों का सहवास होता हो जहाँ दोनों की प्रतिक्रियाओं में, महानता का प्रायः दर्शन होता हो।

तो आओ मेरे पुत्रो! मैं तुम्हें विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ, आज मैं बेटा! तुम्हें याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के आश्रम में ले जाना चाहता हूँ। जहाँ ऋषि मुनि बेटा! अपने में बड़ी विचित्र–विचित्र उड़ाने उड़ते रहे हैं। हमारे यहाँ भिन्न–भिन्न प्रकार की उड़ाने उड़ने वाले ऋषि मुनि प्रायः अपने में बेटा! देखो, चिंतन और मनन करते रहे हैं। आओ मेरे प्यारे! वेद का एक ही शब्द है, उसी शब्द के ऊपर बेटा! नाना प्रकार की प्रतिक्रियाएँ होती रहती है अथवा हमारे यहाँ नाना जैसे उद्यालक गोत्र है। उद्यालक गोत्र में भी नाना ऋषि हुए हैं।

महर्षि रेंगणी भारद्वाज

आओ मेरे प्यारे! आज मैं रेंगणी भारद्वाज मुनि के आश्रम में तुम्हें ले जाना चाहता हूँ। रेंगणी भारद्वाज मुनि महाराज बेटा! देखो, वो प्रातः कालीन क्या, मानो प्रातः मध्म ब्रहे मध्य–रात्रि से लेकर के मुनिवरो! देखो, वो नित्य प्रति नाना प्रकार के यागों में परिणत रहते थे। मुनिवरो! देखो, रेंगणी भारद्वाज प्रातः कालीन, ब्रह्म का चिंतन करना, हमारे यहाँ मानो देखो, जो गृह में प्रवेश होने वाले हो चाहे वो वन पर्वतों में वास करने वाला प्राणी हो बेटा! देखो, प्रातःकालीन वह मानो देखो, ब्रह्म का चिंतन करता है। उसे हम ब्रह्मयाग कहते हैं।

ब्रह्म का चिन्तन

ब्रह्म का चिंतन क्या है? वह ब्रह्म के ऊपर विवेचना करना प्रारम्भ करता है। वह कहता है कि हे भगवन्! हे ब्रह्म! मानो तू इस संसार के एक–एक कण–कण में व्याप्त है। मानो तेरी प्रतिभा एक अनूठी है। मानव के साथ में रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण की प्रतिभा का वास किया है। परन्तु जब मैं विचारता हूँ कि सतोगुण क्या है और रजोगुण क्या है और तमोगुण क्या है? तो वेद का एक मंत्र कहता है तमो वायः प्रवाह वाचन्नमं ब्रह्माः सर्वणं बृहि वृताम् मानो देखो, वेद का मंत्र कहता है, वेद की आख्यायिका कहती है कि वही रजोगुण है, वही सतोगुण है और वही तमोगुण कहलाता है।

मेरे पुत्रो! देखो, मुझे वो काल स्मरण आता रहता है जब मानो देखो, एक समय रेंगणी भारद्वाज से उनकी पत्नी ने कहा–हे प्रभु! ये सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण क्या है? तो महर्षि ने वर्णन करते हुए कहा–कि यह प्रभु की अनूठी विचित्र एक प्रतिभा कहलाती है। उन्होंने कहा–प्रभु! मैं जान नहीं पाई हूँ। उन्होंने कहा–ये प्रभु की एक मानो अपृति कहलाती है। मानो देखो, जब विचारते है कि रजोगुण में, अहा शासन कहलाता है और सतोगुण में मुनिवरो! देखो, पालन कहलाता है और मुनिवरो! देखो, तमो ब्रह्मणा देखो, तमोगुण में मुनिवरो! सम्भवः ब्रह्मे वाचोः उत्पत्यां भवः सम्भवः उसमें उत्पत्ति का मूल विद्यमान रहता है। परन्तु देखो, देवी ने कहा–प्रभु! ये भी जान नहीं पाई हूँ। मानो ये तीनों गुण कहाँ प्राप्त होते हैं? वेद का एक मंत्र कहता है। मात्राणि गच्छप्रवाणं ब्रहे वाचा वरुणाः ब्रह्मे देवः मानो ये तीनों गुण देखो, माताओं से प्राप्त होते रहते हैं। माता मानो देखो, पालन भी कर रही है शासन भी कर रही है और उत्पत्ति के मूल में भी मानो देखो, विद्यमान हैं।

माता

मेरे प्यारे! देखो, ये तीनों एक ही सूत्र के मनके कहलाते हैं। इन एक ही सूत्र के मनको के ऊपर विचार विनिमय करना है। मेरे प्यारे! देखो, उत्पत्ति के मूल में ब्रह्म हैं और मुनिवरो! रजोगुण के मूल में शिव कहलाता है। और देखो, सतोगुण के रुप में विष्णु कहलाता है। बेटा! देखो, विष्णु कहते हैं जो पालन करने वाला है। मेरे प्यारे! देखो, ये तीनों गुण माता में प्राप्त होते हैं। माता लोरियों का पान करा रही है और लोरियों का पान कराती कहती है हे बालक! तू शुद्ध है, हे बालक! मानो देखो, तू निरंजन और अखण्ड रहने वाला आत्मा है। मेरे प्यारे! देखो, माता पालन कर रही है, लोरियों का पालन कराती हुई देखो, पालन कर रही है। उसके पश्चात् यदि अशुद्ध वाक् उच्चारण करता तो माता उसे धिक्कार देती है। माता मानो धिक्कार करके उसकी प्रतिभा में एक महानता का प्रवेश कर देती है। और देखो, उत्पत्ति के मूल में मानो तमोगुण विद्यमान है जो ओषधियों के रसों को अपने में सिंचन करती हुई मानो देखो, वह उत्पत्ति के रुप में एक प्रतिभा कहलाती है।

तो मेरे प्यारे! महर्षि रेंगणी भारद्वाज ने अपनी पत्नी शकुन्तका से कहा हे देवी! ये सर्वत्र गुण मानो देखो, प्रायः हमें प्राप्त होते रहते हैं। जिनके ऊपर हमें चिंतन और मनन करना है। मानो प्रातः कालीन, सूर्योदय होने से पूर्व ही प्रभु का चिंतन होता है अथवा मनन करते रहते हैं। विचारते रहते हैं कि हे विष्णु! तू पालन करने वाला है, तू संसार का नियन्ता, निर्माण करने वाला है। मानो जब मैं पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश करता हूँ, तो वहाँ नाना प्रकार का खाद्य–खनिज विद्यमान है मानो देखो, वही खनिज है जो वाहनों में क्रियाकलापों में परिणत होने लगता है। वही वाहन मानो सूर्य की नाना प्रकार किरणें जो ऊर्ज्वा लेकर आती है मानो देखो बेटा! ऊर्ज्वावादी बन जाता है।

देवयाग

विचार विनिमय क्या, आचार्य कहता है–हे देवी! हमें प्रातः कालीन मानो देखो, ब्रह्मयाग करना है। ब्रह्मयाग के पश्चात् मुनिवरो! देखो, हमारे यहाँ देवयाग है। देवयाग किसे कहते हैं? जब प्रातः कालीन मानो देखो, अपने गृह में, शुद्ध वायुमण्डल, अग्नि का ध्यान करते हैं, अग्नि को प्रदीप्त करके मानो देखो, स्वाहा कहते हैं। जैसा मुनिवरो! देखो, ऋषि कहते हैं कि ये जो स्वाहा है, यज्ञ का आत्मा है। मानो देखो, यही तो संसार का आत्मा माना गया है। मेरे पुत्रो! देखो, वेद का आचार्य कहता है, वेद का मंत्र भी यह उद्गीत गाता है कि मानो अपने में महानता का प्रायः दर्शन हो।

तो मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि ने कहा, सम्भव ब्रह्मे हे देवी! मानो देखो, अव्रत कहलाता है। यह हमारे यहाँ ऊर्ध्वा में रत रहने वाला है। मानो देखो, उसी प्रकार वेद के आचार्य ने वर्णन किया है कि देव पूजा कहते हैं अग्नि के मुखारबिन्दु में मानो देखो, स्वाहा कहना, अग्नि उसका विभाजन कर देती है और विभक्त करके ही मुनिवरो! देखो, यह संसार का कण–कण व्याप्त हो रहा है। तो विचार विनिमय क्या आचार्य ने कहा है–कि देव पूजा के पश्चात् मानो पितर याग आता है।

पितर याग

तो मुनिवरो! देखो, एक समय पति–पत्नी दोनों याग कर रहे थे। रेंगणी भारद्वाज और उनकी पत्नी शंकुन्तका जब याग कर रहे थे, प्रातः कालीन देवपूजा के समय वह बोले कि देवी! आज तो हमे पितर याग करना है मानो देखो, पितरों का याग करना है। देवी ने कहा–प्रभु! बहुत प्रियतम, मानो पितर याग तो होना ही चाहिए। तो मुनिवरो! देखो, वहाँ पितरों को निमन्त्रित किया। हमारे यहाँ नाना रुपों में पितरों की विवेचना आती रहती है। वेद मंत्रों में तो जड़ और चैतन्य दोनों ही पितर याग कहलाते हैं। मानो देखो, राजा भी पितर है, आचार्य भी एक पितर कहलाता है। मानो देखो, सूर्य भी पितर कहलाता है। चन्द्रमा भी पितर कहलाता है ये सब पितर ही पितर कहलाते हैं। आचार्य जन क्या, मानो देखो, ये कैसे पितर कहलाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, इनमें से कुछ जड़ पितर हैं, जड़ देवत्तव है और कुछ मानो देखो, चेतना में निहित रहते है। तो वह जो चेतनावादी है वह कौन हैं? माता है। सबसे प्रथम देखो, माता कहलाती है। जो मानो पितर कहलाती हैं और पितर, पितर कहलाता है। आचार्य हमें जीवन प्रदान करते हैं तो वह पितर कहलाते हैं मानो देखो, यह पितरो ब्रह्मा वाचः।

भारद्वाज वंश

तो रेंगणी भारद्वाज मुनि ने कहा–देवी! हमें पितर याग करना है। उन्होंने बेटा! मानो देखो, अपने वंशलज में जो भी उनके पितर कौटि के प्राणी थे, उन सबको निमंत्रित किया और उनको भोज कराया। मेरे पुत्रो! देखो, निमंत्रण पर सब पितरजन, उनके महापूर्वज माना देखो, जो संसार में थे, वह भोज प्राप्त करने के लिए आ पहुँचे, उन्होंने कहा– भगवन्! आप हमारे पितर हैं। हमें कोई उपदेश दीजिए भगवन्! उन्होंने कहा–हे रेंगणी भारद्वाज! जो तुम्हारा क्रियाकलाप है वह हमें बहुत प्रिय लग रहा है। हमारे वंशलज में सदैव मानो देखो, सत्यवादी पुरुष होते चले आए हैं। हमारा जो वंशलज है वो बड़ा विचित्र रहा है मानो देखो, भारद्वाज गोत्रों में, ऋषि कहते हैं कि हमारा जो वंश चल रहा है ये मानो देखो, इक्तीस हजार पैंसठ वाँ वंश चल रहा है। मानो देखो, हमारे गोत्रों का जो निकास है, वह हरितत् गोत्रों से हुआ है जिनमें इक्तालीस हजार पांच सौ बावन मानो देखो, रक्त वंशलज समाप्त हो गये है। इसी प्रकार हमारा गोत्र मानो देखो, वायु गोत्रों से उत्पन्न हुआ है। वायु गोत्रों में भी प्रायः ऐसे क्रियाकलाप होते रहे हैं।

तो मेरे प्यारे! देखो, उन पितरों ने यह कहा–कि हमारे सत्य ब्रह्मा वाचप्रमाण लोकाम् ये जो पितर जन हैं मानो देखो, इनमें सदैव सत्यवादी पुरुष होते चले आए हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, ये वाक् दोनों प्रकट कर रहे थे। ब्रह्माः वाचम् देखो, सब पितर जन यह उपदेश दे करके, कि हमारे जो नाना विचार धारा वाले जो हमारे पूर्वज हुए हैं उन्ही विचारधाराओं को लेकर के हमें अपने जीवन को व्यतीत करना चाहिए।

मेरे पुत्रो! देखो, इतने में ही वे पितर जन, अपनी–अपनी आज्ञा पाकर के बेटा! अपने गृह को उन्होंने प्रस्थान किया और भ्रमण करते हुए, वह गृह में पहुँचे। परन्तु देखो, जब वह अपने आश्रम में, अपने– अपने कक्ष में मुनिवरो! पति और पत्नी पहुँचे तो मुनिवरो! देखो, उनके यहाँ एक बाल्य क्रीड़ा कर रहा था जिसको श्वेताश्वेतर कहते थे। श्वेताश्वेतर ने कहा–हे ब्रह्मा! व्रतुम् मानो तीन वर्ष चार दिवस की आयु बाल्य की थी। तो मुनिवरो! देखो, प्रातः कालीन माता ने भोजन कराया था। जब पितर ने यह कहा–पितरयाग करने के पश्चात्–हे बाल्य! तुमने भोज किया अथवा नहीं। उन्होंने कहा–मैंने नहीं किया। मानो देखो, उस समय उन्होंने कहा–हे देवी! तुमने बाल्य को भोजन नहीं कराया है। उन्होंने कहा–प्रभु! मैंने भोजन कराया हैं।

मेरे प्यारे! देखो, रेंगणी ऋषि कहते हैं–हे बाल्य! मानो हमारा वंशलज ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा से चला आ रहा है। परन्तु देखो, इनमें कोई ऐसा नहीं है जिन्होंने मानो देखो, मिथ्या उच्चारण किया हो। हे बालक! तू मिथ्या उच्चारण कर रहा है, तुझे धिक्कार है। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा– देवं ब्रहा हे बालक! तू अशुद्ध है। मानो देखो, माता ने एक ही शब्द कहा था उस समय, हे ब्रह्मचारी! जिस माता के गर्भ से अशुद्ध उच्चारण करने वाले बाल्य का जन्म होता है तो उस माता का गर्भाशय दूषित हो जाता है।

मेरे प्यारे! देखो, जब माता धिक्कारने लगी, वो शब्द बोले तो मानो देखो, वह बाल्य अपने में शांत हो गया, बेटा! काल समाप्त होता गया। तो बेटा! देखो, वो बाल्य जब मानो देखो, प्रबल हुआ। प्रबल होने के पश्चात् उन्होंने बेटा! उसका उपनयन संस्कार कराया और उपनयन कराने के पश्चात् आचार्य कुल में प्रवेश किया। आचार्य कुल में मानो महर्षि तत्त्वमुनि महाराज बेटा! 284 वर्ष के ब्रह्मचारी थे, उस समय। उनके गृह में, उनके कुल में उनका प्रवेश कराया और प्रवेश कराके जब उनका विद्या अध्ययन प्रारम्भ हुआ, वेदारम्भ हुआ तो आरम्भ होते ही बेटा! उनमें जो परमाणु विद्या थी, उस परमाणु विद्या को अपने में अध्ययन करना उन्होंने प्रारम्भ किया। मानो देखो, वो परमाणु विद्या अपने में एक अनूठी कहलाती है।

अन्तरिक्ष यात्रा

तो मेरे प्यारे! देखो, कुछ समय के पश्चात् ब्रह्मवाचप्रहा आचार्य मानो देखो, उनकी परीक्षा भी लेते रहे। उनके यहाँ बेटा! जहाँ विद्यालयों में शिक्षा के कक्ष थे वहाँ मानो देखो, विज्ञान अपनी स्थली पर बेटा! बड़ी ऊँची उड़ाने उड़ रहा था। तो मुनिवरो! देखो, वह अपनी विज्ञानशाला में अनुसंधान भी करते रहते थे। एक समय बेटा! देखो, महर्षि श्वेतावेतर भारद्वाज मानो देखो, तत्व मुनि महाराज अपने यान में विद्यमान हो करके, उनके यहाँ जो विद्यालय में जो विज्ञान था वह मानो बड़ा अनूठा, नाना प्रकार के अस्त्र–शस्त्र एक यत्र में विद्यमान होकर उन्होंने कहा–जाओ, ब्रह्मचारियों! अंतरिक्ष की यात्रा करके आओ। तो बेटा! देखो, उसमें कौन–कौन ब्रह्मचारी थे? बेटा! उसमें देखो, श्वेतावेतर ब्रह्मचारी, रोहिणीकृतिका, म्रेचकेतु मानो ये तीनों ब्रह्मचारी अपने में उड़ान उड़ते हुए बेटा! यान में विद्यमान हो करके, जब उड़ान उड़ने लगे तो बेटा! पृथ्वी के आश्रम से उड़ान उड़ी, विद्यालय से उड़ान उड़ते ही सबसे प्रथम बेटा! वो मानो चन्द्रमा में पहुँचे और चन्द्रमा से उड़ान उड़ते हुए बुद्ध में पहुँचे और बुद्ध से उड़ान उड़ते हुए मानो देखो, वह शुक्र में पहुँचे और शुक्र से उड़ान उड़ी तो बेटा! वह मंगल में चले गए। मंगल से उड़ान उड़ी तो स्वाति नक्षत्र में चले गए, स्वाति से उड़ान उड़ी तो मृचिका मण्डल में चले गए। मृचिका मण्डल से उड़ान उड़ी तो रोहिणीकेतु मण्डल में चले गए। रोहिणी केतु मण्डल से उड़ान उड़ी तो कृतिका में चले गए और कृतिका से उड़ान उड़ी तो वह अरून्धती मण्डल में चले गए, अरुन्धती मण्डल से उड़ान उड़ी तो बेटा! वो वशिष्ठ मण्डल में चले गए, वशिष्ठ मण्डल से उड़ान उड़ी तो विश्वकेतु मण्डल में चले गए, विश्वकेतु मण्डल से उड़ान उड़ी तो क्रोणकेतु मण्डल में चले गए, क्रोणकेतु मण्डल से उड़ान उड़ी तो बेटा! देखो भ्रणी नक्षत्र में चले गए, जब भ्रणी मण्डल में पहुँचे तो भ्रणी मण्डल से जब उन्होंने उड़ान उड़ी तो देखो, वह श्वानभ्रणी मण्डल में प्रवेश कर गए बेटा! मूल यह कि वह 72 लोकों का भ्रमण करके मानो वह ब्रह्मचारी आचार्य के विद्यालय में कुछ समय के पश्चात् विराजमान हुए।

मेरे प्यारे! देखो, विज्ञान अपनी स्थलियों पर बड़ा अनूठा रहा है। बड़ा विचित्र रहा है। जब मैं विज्ञान की चर्चाएँ करने लगता हूँ तो बेटा! हृदय गद्–गद् हो जाता है। ऐसा प्रतीत होता जैसे आज हम मानो महर्षि तत्त्व मुनि के आश्रम में विद्यमान हो करके लोक लोकान्तरों को निहार रहे हैं।

तो आओ बेटा! देखो मैं विशेष चर्चा न करता हुआ विचार केवल यह कि मुनिवरो! देखो, श्वेतावेतर अध्ययन करते रहे, विज्ञान के वांगमय में प्रवेश होते रहे। मुनिवरो! देखो, कुछ समय के पश्चात् ब्रह्मचारी का, विद्यालय का काल समाप्त हो गया। विद्या जब पूरी हो गई तो एक समय उन्होंने कहा–ब्रह्मचारी! तुम्हारा अध्ययन का काल, जिसमें विद्यालय में शिक्षा मानो वह तुम्हारी पूर्ण हो चुकी है। अब मेरी इच्छा यह कि तुम विद्यालय से अपना अवकाश प्राप्त करो। उन्होंने कहा–बहुत प्रियतम, मुझे भगवन्! दीक्षां मुझे दीक्षित बनाइए। उन्होंने कहा–बहुत प्रियतम् मानो बेटा! देखो, वो विराजमान हो गए।

३९

दीक्षान्त उपदेश

विराजमान होकर के आचार्य ने कहा–हे ब्रह्मचारी! आज तुम मानो देखो, इस विद्यालय को त्याग रहे हो, आओ, मैं तुम्हें अपना दीक्षान्त उपदेश देना चाहता हूँ। उन्होंने कहा–हे ब्रह्मचारी! जिस स्थली पर, जिस विद्यालय में तुमने मानो देखो, विद्या का अध्ययन किया है। वह स्थली तुम्हारी दृष्टि में मानो पावन और पवित्र बनी रहे और महान बनी रहे। मानो देखो, यह स्थली बड़ी पावन रही है। जहाँ ब्रह्मचारी ने अपने जीवन के तथ्यों को प्राप्त किया है, जहाँ ब्रह्मचारी ने अपनी ब्रह्मचरिष्यामि मानो देखो, अपने करुणामयी जीवन को ऊँचा बनाया है, और उन्होंने देखो, ब्रह्मचारी बनकर के, ब्रह्म को प्राप्त किया है। ब्रह्मचारी मानो देखो, दो अक्षरों से बनता है एक मानो देखो, ब्रह्म है और दूसरा चरी है। मेरे पुत्रो! देखो, चरी नाम प्रकृति को कहा जाता है और ब्रह्म नाम परमपिता परमात्मा का है। जब मानो देखो, दोनों को अंग और उपांगों से जो जानने वाला है वही तो ब्रह्मचारी कहलाता है, वही तो ब्रह्मचरिष्यामि बनता है।

विद्यार्थी का कर्तव्य

तो आओ मेरे पुत्रो! देखो विचार यह चल रहा है। आचार्य यह कहता है ब्रह्मा व्रणं ब्रहे वाचन्नमं ब्रह्मा कृतुं लोकाम् वेद का आचार्य कहता है–हे ब्रह्मचारी! तुम ब्रह्मचारी बनों और ब्रह्म की जिस विद्या का तुमने अध्ययन किया है। जिस विद्या का तुमने अंग और उपांगों से जानने का प्रयास किया है हे मानव! यह तुम्हारे जीवन में शाश्वत बनी रही। इस विद्या का तुम अध्ययन करते हुए, अपने में महानता का प्रायः दर्शन करते रहो। हे ब्रह्मचारी! जिस विद्या का तुमने अध्ययन किया मानो उसको साकार रुप बनाना तुम्हारा कर्तव्य है। ज्ञान और विज्ञान के वांगमय में प्रवेश होकर के मानो तुम्हें महानता का दर्शन करना है। मेरे पुत्रो! आचार्य ने कहा हे ब्रह्मचारी! मानो देखो, यही तुम्हारा कर्तव्य है। तुम अपने में ज्ञान विज्ञान और प्रभु का दर्शन मानो देखो, इसमें तुम सदैव संलग्न हो जाओ। मेरे प्यारे! देखो, आचार्य ये उच्चारण करके बेटा! मौन हो गया। ब्रह्मं ब्रह्माः लोका मृत्युंजं ब्रह्मेः मानो देखो, जो मृत्यु को प्राप्त करने वाला है वही तो ब्रह्म की चरी को चरने वाला है।

महानता की ज्योति का दर्शन

तो आओ, मेरे पुत्रो! देखो, आज का विचार, आज मैं क्या उपदेश देने चला हूँ आज मेरा यह विषय नहीं था। परन्तु वेद का एक मंत्र आया तो मैं इसकी विवेचना करने लगा। तो मेरे पुत्रो! देखो, वेद का ऋषि कहता है, आचार्य कहता है–हे मानव! तू अपने जीवन को ऊँचा बनाते हुए मानो ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ते हुए, तुम संसार सागर से पार हो जाओ। मेरे पुत्रो! देखो, श्वेताश्वेतर भारद्वाज मुनि महाराज ने अपने आचार्य का दीक्षान्त उपदेश पान करते हुए आचार्य ब्रह्माः वह भयंकर वन में चले गए। वहाँ मुनिवरो! देखो, वह अपने प्रभु का चिंतन करने लगे। चेतना में चेतना का दर्शन जब करने लगे, तो मेरे प्यारे! देखो, उसमें महानता की ज्योति का उन्हें प्राय दर्शन होने लगा। जब महानता की ज्योति का दर्शन हुआ तो वे ज्योर्तिवान बन गए।

तो मुनिवरो! देखो, एक समय माता का वो शब्द, जो माता ने शब्द कहा था, जो पितर ने बाल्यकाल में कहा था। हे बालक! हमारे वंशलज में कितने महापुरुष हुए, परन्तु कोई मिथ्यावादी नहीं हुआ। माता कहती थी कि ब्रह्मेः अशुद्वां ब्रहे गर्भाशय अशुद्ध हो जाता है मिथ्या उच्चारण करने से, मानो देखो, वह बालक, वह ब्रह्मचारी मेरे पुत्रो! देखो, महान तपस्वी वो अपने में विचारने लगा, मुझे तो माता के विचारों को साकार रुप देना है। आचार्य के विचारों को साकार रुप देना है जो मैंने अध्ययन किया है।

मेरे प्यारे! देखो, भयंकर वन को त्याग करके वह सोमकेतु राजा के समीप पहुँचे। सोमकेतु राजा ने विचारा अहो, यह तो मुझे श्वेताश्वेतर भारद्वाज का दर्शन हो रहा है। बेटा! देखो, उन्होंने कहा–आइए, भगवन्। राजस्थली को त्याग दिया और राजस्थली को त्याग करके, कहा–आइए भगवन! विराजिए। वे विराजमान हो गए, अपनी स्थली पर विद्यमान हो करके, मेरे पुत्रो! देखो, उन्होंने कहा–कहो भगवन्! आज मेरी राष्ट्रस्थली को आप कैसे पवित्र बना रहे हैं? उन्होंने कहा–पवित्रां भवा, ब्रह्मब्रह्मे वाचन्नमम् मानो देखो, मेरा एक ही उद्देश्य रहा है। मेरे जीवन काल का एक उद्देश्य बन गया है कि मैंने जिस विद्या का अध्ययन किया है, मुझे आचार्यों की आज्ञा प्राप्त है कि उस विद्या को उस मानो विज्ञान को तुम साकार रुप दो। तो मुनिवरो! देखो, महर्षि भारद्वाज श्वेताश्वेतर के वाक्यों को पान करके राजा ने कहा–प्रभु आपको यह प्रतीत है कि ये जो विद्यमान है ये मानो आपका है। भगवन! मेरा जो राष्ट्र है वो मेरा नहीं इदन्नमम् वो सब आपका है। हे प्रभु! आप जिस भी प्रकार से मानो इसका उपयोग करना चाहते हो, उसी प्रकार ही करो।

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि के हर्ष की कोई सीमा न रही। तो मेरे पुत्रो! श्वेतश्वेतर ने मानो कजली वनों में एक मुनिवरो! देखो, यज्ञशाला से अपने विज्ञान का, अपने जीवन की प्रतिभा का अध्याय प्रारम्भ किया। मुझे ऐसा बेटा! स्मरण आ रहा है। ऐसा मुझे प्रतीत है। मानो देखो, जब वे अध्ययन ब्रह्माः मानो देखो, यज्ञशाला देखो, 24 कोणों की यज्ञशाला का निर्माण किया और मानो देखो, उसमें विज्ञान की धाराओं की आभा में प्राप्त होते हुए उन्होंने बेटा! देखो, तरंगों को तरंगित करते हुए उन्हें दृष्टिपात करने लगे। तो बेटा! देखो, उन्होंने सबसे प्रथम, जब विज्ञान मानो देखो, उनके मस्तिष्क में पनपने लगा तो सबसे प्रथम उन्होंने एक ऐसे यंत्र का निर्माण किया, जैसे एक मानव एक स्थली पर विद्यमान है मानो देखो, उसके प्रस्थान होने के पश्चात् उस मानव का उसमें ढाई घड़ी के पश्चात् बेटा! उसमें चित्र आ जाता है।

मेरे पुत्रो! देखो, जब ऋषि को, ब्रह्मचारी को यह निश्चिय हुआ जो मेरी माता ने अथवा पितर ने जो मुझे कहा है वो यथार्थ है। मानो प्रायः ऐसा ही है। तो मुनिवरो! देखो, ऐसा मुझे बेटा! स्मरण आ रहा है। जब मैं इन वाक्यों पर विचार विनिमय करता हूँ तो ऋषि मुनियों का जीवन कितना महान विज्ञानमय रहा है। तपश्चर जनों की आभाओं में प्रतिकाओं में निहित होता रहा है। तो मेरे पुत्रो! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है, आज जब मैं उस काल को मानो अपने अन्तर्हृदय में निहारने लगता हूँ तो प्रायः मानो देखो, जैसे आज हम भारद्वाज मुनि के विद्यालय में विद्यमान हैं। मेरे पुत्रो! भारद्वाज मुनि महाराज ने नाना प्रकार के यंत्रों का एक समय बेटा! एक वेद मंत्रः मानो उनके समीप आया। मानो ब्रह्मचारी सुकेता विद्यमान हैं। ब्रह्मचारी कवन्धी है, पनपेतु ऋषि महाराज।

मेरे पुत्रो! देखो, राजा रावण के विधाता कुम्भकरण मानो एक स्थली पर अध्ययन कर रहें है। जब अध्ययन हो रहा था तो उस समय ये वेद मंत्र था चित्रं बिन्द्वां भवाः ब्रह्मे वाचन्नमं ब्रह्मेः माताः मेरे प्यारे! देखो, वेद का मंत्र यह कहता है कि एक बिन्दु में, एक शिशु है और शिशु में ये मानव की प्रतिभा नियुक्त रहती है। मेरे पुत्रो! देखो, इसी वाक् को चिन्तन करने लगे। बिन्द्वां भवा ब्रह्मेः वाचन्नम् मेरे पुत्रो! देखो, एक–एक रक्त बिन्दु में, जिस मानव के रक्त का बिन्दु है। मुनिवरो! देखो, उस मानव के चित्र का साक्षात्कार दृष्टिपात आते रहते हैं।

तो मेरे प्यारे! देखो, इसमें ये सिद्ध हुआ कि एक–एक रक्त के बिन्दु में कितना परमाणु हैं। जितने परमाणुओं से माता के गर्भ में पुत्र का निर्माण हो रहा है। तो मेरे पुत्रो! देखो, यह प्रभु की प्रतिभा अथवा ये विज्ञान अपनी स्थलियों में बेटा! बड़ा विचित्र रहा है। बड़ी आभा में निहित रहा है।

ऋषियों का तप

तो आओ मेरे पुत्रो! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, केवल ये वाक् इसीलिए प्रकट कर रहा हूँ क्योंकि हमारे ऋषि मुनियों ने अपने जीवन काल में तप और महानता की आभा में सदैव निहित रहे हैं। ये है बेटा! हमारा आज का वाक्। आज के वाक् उच्चारण करने का हमारा अभिप्राय क्या? कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए और मानो देखो, ज्ञान और विज्ञान को अपने में जानते हुए और मानो अपने मानवीय दर्शनों में जब निहित हो जाते है तो बेटा! एक महानता का जन्म हो जाता है। यह है बेटा! आज का वाक्।

आज का वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय हमारा क्या। मेरे पुत्रो! देखो, यहाँ नाना प्रकार के याग होने चाहिए, जैसे ब्रह्म का चिंतन है। ब्रह्म में तपश्चर होना है। जैसे देव याग है, देवताओं की आज्ञा का हमें पालन करना है। मानो देखो, पितरों में प्रवेश करना है। मुनिवरों! देखो, परमपिता परमात्मा का जो रचाया हुआ यह ब्रह्माण्ड है इसमें जो अनूठा ज्ञान और विज्ञान हमें दृष्टिपात आ रहा है। उस ज्ञान और विज्ञान को जानकर के हमें इस संसार सागर से पार होना है। ये है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रकट करूँगा। आज का वाक समाप्त अब वेदों का पाठन–पाठन होगा।

ओ३म् ब्रह्मगणाः वाचन् रथप्रावाह्यो रथाम्।
ओ३म जनी वरूण प्रागतं मान।

अच्छा भगवन्

7.11.88 दिनकापुर
मु0 नगर

महर्षि याज्ञवल्क्य और शतपथ ब्राह्मण

जीते रहो,

देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मंत्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मंत्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेद–वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं और जितना भी ये जड़ जगत् अथवा चैतन्य जगत् हमें दृष्टिपात आ रहा है। उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, प्रायः वो मेरा देव ही दृष्टिपात आ रहा है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप है। मानो याग उसका गृह है, उसका आयतन है और उसका सदन हैं क्योंकि वह यज्ञोमयी स्वरूप हैं। उस परमात्मा को हमारे यहाँ यज्ञोमयी स्वरुप माना गया है।

वेद में संसार की प्रतिभा

वास्तव में मानव जब किसी भी विचार विनिमय में प्रवेश करता है। तो चिंतन करते, करते, जब वह अंतिम सूत्र में प्रवेश करता है तो उसमें एक अनन्तता का उसे भास होता है और यह विचारता है कि ये संसार और मेरी जो विचार धारा है उसमें अन्त में एक अन्त अवृति आ, उसमें अनन्तता मुझे दृष्टिपात आ रही है। उस अनन्तता के गर्भस्थल में, मानो उस परमपिता परमात्मा की प्रीति भी हमें प्रतीत होने लगती है।

तो आओ मेरे पुत्रो! आज मैं तुम्हें विशेष विवेचना तो देने नहीं आया हूँ, विचार केवल हमारा यह है कि हमारे यहाँ वेदों की जो प्रतिभा अथवा उसका जो दर्शन होता रहा है। उस वेद के वांगमय में संसार की प्रतिभा निहित रहती है। जब मानव अपने जीवन को महान और याज्ञिक बनाने के लिए तत्पर होता है तो मानो उसे भिन्न–भिन्न प्रकार के, सहयोग की आवश्यकता होती है। जब मानव विज्ञान के वांगमय में प्रवेश होता है और विज्ञान में जब काल्पनिक विचारों में संलग्न होता है तो उसका जो वास्तविक दर्शन करता है वही दर्शन तो मानवीय दर्शन कहलाता है।

तो आओ, मेरे पुत्रो! आज का हमारा वेद मंत्र क्या कह रहा है? कि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरुप है मानो याग उसका गृह माना गया है। गृह का अभिप्राय यह है कि उसी में वह मानो संलग्न रहता है और वह उसी में ही समाहित रहता है। जैसे मानो अपने में अपनेपन का दर्शन करता हुआ, उसमें प्रायः वो समाहित हो जाता है। तो आओ, मेरे पुत्रो! आज का हमारा, वेद मंत्र आज की हमारी एक मौलिक धाराएँ, हमें मानवीय दर्शनों के ऊपर मानो देखो, दर्शाती रहती है। तो आओ मेरे पुत्रो! आज का हमारा वेद मंत्र कुछ कह रहा था, कुछ प्रेरणा दे रहा था। जब हम उससे प्रेरित होते हैं और प्रेरणा को प्राप्त करते है तो मानो अपने में ऊर्ध्वगति करने लगते है तो हमारे जीवन में एक महानता अभ्योद प्रमाणं मानो आभा उसमें रत होने लगते हैं।

तो आओ, मेरे पुत्रो! आज मैं तुम्हें कुछ यागों की चर्चाएँ, मानो देखो, कुछ वेद मंत्रों में उसे परमपिता परमात्मा जो अग्निमयी स्वरुप माना गया है। मानो उसका वर्णन आ रहा था। आज मैं उसकी वर्णनशैली में तो जाना नहीं चाहता हूँ केवल यह कि हमारे यहाँ यागों का बड़ा महत्व माना गया है। परम्परागतों से ही मानो याग के ऊपर ऋषि–मुनियों ने बड़ा अनुसंधान किया है। मानो संसार की प्रत्येक वस्तु का नामोकरण हमारे यहाँ याग के रूप में परिणत किया गया है।

शतपथ ब्राह्मण

मेरे प्यारे! आओ, आज मैं देखो, एक आसन पर ले जाना चाहता हूँ। मेरे पुत्रो! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज, अपने आश्रम में, आसन पर विद्यमान रहते और नाना ऋषिवर, ब्रह्मचारी जन, उनके समीप आ करके मानो उन्होंने एक पोथी का निर्माण किया था। जिस पोथी का नाम शतपथ ब्राह्मण कहा जाता है। शतपथ ब्राह्मण नाम की पोथी का निर्माण मानो उसकी प्रतिभा का दर्शन, वो प्रायः अपने में ही करते रहते थे।

मेरे पुत्रो! देखो, एक समय उनके यहाँ कुछ ऋषि मुनियों का आगमन हुआ। वह अपने विद्यालय के प्रांगण में, शांत मुद्रा में विद्यमान थे। मेरे प्यारे! कहीं से भ्रमण करते हुए महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि के यहाँ बेटा! माता अरून्धती और महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज भ्रमण करते हुए मेरे पुत्रो देखो! वे याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में पधारे। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! ब्रह्मवेत्ता का मानो अपने में दर्शन करते हुए मुनिवरो! देखो, उनको आसन दिया। वे आसन पर विद्यमान हो गए। महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि बोले–कहो, ब्रह्मणं ब्रहे व्रत्तम हे ब्रह्मवेत्ताओ! तुम्हारा आगमन कैसे हुआ? मुनिवरो! महर्षि वशिष्ठ मुनि बोले–कि आज ऐसी इच्छा बन पाई कि चलो, महापुरुषों के दर्शन कर आये और अपने में मानो कुछ शंकाओं का निवारण भी करें।

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज बोले कि हे भगवन्! मैं नहीं जान पाता कि आप जैसे ब्रह्मवेत्ता, ब्रह्मनिष्ठों को भी शंकायें उपलब्ध हो जाती है। महर्षि वशिष्ठ मुनि बोले–कि शंकायें क्या, संसार में जितना भी प्राणी जन्म लेता है अथवा जितना भी गम्भीर मुद्रा में मुद्रित हो जाता है, उसमें प्रवेश कर जाता है तो मानो देखो, वह जितना भी अध्ययन करता है इस संसार का, क्योंकि वह अभ्योव्रतः उसके गर्भ में जब वो प्रवेश करता है तो चाहे उसकी सहस्रों वर्ष की आयु हो जाए, परन्तु वह भगवान के राष्ट्र में एक मानो देखो, अध्ययन करने वाला विद्यार्थी कहलाता है। किसी भी वस्तु का अध्ययन करता है तो मानो वह विद्यार्थी है। वहाँ शंकाएँ नहीं हुआ करती क्योंकि जानकारी करना, यह तो मानव का एक कर्तव्य माना गया है। मेरे प्यारे! देखो, याज्ञवल्क्य ऋषि बड़े प्रसन्न हुए, और माता अरुन्धती और वशिष्ठ दोनों का उन्होंने स्वागत किया और कुछ कंदमूल इत्यादियों का पान कराया। पान कराते मानो देखो, आसन पर विद्यमान हो गए।

कन्यायाग

माता अरुन्धती बोली कि हे ऋषिवर! मैं आप से कुछ प्रसन्न करना चाहती हूँ? उन्होंने कहा–माता! प्रश्न नहीं, आप मातेश्वरी अरून्धती! मुझे आज्ञा दीजिए। मानो देखो, जो सेवा हो सकेगी, जानता हूंगा तो तुम्हें अवश्य मानो तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर दूँगा। माता अरून्धती ने कहा हे याज्ञवल्क्य! हम ये जानना चाहते हैं कि हम ब्रह्मे मानो देखो, हम वेद का अध्ययन कर रहे थे और वेद का अध्ययन करते, उसमें एक वेद मंत्र आया था। कन्यां ब्रह्माः कन्यां रूद्राः कन्यां ब्रह्े व्रतं देवाः पुत्रो भवः यागां ब्रह्म वृत्ति देवाः मेरे प्यारे! देखो, माता अरून्धती ने यह वेद का मंत्र, आख्यायिका उच्चारण की और यह कहा कि वेद मंत्र भगवन्! यह कैसा है कि देखो, अन्नां ब्रहे कन्यां प्रह्ना वेद का वाक् कहता है कि ये जो कन्या है! यह देव लोक में रहती हैं। कन्या जब देवलोक में रहती है तो मानो वो पितर लोक और मानो कुलेभ्यो ब्रह्मे मानो देखो, पति लोक को प्राप्त हो जाती है। तो हम ये जानना चाहते हैं भगवन् हे याज्ञवल्क्य! क्योंकि आप तो दर्शनों के मर्म को जानते हैं और आख्यिकाओं को जानते हैं, वेद मंत्र में आख्यायिकाएँ आती रहती है। परन्तु हम ये जानना चाहते हैं कि वो कन्या का याग कौन–सा है? जहाँ भिन्न–भिन्न प्रकार के यागों का वर्णन है। जैसे वाजपेयी याग है, अग्निष्टोम याग है, अश्वमेघ याग है, नरमेघ याग है, गौमेघ याग है, अजामेघ याग है मानो देखो, एक कन्या और देवी याग भी कहलाता है। तो मैं कन्या याग के सम्बन्ध में जानना चाहती हूँ जहाँ वेद में भिन्न–भिन्न प्रकार के मंत्रों की झड़ियाँ लगी रहती है। वहाँ मानो देखो, कन्या याग का वर्णन आता है, कन्या याग को जानने के लिए हम आए हैं।

देव लोक

मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा–कि हे माता! मैं तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर, जितना जानता हूँ मैं अवश्य दूँगा। माता अरुन्धती बड़ी प्रसन्न हुई उन्होंने कहा–बोलो ऋषिवर! मानो ये क्या है? तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने अपना वाक् उच्चारण करते हुए कहा–कि मेरे विचार में यह आता है कि कन्या जब संसार में आती है तो मानो इस पृथ्वी तल पर आती है। उस समय इस कन्या का मानो यह संसार देव लोक बना रहता है। जब बाल्य काल होता है, तो कौन रक्षा करता है? मानो देवता जन उसकी रक्षा करते रहते हैं। देवताजन उसके अंग–प्रत्यंग में विद्यमान है, वह प्रेरणा को प्राप्त करके मानो प्रेरित हो करके मानो उसकी रक्षा करते रहते हैं। वह कन्यां ब्रह्मा देवत्याम् बाल्यकाल मानो देखो, संसार में मानव का देवलोक कहलाता है। उसमें देवता जनों से मानो बाल्य प्रेरणा प्राप्त करता रहता है। हे कन्या! जब तू इस संसार में, मानो आती है तो तेरा देवलोक इतना भव्य बन जाता है।

पितर लोक

मेरे प्यारे! देखो, इसी आभा को लेकर के ऋषि ने कहा– द्वितीय लोक हमारे यहाँ पितर कहलाता है। मैंने पितर की चर्चाएँ बेटा! इससे पूर्व काल में वर्णन भी की कि पितर जन कौन होते हैं? मेरे प्यारे! पितर वह होते हैं जो मानव को देखो, ऊर्ध्व मार्ग की शिक्षा देते हैं। जो मानव को सदमार्ग पर मानो देखो, प्रेरित करते रहते है। वही सद्मार्ग मानव का देखो, पितर लोक कहलाता है। हमारे यहाँ पितरों की विवेचना करते हुए आचार्यों ने कहा है कि सूर्य हमारा देवता, सूर्य हमारा पितर कहलाता है और वह सूर्य कैसा पितर है मुनिवरो! देखो, द्यौ से वह ऊर्जा लेता है और मुनिवरो! देखो, प्रकाश और ऊर्जा देता रहता है। उसका द्यौ से समन्वय रहता है और समन्वय रह करके मुनिवरो! देखो, वह प्रकाश देता रहता है। वह जो प्रकाश देने वाला, वही तो पितर कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, वह उस कन्या का पितर लोक कहलाता है। पितर देखो, वह जो संरक्षण कराता है अथवा आचार्य कुल में प्रवेश करता हुआ ब्रह्मचारी अथवा ब्रह्मचारिणी मेरे प्यारे! अपने पितर लोक को ऊँचा बनाते रहते है और पितर मानो देखो, अपने कर्तव्य का पालन करते हैं। पितरजन मानो देखो, उनकी रक्षा, उनकी दीक्षा नाना प्रकार के देखो, आभा में परिणत कर देते हैं।

पति लोक

मेरे प्यारे! देखो, जब उसका पितर लोक भी समाप्त होता है तो वह मानो देखो, अप्रतं ब्रह्माः अपनी युवावस्था को प्राप्त हो करके, वही कन्या मानो पितर लोक से मुनिवरो! देखो, कुलेभ्यां ब्रह्मा वाचाः वह पति लोक को प्राप्त हो करके बेटा! वहाँ उसे याग करने का अधिकार प्राप्त होता है। याग के अधिकार का अभिप्राय क्या? याग किसे कहते है? हमारे यहाँ याग के सम्बन्ध में माता अरून्धती ने कहा कि इस याग को तो हम भगवन् जानते हैं जब पति लोक को प्राप्त होते हैं। परन्तु याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा हे माता, हे अरुन्धती! एक समय मैं भ्रमण करता हुआ मानो देखो मगध राष्ट्र में पहुँचा था और मगध राष्ट्र में मुनिवरो! देखो, महर्षि वरतेन्तु मुनि अपने में मानो देखो, अध्ययन कर रहे थे। वरतेन्तु मुनि महाराज की पत्नी विद्यमान थी परन्तु वह पुत्रो अवृतं ब्रह्माः वह याग के अधिकारी बनने जा रहे थे। मानो देखो, जब याग करते–करते उनका तपस्यामयी जीवन बना तो उन्होंने भगवन्! कहा कि हम याग नहीं करेंगे। क्योंकि याग का और तपस्या का जो समन्वय है उसके प्रकरण की प्रतिभा मानो भिन्न–भिन्न रुप में परिणत हो जाती है।

तो मेरे पुत्रो! देखो, जब ऋषि ने माता अरून्धती से ये कहा–कि हे माता! हम मानो जब भ्रमण करते हुए मगध राष्ट्र से आए तो हमने यह प्रसन्न किया कि भगवन्! इसमें क्या कारण है जो मानो देखो, वह पति लोक को प्राप्त हो करके भी उन्होंने ये कहा कि मुझे याग करने का अधिकार नहीं रहा है। तो उन्होंने बेटा! इस प्रकार देखो, माता अरुन्धती से उत्तर देते हुए, बोले कि इसके मूल में यह है कि मानो देखो, जब वे सम्भवः ब्रह्े व्रत्तम् जब तपस्या का जीवन बन जाता है। परमात्मा से संलग्न धाराओं में परिणत हो जाता है। तो याग का विच्छेद मानो देखो, याग से मानो भौतिक याग से मानव का विच्छेद हो जाता है।

भौतिक और आध्यात्मिक याग

हमारे यहाँ दो प्रकार के यागों की प्रतिभा मानी जाती है। मानो देखो, हमारे यहाँ बेटा! भौतिक याग और आध्यात्मिक याग दोनों का वर्णन आता है। तो हमारे ऋषि मुनियों ने मानो देखो, संतान को जन्म देना भी, याग के रूप में परिणत किया है। यह भी एक याग है क्योंकि हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में जब हम विचारने लगते हैं तो मानो देखो, प्रत्येक दिशा में, मानव याज्ञिक बना हुआ है। वही तो याग बेटा! देखो, पुत्रो भवं ब्रह्मा मुनिवरो! देखो, वह पति के कुल में जाकर के मानो देखो, वही तो अपने याग करते रहते हैं। याग का अभिप्राय यह है यागां ब्रह्मलोकां यागाऽहं रूद्राः मेरे प्यारे! देखो, ये याग रुद्र है। ये याग ही मुनिवरो! देखो, विष्णु है। ये याग ही ब्रह्म कहा जाता है। जब हम ब्रह्म की आभा में रत होने लगते हैं तो मानो ये ब्रह्म ही ब्रह्म हमें दृष्टिपात आने लगता है।

हिरणाक्ष याग

मेरे प्यारे! देखो, माता अरुन्धती अपने में मग्न हो गई और मग्न होकर के यह कहा कि धन्य है प्रभु! आपने हमारे वाक्यों का निवारण किया है। आपको बड़ा धन्यं व्रहेः आप वास्तव में ऋषि है। मेरे प्यारे! देखो! माता अरुन्धती और वशिष्ठ मुनि महाराज जब गमन करने लगे तो वशिष्ठ मुनि ने एक वाक कहा ऋषि से कि भगवन्! आपने जो यह शतपथ ब्राह्मण पोथी का निर्माण किया है इसमें यागों का बड़ा वर्णन है परन्तु हम यह जानना और चाहते हैं

कि हमारे यहाँ एक हिरणाक्ति वाक् आता है। कि जो हिरणाक्ष याग हो रहा है मानो देखो, उसको द्विन्धं ब्रह्मे व्रत्तम् जब मानो अपने में कृत्तियाँ हो जाती हैं तो इसको जानना चाहते है।

मेरे प्यारे! महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि कहते हैं कि हे ब्रह्मवेत्ता! तुम्हे यह प्रतीत है कि संसार में जितने भी याग है, उन यागों में एक मानो हिरणाक्ष याग भी होता है। हिरणाक्ष याग का अभिप्राय यह है कि जब मानो देखो, यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके, वह गम्भीरता पूर्वक अपना याग करता रहता है। गम्भीरता में रत हो करके मानो देखो, अपने में अभ्योदय होता रहता है। तो वो ही याग हमारे यहाँ सार्थक माना गया है।

पितरों के दर्शन

तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा–कि प्रभु! देखो, एक समय हम उद्यालक गोत्र में पहुँचे थे और उद्यालक गोत्र में जो शिकामकेतु ऋषि महाराज है और उनकी पत्नी रम्भोवाचिक मुनि व्रतोः मानो देखो, उनकी पत्नी जो शकुन्तका थी वह दोनों अपने पितरों का दर्शन करते रहते। उन्होंने कहा–यही तो विज्ञान है। कि मानो देखो, जब पितरों का दर्शन होता है। जैसे हमारे शब्द है, उन शब्दों के चित्र बनकर के अंतरिक्ष में विद्यमान रहते है। मानो देखो, अपने यत्रों के द्वारा, विज्ञान के वांगमय में प्रवेश होते हुए तो मेरे पुत्रो! उनके चित्रों में देखो, वो अपने पूर्वजों के शब्दों के साथ में, चित्रों के साथ में उनका क्रियाकलाप निहित रहता है।

तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या, आज जब हम वाणी के ऊपर अपना अनुसंधान प्रारम्भ करते हैं अथवा अपने क्रियाकलापों में प्रवेश करते हैं तो हमारा क्रियाकलाप एक विचित्रता में परिणत होने लगता है। तो आओ, मेरे प्यारे! देखो मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, केवल यह कि हमारे यहाँ कन्या याग का बड़ा वर्णन आता रहता है। वैदिक साहित्य में भी मानो वेद मंत्रों में भी इस प्रकार की विचार धाराएँ उद्‌बुद्ध होती रहती हैं। जिन विचार धाराओं को लेकर के मानव अपने में मानवीयता का दर्शन करता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज मौन हो गए और महर्षि वशिष्ठ ने कहा कि तुम्हारा जो अध्ययन है ऋषिवर! वह बड़ा विचित्र है। आज मैं उस अध्ययन की प्रतिक्रियाओं में मानो देखो, रत होना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, वे ब्रह्मवेता होते हुए, नाना प्रकार की धाराओं में रत होना और उन पर विचार विनिमय करना, जो अपनी आभा में रत रहने वाला, जो वाक् है उसी वाक् को अपने हृदय से, हृदयग्राही बना करके मानो देखो, उसका अंतरिक्ष से समन्वय करना मेरे पुत्रो! देखो, वही तो सार्थक हृदयग्राही विज्ञान माना गया है। वो विज्ञान की तरंगों में, मानव की धाराएँ रत हो जाती है।

मेरे प्यारे! देखो, उद्यालक गोत्र में नाना ऋषि हुए है। परन्तु उन ऋषियों में ये विशेषता रही है, उनमें यह विचित्रता रही है कि मानो देखो, वह ऋषिवर ज्ञान और विज्ञान की विचित्र उड़ाने उड़ते रहते है। जहाँ मानव ब्रह्मवेत्ता बनता है वहाँ ब्रह्मवेत्ता बनने के लिए आध्यात्मिक उड़ान उड़ना भी और भौतिक उड़ान उड़ना भी उसमें दोनों का सम्मिलन होना यही तो बेटा! देखो, चित्रों का दर्शन करना है।

तो आओ मेरे प्यारे! देखो, मैं विशेष चर्चा न करता हुआ, देखो, विशेष वार्ता मैं प्रकट करने नहीं आया हूँ। आज तुम्हें मैं यह वाक् प्रकट कर रहा हूँ कि परमपिता परमात्मा यज्ञमयी स्वरूप माने गए हैं। हमारे यहाँ ऋषि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! बड़ा विचित्र वर्णन किया है। उन्होंने बेटा! एक लोलोक्ति और प्रकट की है कि मृत्युंजय बनने के लिए लोलोक्ति दी है। मानो उन्होंने बेटा! विज्ञान और मुनिवरो! देखो, ये जो प्राकृतिक कर्मकाण्ड है उसका दोनों का मानो सम्मिश्रण किया है। तो मेरे पुत्रो! मैं उस सम्मिश्रण में तुम्हें ले जाना चाहता हूँ। मुझे बेटा! वो काल स्मरण आता रहता है जब याज्ञवल्क्य मुनि महाराज और मुनिवरो! देखो, महर्षि वशिष्ठ, और माता अरुन्धती तीनों एक दूसरे से परस्पर चर्चा का एक अनुवृत्त बन गया। एक वेद मंत्र उनके स्मरण आया, वेद मंत्र कहता है वृखोः ब्रह्माः वृखं वृत्तं वृखं व्रताः देवाः अस्सुतं यागाः मेरे प्यारे! देखो, यह वाक ऋषि ने प्रकट किया। उन्होंने कहा कि जब मैं वेद मंत्रों को लेकर के, ऋषिवर अपनी लेखनी बद्ध करने लगा तो लेखनी बद्ध करते हुए वेद मंत्र का आशय हमारे समीप आया। तो वेद मंत्र कहता है कि वृख नाम के हमारे यहां बड़े पर्यायवाची शब्द है। वृख मानो चंचल और थर्वा को कहते हैं।

इन्द्र वत्रासुर सग्राम

मानो देखो, उसमें हिरण का नाम हमारे यहाँ आया है हिरणं ब्रह्माः मानो देखो, जब हिरण का नाम आया तो यह आया कि यागां ब्रह्मेः मेरे पुत्रो! इसका अभिप्रायः यह हुआ कि याग को काला हिरण ले गया और जब कालिमा का हिरण ले गया तो मानो देखो, बड़ी दुविधा हुई कि यागां ब्रह्मे व्रतम् मुनिवरो! देखो, जब उनका संघर्ष हुआ तो हिरण ने वही याग मानो देखो, वत्रासुर को प्रदान कर दिया। वह वत्रासुर में प्रवेश कर गया। याग वत्रासुर में चला गया। और जब वत्रासुर ने मानो याग को अपने में संग्रहित कर लिया तो उसी समय इन्द्र को यह प्रतीत हुआ कि देखो, याग को काले हिरण ने वत्रासुर को प्रदान कर दिया। तो मेरे पुत्रो! ऐसा वेद मंत्रों में आया है कि मानो देखो, उन दोनों का संघर्ष हुआ, उन दोनों का भयंकर संग्राम होने लगा। इंद्र का और वत्रासुर का।

तो मुनिवरो! देखो, वह संग्राम होता रहा। संग्राम होते, होते मेरे प्यारे! इंद्र ने वत्रासुर ये मानो देखो, अपने वज्र का प्रहार किया। इन्द्र ने जब वज्र का प्रहार किया तो मुनिवरो! देखो वत्रासुर छिन्न–भिन्न हो गए और मुनिवरो! उन्होंने वृष्टि की और वृष्टि करने के पश्चात् तो यहाँ एक वेद मंत्र और आया है। गौ व्रणं ब्रह्मे वृखं ब्रहा वाचन्नमं मृत्यु भ्रो मानो वही व्रभो सम्भव प्रति लोकाम् मेरे प्यारे! यहाँ देखो, वेद की एक ओर आख्यायिका आई कि देखो, जब वत्रासुर का छिन्न भिन्न होना, वृष्टि हो गई जब मानो देखो, वृष्टि प्रारम्भ हो गई, तो वृष्टि के प्रारम्भ होते ही, वह कहते हैं कि गौ का बछड़ा जो वृख है मानो देखो, उसकी बलि होने लगी। जब उसकी बलि होने लगी तो मेरे प्यारे! देखो, यहाँ वृख की बलि का वर्णन आया।

बलि का अभिप्राय

हमारे वैदिक साहित्यों में मानो बलि का अभिप्राय केवल देखो, शरीर को नष्ट करना नहीं है। बलि का अर्थ यह नहीं है, कि हम प्राणी को नष्ट करने लगे। बलि का अर्थ यह है जैसे माता अपने पुत्र के लिए मानो देखो, सर्वत्र न्यौछावर कर देती है तो वह माता भी बलि कही जाती है क्योंकि माता अपने पुत्र को बलि प्रदान कर देती है। अपना सूत्र दे देती है, मानो देखो, अपने विचार और बाल्य के विचारों में एक महानता का प्रकर्षण करती है तो मानो देखो, वह अपने जीवन की बालक को बलि प्रदान कर देती है।

इसी प्रकार मेरे पुत्रो! देखो, यह जो वृख है, गौ का बछड़ा है जब वृष्टि होती है तो पृथ्वी को क्षुधा लगती है कि मैं अपने में समाहित हो जाऊँ। तो मुनिवरो! देखो, यह पृथ्वी अपने में अपने पन को लेकर के समाहित हो जाती है। बड़े विचित्र वाक् है बेटा! कि मानो देखो, अपने विचारों में अपने में ही समाहित होना है। समाहित होने का अभिप्राय यह है कि मानो देखो, जब पृथ्वी को क्षुधा लगती है तो देखो, वह बीज की स्थापना की क्षुधा लगती है। वही क्षुधा मानो देखो, गौ का बछड़ा पूर्ण करता है। पृथ्वी की चमडी को उधेड़ता है उसके गर्भ में बीज की स्थापना हो जाती है और भी नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों की उत्पत्ति हो जाती है।

मेरे प्यारे! देखो, पृथ्वी के गर्भ में क्या नहीं है बेटा! मानो देखो, कहीं पृथ्वी के गर्भ में कहीं स्वर्ण है, कहीं रत्नों की धातु का निर्माण हो रहा है। मानो देखो, कहीं जल को शक्तिशाली बनाकर के, मानो वाहनों में क्रिया, वाहनों में गतियों का संचार हो रहा है। वहीं माता के गर्भ में बेटा! नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थ है। उसको वह मानव विज्ञानवेत्ता अपने में ग्रहण करते रहते हैं, राष्ट्र का संचार होता रहता है।

४३

बलि अर्थात कर्तव्य पालन

तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा–कि हे प्रभु! मैं यह जान पाया हूँ, मेरा हृदय मानो इस अंतिम निर्णय पर पहुँच गया है, अंतिम चरण में चला गया हूँ कि मानो देखो ये वृख नाम देखो, गौ के बछड़े का है। बलि का अभिप्राय यही है, बलि का अर्थ है पुरुषार्थ करना, बलि का अर्थ है मानो देखो, अपने प्राण और मन को संलग्न करते हुए एक सूत्र में पिरोकर मानो अपने कर्तव्य के पालन का नाम हमारे यहाँ बलि प्रथा मानी गई है। मेरे प्यारे! ये परम्परागतों से है तो आज मैं नवीन बात प्रगट करने नहीं आया हूँ। वेद मंत्रों में अनन्य समय में बेटा! बलियों का वर्णन है। परन्तु बलि का, अभिप्राय केवल प्राणी को नष्ट करना नहीं है। जैसा मेरे पुत्र महानन्द जी ने मुझे कई कालों में प्रकट कराया कि प्राणी–प्राणी का भक्षण करना ही मानो आधुनिक काल में बलि कहलाती है। बलि का अभिप्राय यह होता है कि मानो देखो, पुरुषार्थ और अपने जीवन को दूसरों के जीवन के लिए मानो जो क्रियात्मक क्रियाकलापों में परिणत होता है, वह मानो देखो, बलि कर रहा है।

तो मेरे पुत्रो! देखो, विचार विनिमय क्या, किसी भी मानव के द्वारा मानव के रक्तपान करने का या रक्त को ग्रहण करने का हमें अधिकार नहीं होता। विचार केवल यह है कि मानो देखो, बलि का अभिप्राय है पुरुषार्थ। बलि का अभिप्राय एक दूसरे में समाहित होना है। तो मेरे पुत्रो! देखो, संसार के सम्बंध में जब विचारने लगोगे तो यह संसार एक बलि के रुप में दृष्टिपात आने लगेगा।

मन्त्रों पर अनुसंधान

तो आओ मेरे पुत्रो! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ आज बेटा! मैं तुम्हें यह निर्णय देने के लिए आया हूँ, मैं तुम्हें यह वाक् प्रकट करने के लिए आया हूँ कि वेद का जो शब्द है उस शब्द के ऊपर मानव को मनन और चिंतन करना चाहिए। क्योंकि मनन और चिंतन करने से उसका वास्तविक स्वरुप, हमारे समीप आ जाता है। हमारे ऋषि मुनियों ने एक–एक वेद मंत्र के ऊपर बड़ा अनुसंधान किया है। मानो देखो, अपने में बड़ा पुरुषार्थ करते हुए और एकान्त स्थलियों पर विद्यमान हो करके मन और प्राण को एकाग्र करते हुए समाधिष्ट हो करके, एक–एक वेद मंत्र के ऊपर अध्ययन करना प्रारम्भ किया।

याग में मानवता

आओ मेरे पुत्रो! आज का हमारा ये विचार क्या कह रहा है? हम परमपिता परमात्मा की महिमा में संलग्न हो करके मेरे पुत्रो! देखो, यागां हमारे यहाँ कन्या याग का वर्णन आता है। कन्या याग का अभिप्राय यह है मानो देवोभ्यो पितृम्योः और मानो देखो, कुलेभ्योः को प्राप्त होकर के बेटा! अपने जीवन को मानो एकोऽहं बहुधा का पठन पाठन, चयन हमारे यहाँ प्राय उसका वर्णन भी होता रहा है। तो मेरे पुत्रो! आज का हमारा वाक् यह क्या कह रहा है, कि हम परमपिता परमात्मा के रचाए हुए इस ब्रह्माण्ड को अथवा उसकी कृतिका को हम विचार विनिमय में करते चले जाएं जैसे बेटा! देखो, मैंने वृखा ब्रह्माः बेटा! याग किसे कहते हैं? याग कहते हैं मानो जिसमें सुगन्धित हो, जिसमें विज्ञान हो जिसमें मानो देखो मानव में मानवता का भास हो।

विभिन्न यागों का स्वरूप

मेरे प्यारे! देखो, माता याग कर रही है, राजा याग कर रहा है। यागों में लगे हुए हैं। नाना प्रकार के यागों का वर्णन हमारे वैदिक साहित्य में आता रहता है जैसा मैंने कई काल में वर्णन कराया बेटा! गौमेघ याग का अभिप्राय यह है कि जब आचार्य ब्रह्मचारी के अज्ञान को समाप्त कर देता है तो मानो देखो, वह गौमेघ याग कर रहा है। राजा जब प्रजा में देखो! अश्वमेघ याग करता है तो प्रजा और राजा दोनों एक सूत्र में प्रवेश होकर के राष्ट्र का, मानव का पालन करते हैं। एक दूसरे की प्रतिभा को जानते हैं, ज्ञान का प्रसार होता है, प्रकाश होता है तो वो मानो अश्वमेघ याग हो रहा है। अश्व नाम राजा का है मानो देखो, मेघ नाम प्रजा का। अश्वमेघ याग जो करते है मेघां ब्रह्माः यागाम् मेरे प्यारे! देखो, अजामेघ याग करना अपने मानो जीवन को हमें विजय करना है। जो नाना प्रकार की प्रवृत्तियाँ हमारी चंचलता में प्रवेश कर जाती है।

तो मेरे प्यारे! देखो, इंद्रियों को संयम में करने का नाम मुनिवरों! देखो, एक याग माना गया है। उसको हमारे यहाँ मेरे पुत्रो! देखो, याग के रुप में, उसे अजामेघ याग कहते हैं। अजा कहते हैं इंद्रियों को, जो इंद्रियों को संयम में करता हुआ, परमात्मा की प्रतिभा में समाधिष्ट हो जाता है। मेरे पुत्रो! अपने को लयकर देता हुआ, वह अजामेघ याग करता है। उसके और भी अवान्तर भेदन है जैसे अजा नाम बेटा! बकरी का है मानो अजा नाम के और भी शब्द है, अजा नाम मानो देखो, राजा द्वितीय राष्ट्रों के अंधनम्, पापो को जब नष्ट करने के लिए तत्पर होता है तो वह अजामेघ याग करता है। मेरे प्यारे! देखो, इसी प्रकार हमारे यहाँ जैसे अग्निष्टोम याग है, मानो वाजपेयी याग है, भिन्न–भिन्न प्रकार के यागों का चयन हमारे वैदिक साहित्य में होता रहता है।

आज मैं बेटा! याग के सम्बन्ध में भिन्न–भिन्न रूपों में जाना नहीं चाहता हूँ। केवल विचार विनिमय क्या कि हम परमपिता परमात्मा के रचाए हुए, मानो देखो, उस ब्रह्माण्ड रुपी याग के ऊपर कल्पना करते चले जाएँ। मेरे प्यारे! देखो, प्रभु ने जब इस संसार का सृजन किया तो मानो देखो, एक यज्ञशाला के रुप में, इस ब्रह्माण्ड की रचना की। इसी में एक ब्रह्म की उपाधि को प्राप्त करता हुआ मानो देखो, हूत कर रहा है। प्रहूत हो रहा है, देवत्व हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो, यह माता पृथ्वी वसुन्धरा के गर्भ में बेटा! देखो, हम सब विद्यमान हो जाते हैं। और जब इससे उपराम होते हैं तो प्रभु के गर्भ में चले जाते हैं। वहाँ बेटा! देखो, प्रभु वसुन्धरा बन करके मानो देखो, अपने में लय कर लेता हैं।

मानव जीवन का दर्शन

तो विचार क्या मुनिवरो! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, केवल मैं व्याख्याता नहीं हूँ बेटा! मैं तुम्हें परिचय कराने के लिए चला आता हूँ और वह परिचय यह है कि जब हम किसी भी वस्तु के विशुद्ध रुप को स्वीकार कर लेते हैं तो मानो हमारा मानवीयतव पवित्रता में परिणत हो जाता है। हम अपने मानव जीवन का दर्शन करना प्रारम्भ करने लगते हैं।

तो आओ, मेरे पुत्रो! आज का विचार क्या कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, इस संसार सागर से पार हो जाएँ। यह है बेटा! आज का वाक् आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए मुनिवरों! देखो, इस संसार सागर से पार हो जाएँ। ये है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा। मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रकट करूँगा। वाक् यह चल रहा था कि माता अरुन्धती, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज और महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज तीनों का मानो देखो, परस्पर चिंतन, परस्पर विचार विनिमय होना, एक–एक वेद मंत्रों की झड़ियों में इस संसार का दर्शन करना, ये है बेटा! आज का वाक्, अब वेदों का पठन–पाठन।

ओ३म् देवं रथाः आभ्यां गतौ मानः वा या
ओ३म् तनु गन्धर्वः वा या गरथं आपाणाम्।
तनु गन्धर्वः वा या गतं मनुः आपाः।।

अच्छा भगवन शान्ति

14.8.89
दिनकरपुर, मु0 नगर